थ्रिलर

तीन दिन

(थ्रिलर)

Surender Mohan Pathak

First Edition: 1986

Author Website: www.smpathak.com
Author e-mail: contact@smpathak.com

प्राक्कथन

ओरियण्टल शिपिंग कारपोरेशन के विशाल एवं अत्यन्त वैभवशाली यात्रीवाहक जहाज सिल्वर स्टार को बम्बई की बन्दरगाह पर लगे एक घण्टा हो चुका था जब कि राहुल ने डैक पर कदम रखा। लगभग सभी यात्री सैर सपाटे के लिये जहाज पर से कूच कर चुके थे। जहाज के क्रियू के सदस्य भी कुछ जा चुके थे और कुछ जाने की तैयारी कर रहे थे।

जो अभी नहीं गये थे, उनमें से एक जहाज का पर्सर राहुल था।

राहुल एक छः फुट से भी निकलते कद का खूब मोटा व्यक्ति था। वह अभी केवल अट्ठाईस साल का था लेकिन वजन में वह एक क्विंटल से भी ज्यादा था। उसके विशाल आकार की वजह से ही लोग उसे राहुल रामचन्दानी कहने की जगह राहुल रोडरोलर कहते थे, अलबत्ता उसके मुंह पर ऐसा कहने की हिम्मत किसी की नहीं होती थी।

थोड़ी देर पहले बारिश होकर हटी थी जिसकी वजह से बाहर ठण्डी हवा चल रही थी।

राहुल ने नथुने फुलाकर एक गहरी सांस ली और परे किनारे पर जगमग करती बम्बई शहर की रोशनियों की तरफ देखा।

बम्बई में वह पहली बार कदम रख रहा था।

उस क्षण वह जहाज की वर्दी, सफेद कमीज और सफेद पतलून पहने था। सिर पर वह सिल्वर स्टार के सुनहरे मोनोग्राम वाली पीक कैप पहने था। अपना नीला ओवरकोट वह अपनी बांह पर डालकर डैक पर पहुंचा था लेकिन वातावरण की ठण्डक को महसूस करते हुए उसने ओवरकोट पहन लिया।

उसने डैक पर दायें-बायें निगाह दौड़ाई।

जहाज का पुर्तगाली कैप्टन रेलिंग के सहारे खड़ा एक सम्पन्न पैसेन्जर से बातें कर रहा था।

राहुल उसके करीब से होता हुआ गैंगवे की तरफ बढा तो कैप्टन ने उसे नाम लेकर पुकारा।

राहुल ठिठका, घूमा और फिर लम्बे डग भरता हुआ कैप्टन के करीब पहुंचा।

"तीन दिन।" - कैप्टन अपनी तीन उंगलियां उठाकर उसे दिखाता हुआ बोला - "सिर्फ तीन दिन रुकने वाला है हमारा जहाज इस बन्दरगाह पर।"

"मुझे मालूम है।" - राहुल बड़े अदब से बोला।

"अभी मालूम है। लेकिन विस्की का गिलास हाथ आते ही सब भूल जाओगे।"

"ऐसा नहीं होगा, सर।"

"आज मंगलवार है। शुक्रवार शाम को सात बजे जहाज यहां से कराची के लिये रवाना हो जायेगा। उससे पहले तुमने यहां वापिस ड्यूटी पर होना है।"

"यस, सर।"

"इस बार मैं तुम्हारा इन्तजार नहीं करने वाला। इसलिये दिन और वक्त याद रखना।"

"यस, सर।"

"आइन्दा तीन दिन तुम शराब पीते हो या उसमें गोते लगाते हो, यह तुम्हारा जाती मामला है। वैसे चाहो तो तजुर्बे के तौर पर इन दोनों बातों में कभी फर्क महसूस करके देखना।"

"किन दो बातों में ?"

"शराब पीने में और उसमें गोते लगाने में।"

"यस, सर।"

"फ्राइडे ईवनिंग। सैवन पी. एम। शार्प।"

"यस, सर।"

कैप्टन को खामोश हो गया पाकर राहुल फिर गैंगवे की तरफ बढ गया।

कैप्टन कुछ क्षण राहुल को देखता रहा और फिर समीप खड़े पैसेन्जर की तरफ घूमा।

"यह लड़का" - कैप्टन बोला - "जब जहाज पर होता है तो विस्की को हाथ तक नहीं लगाता, लेकिन जहाज बन्दरगाह पर पहुंचा नहीं, खुश्की पर इसके पांव पड़े नहीं कि इसका विस्की में डूबने-उतराने का प्रोग्राम शुरू।"

"यह तो आपके लिये अक्सर मुसीबत खड़ी कर देता होगा।" - पैसेन्जर बोला।

"जहाज पर नहीं करता। जहाज पर तो इससे ज्यादा मुस्तैद, फर्माबरदार और जिम्मेदार आदमी ढूंढना मुहाल है। हालांकि काम करना इसके लिये कतई जरूरी नहीं लेकिन फिर भी जहाज पर यह पूरी मेहनत, लगन और

ईमानदारी से काम करता है।"

"काम करना जरूरी क्यों नहीं इसके लिये ?"

कैप्टन एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "ग्रैगरी साहब, आप हमारे रेगुलर पैट्रन हैं इसलिये मैं आपको एक राज की बात बताता हूं।"

"क्या ?" - पैसेन्जर उत्सुक भाव से बोला।

"यह लड़का, जो इस जहाज पर बतौर पर्सर नियुक्त है, हकीकतन इस जहाज के और ओरियन्टल शिपिंग कारपोरेशन के मालिक कृपाल रामचन्दानी का इकलौता बेटा है।"

"क्या !"

"जी हां। यानी कि हकीकतन मैं इसका नहीं, यह मेरा बॉस है। यह मेरा एम्पलायर है।"

"कमाल है ! यह यहां बतौर पर्सर काम करता है, इसके बाप को एतराज नहीं ?"

"बाप को मालूम हो तो जरूर एतराज होगा।"

"कैप्टन, वाट इज दि स्टोरी ?"

"लड़का इश्क में खता खाया हुआ है। किसी लड़की ने ऐसा दिल तोड़ा इसका कि यह जान दे देना चाहता था। मेरे समझाने पर खुदकुशी का हौलनाक इरादा तो इसने अपने जेहन से निकाल दिया था लेकिन सुकून हासिल नहीं था इसे और लन्दन में - जहां कि ओरियण्टल शिपिंग कारपोरेशन का हैडक्वार्टर है, जहां कि यह अपने मां-बाप के साथ रहता था और जहां कि पूनम नाम की वह बेवफा लड़की भी रहती है - इसे सुकून हासिल हो भी नहीं सकता था। इसी ने ख्वाहिश जाहिर की थी कि मैं इसे जहाज पर अपने साथ ले चलूं लेकिन इसके बाप को खबर न होने दूं। नतीजतन एक अरबपति बाप का बेटा, इस जहाज का मालिक, यहां पर्सर की नौकरी करता है।"

"और अपने टूटे दिल को शराब के नशे से जोड़ने की कोशिश करता है ?"

"हमेशा नहीं। जहाज जब सफर में होता है तो यहां की रौनक में इसका दिल लगा रहता है। जहाज बन्दरगाह पर लगता है तो खाली हो जाता है। तब यह नार्मल नहीं रह पाती। फिर इसके कदम पड़ते हैं बन्दरगाह पर। फिर होती है बोतल इसके हाथ में और यह बोतल में।"

"इसके बाप को तलाश तो होगी इसकी ?"

"जरूर होगी। आखिर यह अपने बाप की इकलौती औलाद है, उसका वारिस है।"

"आपका फर्ज नहीं बनता कि आप बाप को इसके बारे में खबर करें।"

"बनता है लेकिन मेरा वैसा ही फर्ज इसके लिये भी बनता है। मैंने राहुल से वादा किया है कि इसके बारे में इसके बाप को खबर नहीं करूंगा।"

"आई सी। आप इसे वक्त पर लौटने की वार्निंग दे रहे थे और कह रहे थे कि इस बार आप इसका इन्तजार नहीं करने वाले !"

"हां। यह लेट हो जाता है तो मुझे जहाज लेट करना पड़ता है, जिसकी वजह से पैसेन्जर खफा हो सकते हैं। कभी किसी पैसेन्जर ने इस बात की शिकायत कर दी तो मेरी नौकरी पर आ बनेगी। यह एक लग्जरी शिप है जिस पर आपकी तरह केवल वी. आई. पी. ही सफर करते है। लड़के का वक्त पर यहां न पहुंचता कभी मेरे लिये कोई मुसीबत खड़ी कर सकता है।"

"नशे में यह कतई भूल जाता है कि इसने वापिस लौटना है ?"

"नहीं, यह बात तो यह बाखूबी याद रखता है। दो-तीन घण्टे से ज्यादा लेट नहीं होता यह।"

"लेकिन लेट होता जरूर है।"

"अभी तक तो ऐसा ही चल रहा है। सिर्फ एक बार, जापान में, यह वक्त पर पहुंचा था।"

"दिल क्यों टूटा इसका ?"

"यह मुझे नहीं मालूम। मेरे पूछने पर भी उस लड़की की स्टोरी सुनाने को यह तैयार नहीं होता जिसने इसका दिल तोड़ा है।"

"अजीब बात है।"

"अजीब भी और गैरमामूली भी। वह खुद भी तो ऐसा ही है। ही इज ए वैरी अनयूजुअल कैरेक्टर।"

"यस। वैरी अनयूजुअल कैरेक्टर इनडीड।"

***

हालांकि राहुल बाखूबी अफोर्ड कर सकता था लेकिन फिर भी ड्रिंक के लिये वह कभी किसी ऊंचे दर्जे के बार में

नहीं जाता था। अपनी शराबखोरी के लिये वह हमेशा किसी सैकेण्ड क्लास या थर्ड क्लास बार को चुनता था और ऐसा बार अपरिचित शहर में भी तलाश करने में उसे कोई दिक्कत नहीं होती थी। अब तक वह बाखूबी जान चुका था कि हर बन्दरगाह के इलाके में ऐसे बार और वेश्यालय बहुतायत में होते थे। ऐसी किसी जगह के बारे में उसे कभी किसी से पूछने की भी जरूरत नहीं पड़ती थी।

ऐसा एक बार डिमेलो रोड पर वह तलाश कर भी चुका था।

उस बार का नाम प्रिंसेस बार था और उस वक्त वह ग्राहकों से खचाखच भरा हुआ था। सिगरेट के धुंए और शोर-शराबे से वह पूरी तरह से रचा बसा हुआ था।

उससे पहले राहुल ग्राहम रोड पर स्थित एक बार में गया था लेकिन वहां उसका मन नहीं लगा था और वह सिर्फ दो पैग पीकर ही वहां से कूच कर गया था।

प्रिंसेस बार उसकी पसन्द की जगह निकली थी। चेतना पर हावी हो जाने वाला शोर-शराबा। तनहाई का दुश्मन हुजूम। किसी गम, किसी याद को घोलकर पी जाने के लिये हासिल शराब।

कोई छः पैग विस्की वह वहां पी चुका था।

भयंकर नशे की तरफ वह निरन्तर अग्रसर हो रहा था लेकिन फिर भी उसको सिर्फ देखकर यह कहना मुहाल था कि वह नशे में था, अलबत्ता उसकी आंखें उसकी नशे की हालत की चुगली कर जाती थीं, जिनमें कि सामने वाले को लगता था कि वह उसे देखते हुए भी नहीं देख रहा था।

शराब को राहुल बिना चखे, बिना उसका कोई आनन्द उठाये, पीता था। उसके सामने जाम आता था, वह उसे उठाकर खाली कर देता था, नया जाम आता था तो वह उसे खाली कर देता था, नहीं आता था तो वह चुपचाप बैठा जाम सर्व होने की प्रतीक्षा करता रहता था। आखिर उसे जल्दी क्या थी। कम से कम तीन दिन तो उसके पास हर बन्दरगाह पर होते थे और उन दिनों में शराब पीने के अलावा उसने और करना क्या होता था।

राहुल के बगल की मेज पर दो आदमी किसी बात पर बहस कर रहे थे। कभी-कभार वे उत्तेजित हो उठते थे तो ऊंचा-ऊंचा बोलने लगते थे। ऐसे एक अवसर पर उनकी आवाज से आकर्षित होकर राहुल ने उनकी तरफ देखा था तो पाया था कि एक भारी-भरकम लेकिन ठिगना सा मराठा था और दूसरा दुबला-पतला, बांस-सा लम्बा, गोवानी था। दोनों चालीस के पेटे में थे। उनके वार्तालाप के कुछ टुकड़ों को सुनकर ही राहुल ने जाना था कि गोवानी का नाम रोबीरो था और मराठे का नाम मारुतिराव था।

"मोटे, तू मूर्ख है।" - एक बार उसने गोवानी को गुस्से में कहते सुना - "साले, अभी सिर्फ हमें मालूम है कि धोते मटका एजेन्ट होने के साथ-साथ 'गुरुजी' का सप्लायर बन गया है और ढाई-तीन लाख रुपये का माल हमेशा अपने पास अपनी जेब में रखता है। अभी मौका सिर्फ हमारे हाथ में है, बाद में औरों को भी खबर लग गई तो कोई भी उसका गला काटकर माल झपट लेगा।"

"वह 'कम्पनी' का आदमी है।" - मारुतिराव बोला।

"सिर्फ मटके के मामले में। 'गुरुजी' का धन्धा उसका अपना है। हम मटके के माल को हाथ नहीं लगायेंगे तो 'कम्पनी' का कहर कभी हम पर नाजिल नहीं हो पायेगा।"

"आज नम्बर कौन-सा लगा ?"

"सान्ता मारिया !" - गोवानी असहाय भाव से बोला - "अरे मैं तुझे उत्तर की बात समझा रहा हूं और तू दक्षिण की बात कर रहा है। क्या लगाया था मटके पर तूने ?"

"बीस रुपया।"

"लानत ! साले, मोटे, नम्बर लग भी गया होगा तो क्या मिलेगा तुझे ?"

"सौलह सौ !"

"और मैं जो तुझे डेढ लाख का रास्ता दिखा रहा हूं !"

"भाई साहब" - एकाएक राहुल उनकी तरफ झुकता हुआ बोला - "मटका कहां लगता है ?"

दोनों ने चौंककर उसकी तरफ देखा।

"मैं परदेसी हूं" - राहुल विनयशील स्वर में बोला - "लेकिन मैंने बम्बई के मटके का बहुत नाम सुना है। सुना है नम्बर रोज निकलता है।"

"हां।" - मारुतिराव के मुंह से निकला।

"मैं तीन दिन यहां हूं। मैं भी मटका खेलना चाहता हूं। अब कब निकलेगा नम्बर ?"

"कल शाम को।"

"मैं दांव लगाना चाहता हूं।"
"कितने रुपये का ?"
"सौ रुपये का।"
"बस ?"
"हां। मैं तो यूं ही खेल-खेल में ऐसा करना चाहता हूं।"
"लेकिन अगर तुम दांव ज्यादा लगाओ तो...."
"बाहर सड़क पर" - एकाएक गोवानी बीच में बोल पड़ा - "बार से थोड़ी ही दूर एक बनारसी पान वाले की दुकान है, वहां पहुंच जाओ।"
"लेकिन..."
"अब अपना काम करो।" - गोवानी सख्ती से बोला।
"ठीक है।" - राहुल तनिक आहत भाव से बोला और फिर उसने उनकी तरफ से पीठ फेर ली।
वह फिर अपनी शराबखोरी में मशगूल हो गया।
और कई पैग पी चुकने के बाद उसे बनारसी पान वाले का दोबारा ख्याल आया।
वह अपने स्थान से उठा और झूमता हुआ बार से बाहर निकल गया।
तब तक लगभग बारह बज चुके थे और बार की भीड़ काफी छंट चुकी थी। मराठा और गोवानी उसे वक्त भी बार में बैठे थे लेकिन उस वक्त वे एक तीसरे आदमी के साथ सिर से सिर जोड़े बातें कर रहे थे। तीसरा आदमी कोई पैंतालीस साल का मोटा थुलथल-सा व्यक्ति था।
राहुल बार से बाहर निकला।
बार के प्रवेश द्वार के पास ही एक टेलीफोन बूथ था जिसके भीतर उस समय एक नौजवान लड़की मौजूद थी और कहीं टेलीफोन करने की कोशिश में डायल घुमा रही थी। बार की इकलौती सीढी उतरते समय राहुल लड़खड़ाया। अपने आपको सम्भालने के लिए उसने बूथ का सहारा लिया तो उसके वजन से त्रस्त लकड़ी का बूथ सारे का सारा हिल गया। युवती ने हड़बड़ा कर उसकी तरफ देखा।
"स... सारी।" - राहुल बिना युवती की तरफ निगाह उठाए होंठो में बुदबुदाया और बूथ का सहारा छोड़कर सड़क पर आगे बढ गया।
अपनी तरफ से वह बनारसी पान वाले की तलाश में बार से बाहर निकला था लेकिन उस वक्त वह नशे में इतना धुत्त हो चुका था कि वह सिर्फ इतना जानता था कि वह चल रहा था, उसे यह नहीं मालूम था कि वह कहां जा रहा था। उसे यह याद तक नहीं रहा था कि बार से बाहर वह मटका लगाने की नीयत से बनारसी पान वाले की तलाश में निकला था।
बूथ में मौजूद लड़की का नम्बर मिल गया तो वह माउथपीस में बोली - "हल्लो, अशोक। मैं वर्षा बोल रही हूं।"
"वर्षा !" - दूसरी ओर से आवाज आयी - "इस वक्त कहां से बोल रही हो ?"
"डिमेलो रोड से। आज एक इमरजेंसी आपरेशन की वजह से रुकना पड़ गया था। अब लौटने में दिक्कत आ रही है। हस्पताल में गाड़ी उपलब्ध नहीं थी। मैं टैक्सी पर सवार होने की नीयत से वहां से चल पड़ी थी लेकिन अब मुझे कोई टैक्सी भी नहीं मिल रही। शुक्र है कि फोन पर तुम मिल गये हो। अब बराय मेहरबानी तुम अपनी कार पर यहां आकर मुझे ले जाओ।"
"तुम हस्पताल में ही फोन कर देती मुझे।"
"हस्पताल का फोन खराब था।"
"अच्छा हस्पताल है जिसमें न वक्त पर गाड़ी हासिल है और न फोन..."
"तुम आ रहे हो ?"
"हां। और क्या नहीं आऊंगा ?"
"शुक्रिया।"
"डिमेलो रोड पर तुम हो कहां ?"
"प्रिंसेस बार के सामने के टेलीफोन बूथ में।"
"वर्षा, तुम ऐसा करो, बार के सामने ही मैंगलोर स्ट्रीट है, तुम उस गली को पार करके निकोल रोड पर आ जाओ।"

"वहां क्यों ?"

"क्योंकि डिमेलो रोड पर आजकल सड़क मरम्मत के लिए रास्ता बन्द है। वहां दूसरी तरफ से पहुंचने के लिए मुझे बहुत लम्बा चक्कर काट कर आना पड़ेगा। मिंट रोड के सिरे तक जाना पड़ेगा मुझे। तुम वह जरा-सी गली पार करके निकोल रोड पर आ जाओगी तो हम जल्दी घर पहुंच जायेंगे। जितनी देर में तुम गली पार करोगी, उतनी देर में मैं भी वहां पहुंच जाऊंगा।"

"ठीक है।"

"मुझे निकोल रोड पर मैंगलोर स्ट्रीट के दहाने पर मिलना।"

"ओके।"

***

जनकराज धोते उस अक्ल के अन्धे मोटे थुलथुल आदमी का नाम था जिसके साधन तो मंगतों जैसे थे लेकिन जिसकी ख्वाहिशें दुनिया को फतह कर लेने के ख्वाहिशमन्द सिकन्दर से भी बढ़चढ़ कर थीं, जिसको मटके की एजेन्टी के धन्धे से सब्र नहीं था, जो हेरोइन की बिक्री के खतरनाक धन्धे में हाथ डाल बैठा था और जो नहीं जानता था कि वैसे खतरनाक धन्धे बिना मुनासिब सरपरस्ती के नहीं चलते थे। उसे 'कम्पनी' का प्यादा जानकर किसी ने ढाई-तीन लाख रुपये की हेरोईन का तो उसका एतबार कर लिया था लेकिन उसे किसी तरह की सरपरस्ती देने की कतई कोशिश नहीं की थी, अलबत्ता उसे यह जरूर बता दिया था कि उधार में मिली हेरोईन में या उस की कीमत में कोई घोटाला करने की सूरत में इसकी लाश छत्तीस टुकड़ों में बंटी अरब सागर में तैरती पायी जा सकती थी।

ऐसे ही आ बैल मुझे मार जैसी फितरत के व्यक्ति धोते को मारुतिराव और रोबीरो की जुगल जोड़ी ने यह भरोसा दिया था कि सिर्फ दो फीसदी की कमीशन पर वे उसे एक लाख रुपये की 'गुरुजी' के ग्राहक से मिलवा सकते थे।

प्रिंसेस बार में उनके साथ बैठे धोते ने फौरन वह आफर कबूल कर ली अपनी निगाह में यह कहकर भारी होशियारी दिखाई कि माल उनके पास नहीं था, वह ग्राहक से मिलेगा, वह उससे रकम हासिल करेगा और फिर माल लाकर देगा।

दोनों ने फौरन हामी भर दी।

अपनी मूर्खता के साथ-साथ धोते नशे के हवाले न होता तो आनन-फानन हुई उस हामी ने ही उसे चौकन्ना कर दिया होता।

वह सहर्ष ग्राहक से मुलाकात की खातिर उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गया।

कत्ल के लिए मुनासिब जगह रोबीरो ने पहले ही चुनी हुई थी। मैंगलोर स्ट्रीट के सिरे पर एक तीन मंजिला इमारत थी जो कभी आतंकवादियों का अड्डा होती थी और जहां कभी गोला-बारूद तैयार किया जाता था। एक बार वहां मौजूद बारूद का भण्डार किसी प्रकार आग पकड़ गया था और आनन-फानन वह सारी इमारत खंडहर बन गई थी। इमारत की कुछ दीवारें अभी भी खड़ी थीं, कोई-कोई छत भी कांखती कराहती बरकरार थी लेकिन रहने लायक उसका कोई भी हिस्सा नहीं रहा था। दिन में इमारत के विशाल कम्पाउन्ड में बच्चे खेलने के लिए घुस जाते थे लेकिन रात को वह भूतों का डेरा ही बनकर रह जाती थी।

वह जगह रोबीरो ने कत्ल के लिए चुनी थी जहां कि, बकौल रोबीरो, कई दिन तक तो लाश का पता भी नहीं चलने वाला था।

धोते के दायें-बाये चलते हुए रोबीरो और मारुतिराव मैंगलोर स्ट्रीट में दाखिल हुए और उस खंडहर इमारत की तरफ बढ़े।

***

वर्षा मैंगलोर स्ट्रीट के मध्य में पहुंच गई तो उसे लगा कि वह गली का इकलौती राहगुजर नहीं थी। अपने पीछे से किसी के कदमों के आवाज उसे निरन्तर सुनाई दे रही था। उस सुनसान गली में उसके पीछे निश्चय ही कोई था।

कहीं वह उसी के पीछे तो नहीं आ रहा था। - वर्षा ने तनिक भयभीत होकर सोचा

उसने एक बार सावधानी से घूमकर अपने पीछे निगाह दौड़ाई तो उसे अन्धेरी गली में कोई दिखाई न दिया।

जरूर उसे पीछे घूमता पाकर वह किसी पेड़ के पीछे छुप गया था।

क्यों न वह भी थोड़ी देर के लिए कहीं छुप जाए और उसे गुजर जाने दे ?

लेकिन - उसने सिहर कर सोचा - अगर कोई उसी की फिराक में था तो वह भला यूं चुपचाप कैसे गुजर जाता गली में से !

उसने जल्दी-जल्दी गली पार कर जाना ही मुनासिब समझा।

उसके दोबारा चलना शुरू करते ही पीछे से कदमों की आहट फिर सुनाई देने लगी।

वह और भी भयभीत हो उठी। उसका जी चाहने लगा कि या तो वह जोर से चिल्ला पड़े और या वह एकदम वहां से भाग निकले। लेकिन उससे दोनों में कोई भी काम न किया। वह खामखाह डर रही थी। - उसने अपने आपको तसल्ली दी - उस इलाके से वह पूरी तरह वाकिफ थी। राहजनी या बलात्कार की कोई घटना वहां हुई हो, ऐसा उसने कभी नहीं सुना था।

तो फिर वह भयभीत क्यों थी ?

भयभीत क्या, वह तो आतंकित थी और उसके सारे जिस्म में रह-रहकर ठण्डक की लहर दौड़ जाती थी।

बेमानी था उसका डरना। वह गली उसकी बपौती थोड़े ही थी। कोई भी उस रास्ते से गुजर सकता था।

लेकिन उसके ठिठकने पर पीछे से आती पदचाप बन्द क्यों हो गई थी ?

उसने एक बार फिर घूम कर पीछे देखा।

उसी क्षण पीछे आता व्यक्ति एक स्ट्रीट लाइट के नीचे से गुजारा।

वर्षा ने देखा कि वह एक हाथी जैसा विशालकाय व्यक्ति था।

उसके विशाल आकार और सिर की टोपी के अलावा वर्षा और कुछ न देख सकी क्योंकि तभी रोशनी उसके पीछे हो गई। रोशनी पीछे होती ही उसके विशाल शरीर का इतना लम्बा साया गली में बना कि उसके सिर की परछाई वर्षा को अपने जिस्म पर पड़ती लगी। वह घबराकर आगे बढ़ी।

तभी साया ठिठक गया।

उसकी जान में जान आई। इस बार साया उसके ठिठकने पर नहीं ठिठका था, बल्कि उसके आगे बढ़ने पर ठिठका था।

***

धोते को पूर्ववत् अपने बीच में चलाते हुए मारुतिराव और रोबीरो खंडरह इमारत के कम्पाउम्ड में दाखिल हुए।

कम्पाउन्ड पार करके जब वे इमारत के बरामदे में पहुंचे तो एकाएक धोते ठिठक गया।

तब उसे पहली बार महसूस हुआ कि जिस जगह वह लाया गया था, वह किसी सांप, छछूंदर, चिमगादड़ की रिहायश तो ही सकती थी, किसी इनसान के बच्चे की नहीं।

"यहां रोशनी क्यों नहीं है ?" - धोते सकपकाये स्वर में बोला।

"अभी हो जाएगी।" - रोबीरो आश्वासनपूर्ण स्वर में बोला और उसने उसे भीतर की तरफ धकेला।

"यह तुम कहां ले आए हो मुझे ?" - धोते अपनी बांह से उसका हाय झटकता हुआ बोला - "यहां कौन रहता है ?"

"ग्राहक।"

"कोई इस खंडहर में कैसे रह सकता है ?"

"वह यहां रहता नहीं है। उसने मिलने के लिये यह जगह मुकर्रर की गई है।"

"वह भीतर है ?" - धोते सन्दिग्ध भाव से बोला।

"हां।"

"मुझे तो नहीं लगता कि भीतर कोई हो।"

"वह पिछवाड़े में है।"

"उसे यहां बुलाओ।"

"आवाज देना मुनासिब नहीं होगा।"

"तो जाकर लेकर आओ। मैं भीतर नहीं जाने का।"

एकाएक धोते एक कदम पीछे हटा और वापिस घूमा।

मारुतिराव धोते एक कदम पीछे हटा और वापिस घूमा।

"मारुतिराव" - रोबीरो सांप का तरह फुंफकारा - "पकड़ हरामजादे को।"

मारुतिराव ने फौरन उसे दबोच लिया। उसका एक हाथ धोते के मुंह पर पड़ा और दूसरा उसकी थुलथुल कमर से लिपट गया। उसने अपना एक घुटना उसकी पीठ में धंसाया और उसे अपने साथ घसीटता हुआ इमारत के भीतर ले चला।

रोबीरो के हाथ में एक कोई फुट भर का लोहे का डण्डा प्रकट हुआ। वह छलांग मारकर उनके सामने पहुंचा। उसका डण्डे वाला हाथ हवा में उठा और फिर वह गाज की तरह धोते की खोपड़ी पर गिरा।

***

आगे निकोल रोड पर से वर्षा को किसी वाहन की आवाज नहीं आ रही थी। जाहिर था कि अशोक कार लेकर अभी वहां नहीं पहुंचा था।

सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ था। कहीं कोई आवाज नहीं थी।

सिवाय उन कदमों की आहट के जो वर्षा को अपने पीछे से फिर आने लगी थी।

पता नहीं यह हकीकत थी या उसका वहम था लेकिन वर्षा को ऐसा लगा जैसे इस बार पीछे आते व्यक्ति ने भी तेज-तेज चलना शुरू कर दिया हो।

तभी वह कोने की खंडहर इमारत के करीब पहुंची।

फिर एकाएक किसी अज्ञान भावना से प्रेरित होकर आगे बढ़ने के स्थान पर वह इमारत के कम्पाउन्ड के टूटे फाटक के भीतर दाखिल हो गई। दबे पांव वह इमारत के बरामदे तक पहुंची और स्तब्ध खड़ी पंजों के बल उचक कर बाहर गली में देखने लगी।

अगर उसके पीछे आता साया चुपचाप खंडहर इमारत के सामने से गुजर गया तो वह समझेगी कि जो कुछ सोच-सोचकर वह हलकान हुई जा रही थी, वह सब उसके दिमाग का खलल था।

साया गली में उसके सामने प्रकट हुआ।

वर्षा हड़बड़ाकर भीतर गलियारे में सरक गई। वह उसे बरामदे में खड़ी देख जो सकता था।

इमारत के सामने साया ठिठका।

वह सहम कर दो कदम पीछे हट गई।

साया अनिश्चित-सा गली में खड़ा आंधी में हिलते ताड़ के पेड़ की तरह झूम रहा था।

अगर वह इमारत में दाखिल हुआ - वर्षा ने फैसला किया - तो वह गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगेगी।

तभी इमारत के भीतर कहीं हलकी-सी आहट हुई।

वर्षा को अपनी सांस रुकती सांस महसूस हुई।

क्या भीतर भी कोई था ?

अब उसे इमारत में कदम रखना अपनी महामूर्खता लगने लगी थी।

कौन था भीतर ? कोई जानवर या -

दूसरी सम्भावना पर विचार करने के ख्याल से ही उसे दहशत होने लगी।

भीतर फिर आहट हुई।

वह आंखे फाड़-फाड़कर गलियारे में देखने लगी।

यह उसकी खुशकिस्मती थी कि गलियारे में वह दो कदम और आगे नहीं बढ़ आई थी वर्ना धोते के साथ-साथ उसका काम तमाम हो जाना भी लाजमी हो जाता।

गलियारे के सिरे पर विशाल हाल था और हाल से पार फिर गलियारा था। उस परले गलियारे में वर्षा को एक साया दिखाई दिया। अन्धेरे में वर्षा यह न समझ सकी कि उसकी तरफ साये का मुंह था या पीठ थी।

"हो गया काम ?" - पिछले गलियारे से एक दबी हुई आवज आई।

"हां।"

"तो फिर हिलता क्यों नहीं यहां से ?"

"मैं देख रहा था कि इसका क्या हाल है ?"

"अब इसका हाल इसका बनाने वाला देखेगा। इसे छोड़ और चल यहां से। यहां एक सैकेण्ड भी फालतू ठहरना मूर्खता होगी।"

"अच्छा।"

तब वर्षा को पहले साये के साथ एक और साया दिखाई दिया। एक मोटा और ठिगना और दूसरा पतला और लम्बा।

मन मन के पांव उठाती वर्षा वापिस वरामदे में आ गई और एक खम्बे के पीछे सांस रोककर खड़ी हो गई।

बाहर सड़क पर टोपी वाला साया अब मौजूद नहीं था। या वह कहीं छुप गया था और या वह आगे बढ़ गया था।

भीतर से दोनों व्यक्ति बरामदे में प्रकट हुए और वर्षा के बहुत करीब से गुजरते हुए उन्होंने कम्पाउन्ड में कदम रखा। दबे पांव चलते हुए वे फाटक से बाहर निकले।

"भाई साहब !"

दोनों चौंके।

राहुल, जो एक पेड़ के नीचे पड़ी चट्टान पर बैठ गया था, उन्हें देखकर उठकर खड़ा हो गया। झूमता-झूमता, डगमग चाल चलता, वह उन दोनों के करीब पहुंचा।

रोबीरो का हाथ कोट की जेब में पड़े लोहे के डण्डे से लिपट गया।

मारुतिराव ने व्याकुल भाव से पहले राहुल को और फिर गली में दाएं-बाएं देखा।

रोबीरो ने आश्वासनपूर्ण ढंग से उसका कन्धा दबाया।

"भाई साहब" - राहुल की जुबान नशे में लाक हुई जा रही थी और वह बड़ी कठिनाई से बोल पा रहा था। जैसी उसकी हालत थी, उसमें उसका अपने पैरों पर खड़ा रह पाना भी करिश्मा लग रहा था - "आप कहां है ?"

"क्या मतलब ?" - रोबीरो तीखे स्वर में बोला।

"मेरा मतलब, मैं" - "राहुल ने झूमते हुए एक हाथ से अपनी छाती ठोकी - मैं कहां हूं ?"

"यह टुन्न है।" - मारुतिराव फुसफुसाया - "इसे छोड़ो, इस वक्त इसे दीन-दुनिया की खबर नहीं।"

"मैं कहां हूं, भाई साहब ?" - राहुल फिर बोला - "भाई साहब, मै कहां हूं ? बताते जाइए न। बेहरमानी होगी।"

"तुम" - रोबीरो बोला - "जमीन के ऊपर हो और आसमान के नीचे हो।"

"जमीन कहा है, भाई साहब, आसमान कहां है ?"

"जमीन आसमान के नीचे है और आसमान जमीन के ऊपर है और दोनों के बीच में तुम हो।"

"वाह ! वाह, भाई साहब ! क्या पता बताया है आपने मेरा ! बेहरबानी, आई मीन, मेहरबानी आपकी। अब एक पते की बात मेरे से भी सुनते जाइए।"

"क्या ?"

"कल मटके में सिंगल नम्बर सत्ता निकलने वाला है। लक्की सैवन। भाई साहब, इट इज ए श्योर विन। बैट युअर शर्ट आन इट।"

"अच्छा ! तुमने लगा दिया अपना सारा माल सत्ते पर ?"

"पता नहीं, भाई साहब।"

"पता नहीं ! तुम्हे यह भी पता नहीं की तुमने मटका खेला है या नहीं ?"

"पता नहीं।"

"अब तक नहीं खेला तो गया तुम्हारा नम्बर। आज का नम्बर तो निकल चुका होगा।"

"सत्ता !"

"सत्ता भी निकला होगा तो तुम्हारे किस काम का ?"

"सत्ता फिर निकलेगा।"

"क्या कहने !"

"सत्ता रोज निकलेगा। लक्की सैवन। बैट युअर शर्ट आन इट, माई डियर फ्रेंड।"

"यह टुन्न है।" - मारुतिराव बोला - "चलो। इसके साथ सिर खपाई मत करो।"

दोनों ने आगे बढ़ने का उपक्रम कीया।

"भाई साहब" - राहुल ने फरियाद की - "एक आखिरी बाप... बात और बताते जाइए।"

"पूछो।"

"यह" - राहुल ने खंडहर इमारत की तरफ संकेत किया - "कोई होटल है ?"

"हां" - रोबीरो बोला - "बम्बई का बहुत फेमस फाइव स्टार होटल है यह ! ताजमहल कहते हैं इसे।"

"अश्शा ! यह ताजमहल है ! मुझे भी रात गुजारने के लिए किसी होटल की तलाश थी।"

"यह बढ़िया जगह है।"

"जरूर होगी लेकिन यहां अन्धेरा... अन्धेरा क्यों है ?"

"क्योंकि तुम बाहर हो। तुम भीतर जाओगे तो रोशनी हो जाएगी।"

"दैश गुड ! शुक्रिया, भाई साहब। अपने एक रपदेसी सेलर की बहुत मदद की। बेड़ा पार लगाया आपने उसका

। आप तो मेरे नेवीगेटर हैं आप तो..”

मारुतिराव ने रोबीरी को बांह पकड़कर घसीटा।

राहुल को वैसे ही बकता-झकता छोड़कर दोनों आगे बढ़ गए।

कुछ क्षण बाद वहां से हटा और परे जाकर फिर पेड़ के नीचे चट्टान पर बैठ गया।

“सिंगल नम्बर सत्ता !” - वह ऊंघता हुआ बड़बड़ा रहा था - “लक्की वन ! सेवन थाउ आन लक्की सैवन।”

***

गली खाली हो गई तो वर्षा की जान में जान आई। वह खम्बे की ओट से बाहर निकली। उसने अपनी साड़ी के पल्ले से अपना चेहरे पर चुहचुहा आई पसीने की बूंदों को साफ किया और फिर बरामदे से नीचे उतरने के लिए आगे कदम बढ़ाया।

तभी पीछे इमारत में से एक अजीब आवाज आई।

वर्षा का हलक फिर सूखने लगा। उसने साफ महसूस किया कि वह किसी के हौले से कराहने की आवाज थी।

हे भगवान ! अब कौन था भीतर ?

कराह में ऐसी बेबसी और दयनीयता बसी हुई थी कि फौरन वहां से भाग निकलने को तत्पर, व्यग्र, वर्षा के पांव जड़ हो गए।

भीतर जो कोई भी था, बहुत तकलीफ में था। कराह ऐसी थी जैसे कराहने वाले की अगली सांस का भी भरोसा नहीं था। ऐसे तो वही कराह सकता था जो मौत की कगार पर खड़ा हो। ऐसे व्यक्ति से उसे क्या खतरा हो सकता था। वह डाक्टर थी। क्या पता ऐसे किसी शख्स को वक्त पर हासिल हुई कोई डाक्टरी सहायता उसकी जान बचा सके।

वह वापिस गलियारे में दाखिल हुई। अन्धेरे में अन्दाजन चलते हुए उसने हाल पार किया और पिछले गलियारे में पहुंची। पिछले गलियारे के आगे एक कमरा था, जिसकी इकलौती विशाल खिड़की टूटी हुई थी और उसमें से थोड़ी-बहुत रोशनी भीतर आ रही थी। उस निहायत नाकाफी रोशनी में आंखें फाड़-फाड़ कर वर्षा ने देखा कि एक खिड़की के करीब फर्श पर कुछ पड़ा था। वह दो कदम और आगे बढ़ी और उसने बहुत गौर से देखा तो पाया कि वह एक इंसानी जिस्म था।

“कौन है ?” - वह आतंकित भाव से बोली।

कोई उत्तर न मिला। फर्श पर पड़े व्यक्ति के मुंह से कोई क्षीण-सी कराह भी न निकली।

फिर एकाएक वर्षा की सारी हिम्मत दगा दे गई। उसके मुंह से एक घुटी हुई चीख निकली और फिर वह तूफानी रफ्तार से खंडहर के मलबे और कूड़े-करकट से उलझती, गिरती-पड़ती वापिस भागी और बिना रास्ते में कही भी ठिठके सीधे सड़क पर पहुंच गई।

तभी एक कार की हैडलाइट्स की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ी।

वर्षा के मुंह से फिर एक घुटी हुई चीख निकली और फिर वह घूमकर कार से विपरीत दिशा में भागी।

“वर्षा !”

वर्षा फिर भी न रुकी।

अशोक कार से बाहर निकलकर उसके पीछे भागा।

थोड़े फासले पर उसने वर्षा को पकड़ लिया।

“छोड़ो ! छोड़ो !” - वर्षा उसकी पकड़ में छटपटाती हुई बोली।

“वर्षा !” - अशोक उसे झिझोड़ता हुआ डपट कर बोला - “होश में आओ। मैं हूं। अशोक ! अशोक !”

“अशोक !” - वर्षा के मुंह से चैन की सांस निकली। तब कहीं जाकर उसने हाथ-पांव पटकने बन्द किए।

“क्या हुआ ?” - अशोक बोला।

“उस... उस खंडहर इमारत में... एक आदमी मरा पड़ा है।”

“आदमी मरा पड़ा है ! तुम्हें कैसे मालूम ?”

“मैंने उसे देखा था।”

“तुमने उसे देखा था ! तुम उस खंडहर में क्या करने घुसी थीं ?”

“गली में कोई आदमी मेरे पीछे लग गया था। उससे छुपने के लिए मैं खंडहर में घुसी थी।”

“अब कहां गया वो आदमी ?”

“पता नहीं।”

“था कौन वो ?”

"पता नहीं। मैंने उसका साया ही देखा था।"
"तुम्हें अन्धेरे की वजह से वहम तो नहीं हो गया था कि गली में तुम्हारे पीछे कोई आदमी था ?"
"नहीं। मुझे वहम नहीं हुआ।"
"आओ चलकर देखें।"
दोनों पैदल खंडहर इमारत पर वापिस लौटे।
"इमारत तो अन्धेरे में डूबी हुई है।" - अशोक बोला - "पहले क्या यहां रोशनी थी ?"
"नहीं" - वर्षा बोली - "पहले भी यूं ही अन्धेरा था।"
"इतने अन्धेरे में तुम्हें खबर कैसे लगी कि भीतर कोई आदमी था ?"
"मैंने उसकी कराह सुनी थी।"
"कराह सुनी थी। कराहता हुआ आदमी मुर्दा कैसे हो सकता है ?"
वह खामोश रही।
"कैसी डाक्टर हो तुम, जो यह भी न जान सकीं कि वह शख्स जिन्दा था या मुर्दा ? अरे, उसकी कोई नब्ज-वब्ज ही देखी होती।"
"मैं बहुत डर गई थी।"
"क्या पता वह अभी भी जिन्दा हो और हस्पताल ले जाया जाने से बच सकता हो। दिखाओ कहां है वो।"
दोनों कम्पाउन्ड में दाखिल हुए। गलियारे में कदम रखने से पहले अशोक ने अपनी जेब से सिगरेट लाइटर निकाल कर जला लिया। लाइटर की रोशनी में चलते हुए वर्षा अशोक को पिछले कमरे में ले आई।
कमरा खाली था।
"यहां तो कोई नहीं है।" - अशोक बोला।
"अच्छी तरह से देखो" - वर्षा बोली - "वह यहीं होगा।"
"वह यहीं होगा ! अरे, वह क्या कोई चूहा था जो हमें आता देखकर किसी बिल में घुस गया ?"
"लेकिन उसे वहां सामने उस टूटी खिड़की के करीब पड़े मैंने खुद देखा था।"
"यहां और कोई नहीं था ?"
"पहले था। पहले दो आदमी और थे लेकिन वे मेरे सामने यहां से चले गए थे। जैसी वे बातें कर रहे थे, उनसे लगता था जरूर उन्हीं ने उस बेचारे को मारा था।"
अशोक आगे बढा। उसने लाइटर की रोशनी खिड़की के करीब फर्श पर डाली।
"यहां खून तो दिखाई दे रहा है" - वह धीरे से बोला - "खून ताजा भी है। किसी मुर्दा आदमी का वहम तो नहीं हुआ मालूम होता तुम्हें।" - वह एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "वर्षा, वह शख्स मरा नहीं होगा, वह सिर्फ घायल हुआ होगा और तुम्हारे यहां से कूच करने के बाद यहां से उठकर चल दिया होगा। इसके अलावा और कोई बात सम्भव नहीं मालूम होती। कोई मुर्दा यहां से आनन-फानन गायब नहीं हो सकता था।"
वर्षा खामोश रही।
"अब चलो यहां से। बहुत तमाशा हो चुका।"
"वह गया किधर से होगा। सामने सड़क पर तो वह आया नहीं।"
"पिछवाड़े का दरवाजा उखड़ा हुआ है और कम्पाउन्ड की पिछवाड़े की दीवार भी टूटी हुई है। जरूर वह यहां से उठकर पिछवाड़े में निकल गया होगा।"
"कहीं वह पिछवाड़े की गली में न पड़ा हो।"
"जो घायल आदमी यहां से उठकर चल-फिर सकता था, वह पिछवाड़े की गली में नहीं जा गिर पड़ने वाला।"
"फिर भी..."
"हम पुलिस को फोन कर देंगे। फिर भी अगर वह वहां होगा तो पुलिस आकर उसे उठा ले जाएगी। ओके ?"
वर्षा ने बड़े अनमने भाव से सहमति में सिर हिला दिया।
वर्षा या अशोक ने पिछवाड़े की टूटी दीवार के करीब आकर एक बार गली में झांक ही लिया होता तो आने वाले वक्त में जनकराज धोते मरहूम की लाश को तलाश करने में उन्हें वह सिर खपाई न करनी पड़ी होती, जो कि उन्होंने बाद में की। तब उन्हें पिछवाड़े की गली में धोते से बगलगीर होकर चलता हुआ राहुल दिखाई दे गया होता।

***

"माई फ्रेंड ! माई डियर फ्रेंड !" - नशे में धुत्त राहुल कह रहा था - "विश्की खत्म हो गई। अफशोश है। लेकिन

कहीं तो और मिलती होगी। अभी तलाश कर लेंगे दोनों शराबी भाई। तुम जरा शम्भलकर चलो। मेरे ऊपर ही मत गिरते जाओ।"

धोते की एक बांह राहुल की गर्दन के गिर्द थी और राहुल की एक बांह उसकी कमर में लिपटी हुई थी। राहुल महज उसे सहारा ही नहीं दिए हुए था, वह तो एक तरह से उसे उठाए-उठाए गली में चल रहा था। धोते, जो कद में उससे कम से कम आधा फुट छोटा था, उसकी गर्दन से एक तरह से टंगा हुआ था और नशे के उस आलम में राहुल को अहसास तक नहीं था कि वह उतना भारी-भरकम शरीर ढो रहा था। अपनी निगाह में वह उसे सिर्फ सहारा देकर चला रहा था। राहुल असाधारण रूप से शक्तिशाली शरीर का स्वामी न होता तो ऐसा हरगिज मुमकिन न हो पाता।

नशे में राहुल पेड़ के नीचे से उठा था और उस खंडहर इमारत में दाखिल हो गया था जिसके बारे में अभी कोई 'भला आदमी' उसे बताकर गया था कि वह ताजमहल होटल था। वहां पिछवाड़े के कमरे में उसने धोते को अचेत पड़ा देखा था। उसने उसको वहां से उठाया था और उसे यह समझाता हुआ पिछवाड़े के रास्ते से बाहर गली में ले आया था कि वह कोई होटल नहीं था, जरूर उसी की तरह किसी ने उसके साथ भी मजाक किया था और उसे वहां भेज दिया था।

"घबराओ नहीं, मेरे भाई" - राहुल फिर उसे आश्वासन देने लगा - "अभी हम कोई अश्शा-सा होटल तलाश कर लेंगे और फिर दोनों शराबी भाई वहां पड़ जाएंगे।"

राहुल वैसे ही धोते को सम्भाले जिधर का रुख हुआ, उधर चलता रहा। लेकिन कभी तो उसने थकना ही था, वह थका।

उस वक्त वह एक अन्धेरे मैदान में से गुजर रहा था जहां कि कई खस्ताहाल गाड़ियां खड़ी थीं।

"अब अपने आप चल, मेरे भाई।" - राहुल रुका और उसने धोते की कमर से बांह निकाल ली।

धोते धड़ाम से जमीन पर गिरा।

"अरे!" - राहुल फिर उसे उठाने का उपक्रम करने लगा - "तू तो अपने पैरों पर खड़ा भी नहीं हो शकता? इतनी क्यों पीता है, मेरे भाई? क्या तूने भी कलेजे पर चोट खाई है? किशी शोकरी ने दिल तोड़ा तेरा! तू बोलता क्यों नहीं, दोश्त? मत बोल। मैं जानता हूं। जरूर यही बात है। तभी तो इतनी पीता है। मेरे भाई, हम दोनों एक ही राह के राही हैं। इशलिए मैं तुझे यूं बेशहारा नहीं शोड़ शकता। पिछले महीने इश्ताम्बूल में मेरी भी ऐशी हालत हुई थी तो मेरे किशी शराबी भाई ने ही मुझे शम्भाला था और मुझे मेरे जहाज पर पहुंचाया था। उशने मेरी मदद न की होती तो मैं जरूर मर गया होता। किशी ने मेरी मदद की थी, मैं तेरी मदद करूंगा। तू उठ। उठकर खड़ा हो। इधर आराम से बैठ जा।"

राहुल ने उसे एक टूटी हुई, बिना दरवाजों की, कार की पिछली सीट पर ढेर कर दिया।

"घबराना नहीं" - राहुल उसे आश्वासन देता हुआ बोला - "मैं होटल की तलाश में जाता हूं और तेरे लिए एक कमरा ठीक करके वापिश आता हूं। घबराना नहीं, बिरादर, मैं गया और आया। जश्श गो एण्ड कम।"

दस मिनट बाद राहुल एक घटिया से होटल के रिसैप्शन क्लर्क के सामने खड़ा था।

"सामान किधर है?" - क्लर्क ने संदिग्ध भाव से पूछा।

"शिप पर है।" - राहुल बोला।

तब क्लर्क की निगाह उसकी सफेद पीक कैप पर और नीले कोट के नीचे से झांकती वर्दी पर पड़ी।

"किराया एडवांस।" - कलर्क बोला - "पचास रुपया।"

"मेरे शाथ मेरा फ्रेंड भी है।" - राहुल नशे में झूमता हुआ बोला।

"फिर सौ रुपया। एडवांस निकालो।"

राहुल ने क्लर्क को सौ का नोट दे दिया।

"आओ, तुम्हें तुम्हारा कमरा दिखाऊं।"

"लेकिन मेरा फ्रेंड...."

"पहले कमरा देख लो। फिर उसे ले आना।"

क्लर्क उसे पहली मंजिल के एक कमरे में ले आया। उसने कमरे की बत्ती जला दी।

"तुम्हारा फ्रेंड कौन है?" - क्लर्क ने पूछा।

"पता नहीं।" - राहुल बोला।

"कहां है?"

"पता नहीं।"
"उसे लाओगे कैसे ?"
"पता नहीं।"
"वह खुद यहां आ सकता है ?"
"पता नहीं।"
"तौबा !"
क्लर्क उसे पीछे छोड़कर वहां से चला गया।
चल-चल कर थका हुआ राहुल थोड़ी देर के लिए पलंग पर बैठ गया। बैठा तो लेट गया। लेटा तो सो गया। सोया तो जैसे उसके लिए दीन-दुनिया खत्म हो गई।
उसे याद भी न रहा कि वह वहां अपने कथित फ्रेंड के लिए रैन-बसेरा तलाश करने आया था और तलाश मुकम्मल हो जाने के बाद उसने उलटे पांव वापिस लौटना था।

***

वर्षा भायखला के इलाके में मिसेज ग्रे के गैस्ट हाउस के नाम से जाने जाने वाले लेडीज होस्टल के एक कमरे में रहती थी।
अशोक के साथ अपने कमरे में पहुंच चुकने के बाद उसने पाया कि उसका पर्स उसके पास नहीं था।
"कार में रह गया होगा" - अशोक सहज भाव से बोला - "मैं देखता हूं।"
वह कमरे से बाहर निकल गया।
अशोक - अशोक घटके - एक बहुत बड़ी कम्पनी में सेल्स मैनेजर था और वर्षा का मंगेतर था। वर्षा के मां-बाप पूना में रहते थे। अशोक की बहुत ख्वाहिश थी कि वर्षा उसके परिवार के साथ मैरिन ड्राइव पर स्थित उनके वैभवशाली फ्लैट में रहे लेकिन वर्षा की जिद थी कि वह एक ही बार वहां कदम रखेगी। शादी के बाद। इसीलिए वह उस गैस्ट हाउस में अकेली रहती थी। हस्पताल के होस्टल में उसे जगह मिल सकती थी, लेकिन वहां एक कमरे में दो-दो युवतियां रहती थीं इसलिए उसे वह जगह पसन्द नहीं थी।
"पर्स कार में तो नहीं है।" - अशोक लौटकर बोला।
"तो फिर जरूर हस्पताल में रह गया होगा।" - वह बोली - "कल मिल जाएगा।"
लेकिन मन ही मन वह बड़े संशकभाव से सोच रही थी कि पर्स कहीं वह उस खंडहर इमारत में तो नहीं गिरा आई थी ? पिछवाड़े के कमरे में लाश देखकर जब उसकी चीख निकल गई थी तो उस वक्त कहीं पर्स उसके हाथ से निकलकर नीचे तो नहीं गिर पड़ा था ?
"मैं तुम्हारे लिए चाय बनाती हूं।" - वह बोली।
"नहीं" - अशोक बोला - "चाय रहने दो। तुम मेरे सामने बैठ जाओ और तरीके के मुझे सारी बात सुनाओ। वहां से शुरू करो जब तुमने मुझे प्रिंसेस बार के सामने के टेलीफोन बूथ से फोन किया था।"
वर्षा ने ऐसा ही किया।
"वर्षा" - सारी बात सुन चुकने के बाद अशोक बोला - "मेरी समझ में तो एक ही बात आती है। उस खंडहर के पिछले कमरे में बैठकर जरूर तीन जनों ने शराब पी थी। शराब खत्म हो जाने पर दो जने वहां से उठकर चले गए थे और तीसरा जो कि ज्यादा टुन्न होगा, वहां फर्श पर ही सो गया था। तुमने उसे देखा तो उसे मरा पड़ा समझा। तुम चीखीं। तुम्हारी चीख से उसकी नींद खुल गई। तुम वहां से भाग खड़ी हुईं तो वह शराबी भी वहां से उठा और पिछवाड़े से बाहर निकल गया। बस। कहानी खत्म।"
"और वो आदमी जो मेरे पीछे-पीछे आ रहा था ?"
"वो कोई राहगीर था जिससे तुम खामखाह डर गई थीं। वह भी तुम्हारी तरह महज गली पार कर रहा था।"
"तो फिर मेरे ठिठकने पर वह भी क्यों ठिठक जाता था ?"
"वह तुम्हारा वहम होगा।"
वर्षा खामोश रही।
"जो हुआ उसे भूल जाओ" - अशोक उसका कन्धा थपथपाता हुआ बोला - "और आराम से सोवो। आधी रात हो गई है। मैं चलता हूं
वर्षा ने सहमति में सिर हिलाया।

***

सुबह के चार बजे रोबीरो और मारुतिराव भिंडी बाजार में स्थित एक चाल में मारुतिराव की खोली में पहुंचे। मारुतिराव की बीवी और दोनों बच्चे खोली के सामने गलियारे के फर्श पर सोये पड़े थे। मारुतिराव ने अपनी चाबी से चुपचाप खोली का दरवाजा खोला और रोबीरो के साथ भीतर दाखिल हुआ। वह खोली की डिब्बे जैसी किचन में पहुंचा और उसने बत्ती जलाई। दोनों फर्श पर बैठ गये।

धोते के कब्जे से हेरोइन उनकी उम्मीद से ज्यादा निकली थी लेकिन उन्हें पैसे उनकी उम्मीद से कम मिले थे। उनके खरीददार ने बताया था कि हेरोइन प्योर नहीं थी इसलिए उसकी कीमत कम थी। वे दोनों हेरोइन के बारे में कुछ जानते नहीं थे इसलिए खरीददार की बात पर विश्वास कर लेने के अलावा और कोई चारा उनके पास नहीं था।

बहरहाल उन्हें एक लाख साठ हजार रुपये उस हेरोइन को बेच कर मिले थे।

धोते की जेब में मटके का पच्चीस-तीस हजार रुपया भी था लेकिन उसको उन्होंने छुआ तक नहीं था। उन्होंने केवल हेरोइन की छोटी-छोटी थैलियां निकाली थीं जो कि धोते अपने कपड़ों के नीचे पहनी अपनी जेबों वाली वास्कट में रखता था।

वे दोनों घुटे हुए बदमाश थे और एक एक बार जेल की हवा भी खा चुके थे। कत्ल ही एक ऐसा अपराध था जो उन्होंने आज तक नहीं किया था। अपनी करतूत को वे कामयाबी से अंजाम दे चुके थे लेकिन उस वक्त वे इस ख्याल से सहमे हुए थे - रोबीरो कम और मारुतिराव ज्यादा - कि उन्होंने कत्ल किया था, अब वे कत्ल के अपराधी थे और पकड़े जाने पर फांसी की सजा पा सकते थे। ऊपर से उन्हें इस बात का भी अफसोस था कि अपनी उम्मीद से आधी ही रकम उनके हाथ लगी थी।

वहां दोनों ने चुपचाप हासिल रकम का बंटवारा कर लिया।

अपना हिस्सा सम्भालकर रोबीरो उठकर जाने लगा तो मारुतिराव अपने होंठों पर जुबान फेरता हुआ बोला - "रोबीरो !"

"क्या है ?"

"तुझे विश्वास है वह मर गया होगा ?"

"अच्छा !" - रोबीरो व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला - "तुझे शक है ?"

"फिर भी ?"

"क्या फिर भी ? अरे, लोहे के डण्डे का जैसा वार मैंने किया था वह तो किसी भैंसे की जान ले सकता, धोते की तो बिसात ही क्या है !"

"अगर वह जिन्दा हुआ तो हमारी शामत आ जोयेगी।"

"दिमाग खराब है तेरा। यह वहम मन से निकाल दे और अस्सी हजार रुपयों का तकिया लगाकर चैन की नींद सो। सारी रात का जगा हुआ है।"

"यार" - मारुतिराव व्याकुल भाव से बोला - "पता नहीं क्यों मेरा दिल डर रहा है।"

"किस बात से ?"

"कि कहीं वह जिंदा न हो।"

"अबे, साले ! तेरी अक्ल तो नहीं मारी गई ? क्यों खामखाह हलकान हो रहा है। वह मर चुका है।"

"तुझे कैसे मालूम ? तूने कौन-सी उसकी नब्ज देखी थी या दिल टटोला था !"

"उसकी कोई जरूरत नहीं थी। मुझे मालूम था कि हेरोइन की थैलियां बरामद करने के लिए मैं एक लाश का जिस्म टटोल रहा था।"

मारुतिराव खामोश हो गया लेकिन उसके चेहरे पर आश्वासन के भाव न आये।

"अब कल क्या करेगा ?" - रोबीरो ने पूछा।

"कल !" - मारुतिराव तनिक हड़बड़ाकर बोला - "कुछ भी नहीं करूंगा। आराम करूंगा सारा दिन।"

"नहीं। दोपहर को हमेशा की तरह बार में पहुंच जाना। आने वाले दिनों में हमारी दिनचर्या में कोई भी बात असाधारण नहीं लगनी चाहिए।"

"कल लाश बरामद हो जायेगी ?"

"उम्मीद तो नहीं, लेकिन अगर किसी वजह से हो गई और पुलिस ने लाश की शिनाख्त कर ली तो वह प्रिंसेस बार में उसके बारे में पूछताछ करने जरूर आयेगी। वह बार हमारी तरह धोते का भी अड्डा था। ऐसे वक्त में हमारा वहां न होना हमारे लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है। कोई वहां हमारी गैरहाजिरी का रिश्ता धोते के कत्ल से जोड़ सकता है।"

“ओह !”
“इसलिए जो आराम करना है दोपहर तक कर ले। फिर हमेशा वाले वक्त पर बार में पहुंच जाना।”
“अच्छा।”

पहला दिन

सूरज जब सिर पर चढ आया तो राहुल की नींद खुली। एकबारगी तो वह यह भी न याद कर पाया कि वह कहां था। आंखें मिचमिचाता हुआ वह उठ कर बैठ गया। उसने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी पर निगाह डाली।

पौने बारह बजे थे।

फिर उसने पाया कि पिछली रात वह ओवरकोट और जूतों समेत पलंग पर ढेर हो गया था। उसकी सफेद पीक कैप उसके सिर से उतर कर नीचे फर्श पर जा गिरी थी।

उसने कपड़े उतारे और टायलेट में दाखिल हो गया।

पन्द्रह मिनट बाद वह नहा-धोकर बाहर निकला और उसने अपने कपड़े फिर पहन लिए। फर्श पर से उठाकर अपनी पीक कैप भी उसने सिर पर रख ली।

बाहर निकली तीखी धूप को निगाह में रखते हुए सिर्फ कोट उसने न पहना।

जब से वह जागा था, उसके भीतर से बार-बार कोई पुकार उठ रही थी जिसे वह समझ नहीं पा रहा था। अब ठण्डे पानी के गुसल के बाद उसका फिरकनी की तरह घूमता सिर कुछ ठिकाने लगा था तो उसमें उस पुकार को समझने की कूवत पैदा हुई थी।

कल रात कोई उसके साथ था।

कोई ऐसा शख्स उसके साथ था जिसे उसकी मदद की जरूरत थी और हालात ऐसे थे कि जिसकी मदद सिर्फ वह ही कर सकता था।

कहां गया उसका साथी ?

कहां मिला था वह उसे ? कहां बिछुड़ा था वह उससे ? क्यों उसे किसी की मदद दरकार थी ? क्या हुआ था उसे ?

राहुल ने अपना सिर अपने हाथों में थाम लिया और उन सवालों का जवाब सोचने लगा।

उसे कुछ भी न सूझा।

"उसे ढूंढना होगा" - झुंझला कर वह उठ खड़ा हुआ और जोर से बोला - "उसे मेरी मदद की जरूरत थी। मुमकिन है वह अभी भी मेरा इन्तजार कर रहा हो।"

वह कमरे से बाहर निकल आया।

पिछली रात की कई धुंधली तस्वीरें उसके जेहन पर उभर रही थी।

जैसे एक बेहद शोर-शराबे वाला बार, टेलीफोन बूथ में मौजूद एक लड़की, एक लम्बी, अन्धेरी गली, एक अन्धेरा होटल, उसके कन्धे से लिपट कर उसके साथ चलता एक आदमी।

वह रिसेप्शन पर पहुंचा।

"गुड मार्निंग।" - रिसेप्शनिस्ट बोला।

"मैं कहां हूं ?" - उसने पूछा।

"तुम होटल में हो।" - रिसेप्शनिस्ट तनिक विस्मित भाव से बोला।

"मेरा मतलब है इस होटल का क्या नाम है ?"

"सरताज होटल।"

"कहां हुआ यह ?"

"बन्दरगाह के इलाके में सेंट जार्ज रोड पर।"

"कल रात मैं यहां किस वक्त आया था ?"

"पता नहीं। कल रात ड्यूटी पर मैं नहीं था। मेरी ड्यूटी दिन की होती है।"

"ओह !" - वह एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "यहां आसपास कोई बार है ?"

"बगल में ही है। वह बार भी इसी होटल का हिस्सा है।"

राहुल बार में पहुंचा।

बार उस वक्त एकदम खाली पड़ा था।

उसने चारों तरफ निगाह दौड़ाई।

वहां की कोई चीज उसे पहचानी हुई न लगी।

वह बारमैन के पास पहुंचा।

"क्या पिलाऊं ?" - बारमैन बोला।
"कुछ नहीं।" - राहुल बोला - "मेरा मतलब है फिलहाल। पहले मेरे एक सवाल का जवाब दो।"
"पूछो।"
"कल मैं यहां आया था ?"
"हां। आधी रात के करीब तुम होटल में आये थे। मैंने खुद तुम्हें देखा था।"
"मेरे साथ कोई था ?"
"नहीं।"
"मैं बार में आया था ?"
"नहीं। तुम तो पहले ही इतनी पिये हुए थे कि विस्की तुम्हारे कानों से निकल रही थी।"
"कल मेरे साथ कोई था ?"
"था तो वह यहां तक तुम्हारे साथ नहीं पहुंचा था।"
"तो कहां गया वो ?"
"वो तुम्हारा कोई दोस्त था ? कोई शिप का संगी-साथी ?"
"नहीं। वो मेरे लिये एकदम अजनबी था। मैंने जिन्दगी में पहले कभी उसकी सूरत नहीं देखी थी।"
"तो फिर ढूंढ क्यों रहे हो उसे ?"
"क्योंकि वो बेचारा तकलीफ में था और उसे मदद की जरूरत थी। मुझे अब याद आ रहा है, उसका चेहरा कागज की तरह सफेद था और उसके माथे पर गहरा घाव लगा था। शायद खून भी बह रहा था। वह घायल था। मैंने उसकी मदद करने का वादा किया था। मैंने अपना वादा पूरा नहीं किया। मुझे उसको ढूंढना ही होगा।"
"उसकी शक्ल पहचानते हो ?"
"नहीं।"
"कोई नाम पता जानते हो ?"
"नहीं।"
"फिर जरूर ही ढूंढ लोगे उसे बम्बई शहर में।"
"हां" - राहुल उसके व्यंग्य को समझे बिना बोला - "जरूर ही ढूंढ लूंगा।"
राहुल को धीरे-धीरे इतना याद आ गया कि उसने अपना अधिकतर वक्त एक ऐसे बार में गुजारा था जिसके प्रवेश द्वार पर एक टेलीफोन बूथ था। उस शिनाख्त को जेहन में रखकर उसने इलाके के हर बार में घूमना आरम्भ किया।
इस लिहाज से कभी तो उसने प्रिंसेस बार पहुंचना ही था, वह पहुंचा।
उस वक्त बार में कोई दस-बारह लोग मौजूद थे।
वह सीधा काउन्टर पर पहुंचा और बारमैन से सम्बोधित हुआ। अब तक कई बार दोहराया जा चुका सवाल उसने उस बारमैन से भी पूछा।
इस बार जवाब सहमति में मिला।
"मैं था यहां कल रात ?" - राहुल ने यूं फिर पूछा जैसे हासिल हुए जवाब पर उसे विश्वास न हो रहा हो।
"हां।" - बारमैन बोला - "कई वजह से तुम याद हो अपुन को।"
"अच्छा !"
"हां। एक तो तुम कोई पन्दरह पैग विस्की पियेला था। दूसरे तुम सेलरों जैसी वर्दी पहनेला था, ऊपर से तुम... तुम..."
"मैं मोटा हूं।"
बारमैन परे देखने लगा।
"मैं बहुत मोटा हूं। गैंडा या हाथी लगता हूं। चलता हूं तो रोडरोलर की तरह लुढकता मालूम होता हूं। लेकिन भीतर से मैं खोखला हूं इसलिए कई बोतल विस्की पी सकता हूं। है न !"
"अपुन तो कुछ भी नहीं बोला, बाप।"
"तुम नहीं बोला, मैं बोला। वो बोला जो तुम बोलना चाहते थे। तुम समझे कि मुझे बुरा लगेगा। मुझे नहीं लगता। मोटे को मोटा ही तो कहा जाएगा। क्यों ?"
वह खामोश रहा।

"खैर, अब दूसरे आदमी के बारे में बताओ।"
"कौन दूसरा आदमी ?"
"जो मेरे साथ था।"
"तुम्हारे साथ तो कोई नहीं था।"
"मेरे साथ ऐसा कोई आदमी नहीं था जिसका चेहरा फक था और माथे पर घाव था ?"
"न।"
"मैं यहां अकेला आया था ?"
"हां।"
"यहां मैंने किसी से कोई बात नहीं की थी ?"
बारमैन कुछ क्षण सोचता रहा और फिर बोला - "एक बार तुम अपने बाजू की मेज पर बैठे दो आदमियों में से एक से बात कियेला था।"
"फिर तो वही होगा मेरा बिछुड़ा साथी।" - राहुल तनिक उत्साहपूर्ण स्वर में बोला - "वह मेरे साथ गया था यहां से ?"
"नहीं" - बारमैन ने इन्कार में सिर हिलाया - "तुम यहां से अकेला गयेला था।"
"ओह !" - भारी उलझनपूर्ण ढंग से राहुल अपनी खोपड़ी खुजलाने लगा - "मेरे साथ निश्चय ही कोई था" - थोड़ी देर बाद वह फिर बोला - "वो भी मेरी तरह नशे में था और बिना सहारे के चल नहीं सकता था। वह मेरे जितना मोटा नहीं था लेकिन मोटा था और कद में मेरे से काफी छोटा था। मुझे उसका कागज की तरह सफेद चेहरा और माथे का जख्म खूब याद आ रहा है।"
"ऐसा कोई आदमी यहां तुम्हारे साथ नहीं था।"
"ड्रिंक दो।"
डेढ मिनट में राहुल ने दो लार्ज पैग विस्की के पिये।
अपनी हैंगोवर मे सन-सन करती खोपड़ी से उसे कुछ राहत महसूस हुई।
"मेरी बगल की मेज पर दो आदमी बैठे थे" - राहुल सोचता हुआ बोला - "और मैंने उनसे बात की थी ?"
"हां।" - बारमैन ने फिर तसदीक की।
"क्या बात की थी ?"
"यह अपुन को क्या मालूम ? बार के शोर-शराबे में अपुन को तुम्हारी बातचीत थोड़े ही सुनाई दी थी ?"
"शायद एक नहीं, वे दो आदमी मेरे साथ थे। कोई दो आदमी मुझे बाद में भी मिले थे।"
"कहां ?"
"एक अंधेरी गली में। एक उजाड़ इमारत के सामने। इमारत एक नीमअंधेरी गली के कोने में थी। मैं भटक गया हुआ था और मैंने उन दोनों से रास्ता पूछा था..."
रोबीरो और मारुतिराव करीब ही एक मेज पर बैठे थे और कान लगाये बारमैन और राहुल का वार्तालाप सुन रहे थे। राहुल की आखिरी बात सुनकर मारुतिराव के छक्के छूट गए। उसका दिल धाड़-धाड़ उसकी पसलियों से बजने लगा। राहुल की उनकी तरफ पीठ थी लेकिन बार की पिछली दीवार पर लगे विशाल शीशे में राहुल की सूरत साफ प्रतिबिम्बित हो रही थी और उसने राहुल को फौरन पहचान लिया था। वह डील-डौल कोई भूलने वाली चीज थी ! वह वही आदमी था जो तब मैंगलोर स्ट्रीट में उनसे टकराया था जबकि वे धोते का कत्ल करके खंडहर इमारत से बाहर निकल रहे थे।
"वह बहुत बड़ा मकान था" - राहुल कह रहा था - "लेकिन यूं टूटा-फूटा था कि खंडहर लग रहा था और..."
"यह मरवाएगा" - मारुतिराव घबराकर बोला - "इसे चुप कराओ।"
रोबीरो ने चिन्तित भाव से सहमति में सिर हिलाया। वह उठकर काउन्टर पर पहुंचा। राहुल के करीब से वह जानबूझकर इस प्रकार गुजरा कि उसके जिस्म का धक्का राहुल की कोहनी को लगा और आगे उसके सामने काउन्टर पर पड़ा विस्की का गिलास काउन्टर पर लुढक गया।
"सॉरी, बॉस" - राहुल के पहलू में आता हुआ रोबीरो खेदपूर्ण स्वर में बोला - "मेरी गलती से तुम्हारा गिलास लुढक गया। जान, ड्रिंक बनाओ। मेरी तरफ से।"
"नैवर माइन्ड।" - राहुल बोला।
"ऐसा कैसे हो सकता है !" - रोबीरो जिदभरे स्वर में बोला - "मुझे अपनी गलती को सुधारने का मौका दो, बॉस

। जान ! ड्रिंक्स।"

बारमैन ने दो ड्रिंक बनाकर उनके सामने रख दिये।

"चियर्स।" - रोबीरो बोला - "किसी शिप के कप्तान के साथ चियर्स बोलने का यह मेरा पहला मौका है।"

"मैं शिप का कप्तान नहीं हूं।" - राहुल उसके साथ गिलास टकराता हुआ बोला - "पर्सर हूं।"

"अच्छा-अच्छा। पर्सर।" - रोबीरो यूं बोला जैसे खूब जानता हो कि पर्सर कौन होता था, हकीकतन वह शब्द उसने जिन्दगी में पहली बार सुना था - "शिप कौन-सा है तुम्हारा ?"

"सिल्वर स्टार।"

"काफी दिन हो गये बम्बई आए ?"

"नहीं। कल शाम को ही जहाज बन्दरगाह पर लगा था।"

"काफी दिन रुकने का प्रोग्राम है ?"

"नहीं। शुक्रवार शाम सात बजे शिप कराची के लिए रवाना हो जाएगा।"

"पहले कभी बम्बई आए ?"

"नहीं। यह पहला फेरा है।"

"फिर तो शहर की सैर तो अभी की नहीं होगी ?"

"पता नहीं।"

"पता नहीं ? क्या मतलब ?"

"दरअसल कल मैं जरा ज्यादा पी गया था। इसलिए अब मुझे याद नहीं आ रहा कि कल रात मैं कहां था ?"

"यानी कि यह भी याद नहीं आ रहा कि कहीं सैर की थी या नहीं ?"

"हां।"

"यानी कि तुम्हें कुछ भी याद नहीं ?"

"कुछ तो याद है। काफी कुछ याद आ गया है और याद आ रहा है लेकिन उसका सैर से कोई रिश्ता नहीं।"

"अच्छा !"

"मसलन इतना तो अब मुझे याद है कि मैं यहां आया था और यहां मैंने कई पैग विस्की पी थी। बाहर का टेलीफोन बूथ याद है मुझे। उसके भीतर मौजूद फोन करती एक लड़की भी याद है। बाद में बार से निकलकर मैं कहां गया, याद नहीं। यह भी याद नहीं कि कहीं करीब ही गया था या काफी दूर गया था। दरअसल मैं किसी को ढूंढ रहा था।"

"बम्बई में ! जहां कि तुम पहली बार आए हो ? यहां तुम्हारे वाकिफकार हैं ?"

"नहीं। जिसे मैं ढूंढ रहा था, वह मुझे कल रात ही मिला था। जरूर किसी बार में टकराया था वह मुझसे। बेचारा घायल था या शायद बीमार था या दोनों बातें थीं। अपने पैरों पर खड़ा भी नहीं हो पा रहा था बेचारा। चलता था तो बार-बार उसका सिर उसकी छाती पर आकर गिरता था।"

"वह तुम्हें कहां मिला था ?"

"कहा न किसी बार में। जब वह भी नशे में था तो और कहां मिला होगा ?"

"तुम अभी किन्हीं दो आदमियों का जिक्र कर रहे थे।"

"हां। एक अन्धेरी गली में एक खंडहर इमारत के सामने वे मुझे मिले थे। उनमें से एक ने मुझसे बात की थी और दूसरा चुप रहा था।"

"तुम उनमें से किसी को दोबारा देखो तो पहचान लोगे ?"

"जो मुझसे बोला था, उस पहचान लूंगा।"

"अच्छा !"

"हां।"

रोबीरो ने चैन की सांस ली। उस हाथी जैसे आदमी का दावा कितना गलत था, यह अपने आप ही साबित हुआ जा रहा था।

उसने आवाज देकर मारुतिराव को करीब बुलाया।

"यह मेरा दोस्त मारुतिराव है।" - वह बोला - "और बन्दे को रोबीरो कहते हैं।"

"मैं राहुल हूं।"

"मारुतिराव।" - रोबीरो बड़े अर्थपूर्ण स्वर में बोला - "राहुल बेचारा कल रात नशे में कहीं भटक गया था।

इसे कहीं किसी खंडहर मकान के सामने दो आदमी मिले थे जिनमें से एक को, जिसने कि इससे बात की थी, यह कहता है कि यह शर्तिया पहचान लेगा।"

"यह बात ?" - मारुतिराव बोला।

"हां।" - राहुल ने बड़े दावे के साथ अनुमोदन किया।

मारुतिराव की जान में जान आ गयी।

उसकी अपने पार्टनर से आंखें मिलीं।

उस घड़ी दोनों के जेहन में एक ही ख्याल था।

वह महाशराबी सेलर उन दोनों में से किसी को, उनको क्या किसी को भी, अपने पिछली रात के मुलाकाती के तौर पर हरगिज-हरगिज नहीं पहचान सकता था।

बावजूद इस गारण्टी के कि राहुल उन्हें पहचान नहीं सकता था, रोबीरो ने उसके साथ थोड़ा अरसा और चिपके रहकर उसे थोड़ा और टटोलने का फैसला किया। वह नजदीक ही गोवा स्ट्रीट में स्थित एक होटलनुमा इमारत में रहता था जहां कि राहुल को काफी ना-नुक्कर के बावजूद वह और मारुतिराव उसे ले आए।

वहां रोबीरो ने उसे 'फेनी' और तली हुई मछली पेश की। दोनों ही चीजें राहुल को खास पसन्द थी। नतीजा यह हुआ कि वह वहां ऐसा जमा कि वहीं उसने शाम कर दी।

शराबखोरी के दौरान रोबीरो ने वर्तालाप का रुख कई बार पिछली रात की तरफ मोड़ा, राहुल की वाणी खूब मुखर हुई लेकिन उसने ऐसा कुछ न कहा जोकि वह पहले कई बार नहीं कह चुका था।

जब उन्हें पूरी गारन्टी हो गई कि कम से कम राहुल की वजह से उनकी करतूत पर से पर्दा नहीं हटने वाला था तो शाम छः बजे के करीब उन्होंने महफिल बर्खास्त की और वे नशे में झूमते हुए राहुल को उसके होटल में छोड़ आए।

उस वक्त सड़क पर शाम का अखबार बिक रहा था।

हालांकि उन्हें कतई उम्मीद नहीं थी कि धोते का जिक्र उसमें होगा लेकिन अपनी अपराध भावना के वशीभूत होकर उन्होंने अखबार खरीदा।

अखबार में धोते का जिक्र नहीं था।

"वापिस मैंगलोर स्ट्रीट होकर चलते हैं।" - मारुतिराव बोला।

"काहे को ?" - रोबीरो सकपकाया।

"यूं ही।"

"ठीक है। चलो।"

वे मैंगलोर स्ट्रीट पहुंचे तो खंडहर के कम्पाउन्ड में उन्होंने इलाके के बच्चों को खेलता पाया।

"ये बच्चे" - मारुतिराव चिन्तित स्वर में बोला - "कम्पाउन्ड में क्या कर रहे हैं ?"

"खेल रहे हैं" - रोबीरो बोला - "और क्या कर रहे हैं ?"

"कम्पाउन्ड में खेलते-खेलते ये इमारत के भीतर भी जा सकते हैं। क्या पता जा भी चुके हों।"

रोबीरो कुछ क्षण सोचता रहा और फिर धीरे से बोला - "अगर ये लाश देख चुके होते तो अभी भी ये यहां खेल नहीं रहे होते।"

"रोबीरो, अगर हम चाहते थे कि लाश बहुत देर तक बरामद न हो तो हमें लाश को पिछले कमरे में ही नहीं पड़े रहने देना चाहिए था।"

"तो क्या करना चाहिए था ? उसे कम्पाउन्ड में दफनाना चाहिए था ?"

"कम्पाउन्ड में काहे को ! इमारत के भीतर भी तो इतना मलबा पड़ा है। लाश को हम बड़े आराम से मलबे के नीचे कहीं दफन कर सकते थे। यूं बहुत देर तक तो क्या, शायद लाश कभी भी बरामद न हो।"

रोबीरो फिर सोच मे पड़ गया।

"अभी भी क्या बिगड़ा है" - फिर वह निर्णयात्मक स्वर में बोला - "यह काम हम अब भी कर सकते हैं। आओ।"

"लेकिन बच्चे..."

"वे बच्चे हैं और खेल में मशगूल हैं। इस वक्त उनकी तवज्जो इमारत की तरफ नहीं है।"

दोनों इमारत की तरफ बढे।

"बीट का सिपाही आ रहा है।" - एकाएक मारुतिराव बोला।

"मुड़ो मत" - रोबीरो बोला - "सीधे बढ चलो।"
सिर झुकाए पेड़ों की छांव में वे फुटपाथ पर चलते रहे।
सिपाही अपना डण्डा हिलाता बिना उनकी तरफ तवज्जो दिए उनके पहलू से गुजर गया।
वह मोड़ काट कर निकोल रोड पर पहुंच गया तो वे वापिस लौटे।
वे चुपचाप इमारत में दाखिल हुए।
बच्चों ने उनकी तरफ कतई ध्यान न दिया।
वे पिछवाड़े के कमरे में पहुंचे।
लाश गायब थी।

***

राहुल अपने होटल के कमरे में पहुंचा।

सूरज डूबने के बाद से एक तो वैसे ही तापमान नीचे आ गया था, ऊपर से बहुत ठण्डी हुवा चलने लगी थी। उस घड़ी वह सबसे ज्यादा अपने ओवरकोट को याद रहा था।

पांच घन्टे उसने दो अजनबियों के साथ शराबखोरी में बरबाद किए थे। वे दोनों उसकी कोई भी मदद करने के ख्वाहिशमन्द मालूम होते थे लेकिन उनसे अलग होने के बाद ही उसे सूझा था कि उन्होंने मदद के चर्चे ही किए थे, हकीकतन कोई मदद की नहीं थी। उसके पिछली रात के राही को तलाश करने की दिशा में उन्होंने कोई सक्रिय योगदान नहीं दिया था और खुद वह अभी तक यह स्थापित करने में भी कामयाब नहीं हो सका था कि उसका पिछले रोज का साथी शुरूआत में उसके साथ था, हर वक्त उसके साथ था या सिर्फ अन्त में उसका साथी बना था।

उन दोनों की सोहबत से निजात पा चुकने के बाद अब वह महसूस कर रहा था कि उन्होंने उसकी समस्या को सुलझाया नहीं बल्कि और उलझाया था। उन्होंने बार-बार उसे यही समझाया था कि उसकी तलाश बेमानी थी और उसमें वक्त जाया करना उसकी हिमाकत थी।

अब होटल में पहुंचते ही उसे फिर यह अहसास सताने लगा था कि जो वक्त उसने उन अजनबियों के साथ जाया किया था, वह उसे उस घायल व्यक्ति की तलाश में सर्फ करना चाहिए था जिसे कि अभी भी उसकी मदद दरकार हो सकती थी।

उसने पलंग पर से अपना ओवरकोट उठाया। उसे पहनने से पहले वह एक क्षण ठिठका।

कोट के दायें कन्धे पर और आस्तीन पर उसे कुछ गहरे रंग के धब्बे से दिखाई दिए।

कोट को खिड़की के पास ले जाकर उसने उनका मुआयना किया तो पाया कि वे खून के धब्बे थे।

उसके मानसपटल पर फिर अपने रात के राही का अक्स उभरा।

"मैं तुझे ढूंढ के रहूंगा, मेरे दोस्त।" - वह दृढ स्वर में बोला। उसने अपना ओवरकोट पहन लिया और कमरे से बाहर निकल आया।

बाहर सड़क पर आकर उसने अपने ओवरकोट की जेबों में अपने हाथ धंसाये तो उसके दायें हाथ की उंगलियां जेब में पड़ी एक अपरिचित चीज से टकराई। उसने वह चीज बाहर निकाली तो पाया कि वह एक जनाना पर्स था।

वह अपलक उस पर्स को देखता रहा।

अब उसे कई बातें याद आ रही थीं।

***

"लाश कहां गई ?"

वे प्रिंसेस बार में एक कोने की टेबल पर मौजूद थे। उनका दिन भर का नशा हिरण हो चुका था और उस वक्त दोनों के जहन में एक ही ख्याल हथौड़े की तरह बज रहा था।

लाश कहां गई

बीट का सिपाही लगभग फौरन ही वापिस लौट आया था और बच्चों को घर घर भगाने की नीयत से खंडहर इमारत के कम्पाउन्ड में घुस आया था। तब उन्होंने पिछवाड़े के रास्ते से चुपचाप वहां से कूच कर जाने में ही अपना कल्याण समझा था।

"जरूर लाश बरामद हो गई है।" - मारुतिराव धीरे से बोला।

"नहीं।" - रोबीरो बड़ी गम्भीरता से इन्कार में सिर हिलाता हुआ बोला - "अगर लाश दोपहर से पहले बरामद हुई होती तो उसका जिक्र अखबार में जरूर होता। अगर वह दोपहरबाद बरामद हुई होती तो कम्पाउन्ड में बच्चे न खेल रहे होते और पुलिस अभी भी वहां होती।"

"तो फिर वो मरा नहीं होगा। रात को या सुबह किसी वक्त उसे होश आ गया होगा और वो उठकर वहां से चलता बना होगा।"

"कहां चलता बना होगा ? अगर वह जिन्दा होता तो सीधा थाने पहुंचा होता और हम अब तक हवालात में होते।"

"वह एकदम नहीं मरा होगा।" - मारुतिराव ने नया सुझाव दिया - "जरूर उसकी कोई-कोई सांस बाकी होगी। हमारे चले आने के बाद किसी वक्त उसे होश आया होगा और उसने रेंग कर या चल कर वहां से निकल जाने की कोशिश की होगी।"

"लेकिन कोशिश में नाकाम रहने के बाद वह गायब कहां हो गया ?"

"पिछले कमरे के करीब ही तहखाने को जाती सीढियां हैं। क्या पता वह उन सीढियों से लुढका हो, नीचे तहखाने में जाकर गिरा हो और अभी वहीं पड़ा हो।"

"वहां कोई तहखाना भी है ?"

"हां। तुम्हें नहीं मालूम ?"

"नहीं" - रोबीरो एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "बहरहाल इमारत के गिर्द पुलिस की गैरमौजूदगी की रू में यह एक बात निश्चित है कि वो अभी गायब ही।"

"वह तहखाने में हो सकता है और हो सकता है कि अभी भी जिन्दा हो।"

"जिन्दा हुआ तो क्या होगा ?"

"हमें इस बात की तसदीक करनी चाहिए।"

"ठीक है। रात और हो लेने दो हम फिर वहां चलेंगे।"

***

राहुल ने वर्षा के होस्टल के कमरे का दरवाजा खटखटाया। पर्स में से बरामद हुए पते के सहारे वह भायखला में मिसेज ग्रे के गैस्ट हाउस में पहुंचा था।

दरवाजा खुला।

चौखट पर जो युवती प्रकट हुई, उसे देखते ही राहुल के नेत्र फट पड़े। पलक झपकते उसका सारा नशा काफूर हो गया।

"पूनम !" - वह भौंचक्का-सा बोला।

"पूनम !" - युवती हैरानी से बोली - "कौन पूनम ?"

"तुम यहां ! बम्बई में !"

"मिस्टर, यह क्या बड़बड़ा रहे हो तुम ? किससे मिलना है तुमने ?"

"मिलना तो मुझे डाक्टर वर्षा प्रधान से है लेकिन, पूनम, तुम यहां..."

"यहां कोई पूनम नहीं रहती, मिस्टर। और मैं ही डाक्टर वर्षा प्रधान हूं।"

"तुम" - राहुल मन्त्रमुग्ध-सा बोला - "पूनम नहीं हो ?"

"नहीं। कहा न मेरा नाम वर्षा है।"

"कमाल है। ऐसा कैसे हो सकता है ?"

"क्या कैसे हो सकता है ?"

"दो सूरतों में इतनी समानता।"

"तुम्हारा मतलब है मेरी सूरत किसी पूनम से मिलती है ?"

"मिलती है क्या, हूबहू मिलती है। कहीं कोई फर्क नहीं।"

"पूनम कौन है ?"

"अगर तुम पूनम नहीं हो तो वह है कोई।"

"और तुम कौन हो ?"

"मेरा नाम राहुल है, राहुल रामचन्दानी।"

"मुझे क्यों पूछ रहे थे ?"

राहुल ने ओवरकोट की जेब में से पर्स निकालकर उसकी तरफ बढाया।

"यह तुम्हारा है ?" - वह बोला।

"हां।" - वर्षा ने झपटकर पर्स उसके हाथ से ले लिया - "तुम्हें कहां से मिला यह ?"

"यह तो तुम मुझे बताओ।"
"क्या ?"
"कि यह पर्स मुझे कहां से मिला ?"
"मतलब ?"
"जहां यह पर्स तुमने छोड़ा होगा, वहीं से मैंने इसे उठाया होगा। अगर तुम मुझे बताओगी कि तुमने इसे कहां खोया था तो मुझे मालूम हो जाएगा कि कल रात मैं कहां था।"
"तुम्हें नहीं मालूम कि कल रात तुम कहां थे ?"
"नहीं" - राहुल के स्वर में खेद का पुट था - "दरअसल कल रात मैं नशे में था..."
"नशे में तो तुम अब भी हो।"
"कल रात मैं हद से ज्यादा नशे में था।"
"मुझे तो याद नहीं कि पर्स मैंने कहां गिराया था।"
"ओह !"
राहुल चेहरे पर निराशा का भाव लिए अनिश्चित-सा खड़ा रहा।
"तुम" - उसे प्रस्थान का कोई उपक्रम न करता पाकर वर्षा बोला - "इस पर्स को वापिस लौटाने का कोई ईनाम चाहते हो ?"
"नहीं, नहीं" - राहुल एकदम हड़बड़ा कर बोला - "तुम मुझे गलत समझ रही हो। मैं तो महज...."
"मेरा मतलब उस टैक्सी फेयर से था जो तुमने यहां आने के लिए खर्चा।" - वर्षा ने जल्दी से बात सुधारी।
"नहीं, नहीं। ऐसी कोई बात नहीं।"
"तो फिर तो मैं पर्स लौटाने आने की तुम्हारी जहमत का शुक्रिया ही अदा कर सकती हूं।"
"नैवर माइन्ड दैट।"
"तुम जानना क्यों चाहते हो कि कल रात तुम कहां थे ?"
"यह एक लम्बी कहानी है।"
"प्लीज कम इन।" - एकाएक वर्षा निर्णयात्मक स्वर में बोली और चौखट पर से हट गई।
वर्षा ने बड़े सब्र के साथ सारी कहानी सुनी।
"लगता है" - वह बोली - "कल नशे की हालत में तुम्हारी कल्पनाशक्ति प्रबल हो उठी थी।"
"नहीं।" - राहुल एक-एक शब्द पर जोर देता हुआ बोला - "मैंने कोई सपना नहीं देखा था। मैंने हकीकत बयान की है।"
"तुम उस आदमी को जानते नहीं, तुमने ठीक से उसकी सूरत तक नहीं देखी, तुम्हें यह तक पता नहीं कि वह तुम्हें कहां मिला था लेकिन तुम उसका तलाश कर रहे हो।"
"हां।"
"क्यों ?"
"क्योंकि कल रात मैंने जहां उसे देखा था, वह बेचारा अभी भी वहीं पड़ा हो सकता है। वह बेचारा घायल था।"
"जरूर नशे में गिरकर अपना माथा फोड़ बैठा होगा।"
"कैसे भी सही लेकिन घायल था और चलने-फिरने से लाचार था। हो सकता है अभी भी वह उसी हालत में कहीं पड़ा हो और मेरी मदद का इन्तजार कर रहा हो।"
"अजीब बात है। तुम एक नितान्त अजनबी के लिए हलकान हो रहे हो।"
"हम सभी अजनबी हैं एक-दूसरे के लिये फिर भी हम एक-दूसरे के काम आते हैं। तुम भी तो मेरे लिए अजनबी हो लेकिन मैं तुम्हारा पर्स लौटाने आया हूं।"
"ओह !"
"कल रात हम दो अनजाने, यानी कि तुम और मैं, किसी वक्त एक ही जगह पर थे, उस जगह पर थे जहां कि तुमने अपना पर्स गिराया था और जहां से कि मैंने तुम्हारा पर्स उठाया था। अब अगर तुम यह बताने की जहमत गवारा करो कि कल शाम तुम कहां-कहां गई थीं तो मेरा काम बन सकता है।"
साधारणतया वर्षा अजनबियों से बहुत परहेज करती थी और शराबी आदमी से तो उसे वहशत होती थी। राहुल में दोनों खामियां थीं लेकिन पता नहीं क्या बात थी कि उसे वह आदमी नाकाबिलेबर्दाश्त नहीं लग रहा था।

"सुनो।" - वह बोली - "कल रात कोई सवा ग्यारह बजे मैं मैंगलोर स्ट्रीट में स्थित एक खंडहर इमारत में गयी थी जिसके पिछवाड़े के एक कमरे में मैंने एक आदमी को मुर्दा हालत में पड़े देखा था। तब मैं आतंकित होकर चीख पड़ी थी। मेरा ख्याल है कि मेरा पर्स तभी वहीं उस आदमी के पहलू में कहीं गिरा था। पहले मैं वहां से भाग खड़ी हुई थी लेकिन कुछ क्षण बाद अपने मंगेतर अशोक घटक के साथ मैं वहां वापिस लौटी थी। तब वहां न कोई आदमी था और न मेरा पर्स। अब पर्स की तुम्हारे पास मौजूदगी से मुझे लगाता है कि फर्श पर पड़े वह आदमी तुम थे। मेरी चीख की आवाज से तुम्हारी तन्द्रा टूटी थी, तुम वहां से उठे थे, तुमने मेरा पर्स उठाकर जेब में डाला था और वहां से रवाना हो गए थे।"

"खंडहर मकान!" - राहुल सोचता हुआ बोला - "जिसकी सिर्फ दीवारें खड़ी थीं और तकरीबन छतें गिर चुकी थीं?"

"हां।"

"तुम्हारे ख्याल से उसके पिछले कमरे में मैं बेहोश पड़ा था?"

"हां।"

"मेरा साथी कहां था?"

"वहां और कोई नहीं था। मेरा मतलब है कमरे में तो तुम अकेले थे लेकिन वैसे तुम्हारे साथ दो आदमी थे।"

"दो आदमी!" - राहुल और भी उलझ गया।

"हां। मेरे सामने दो आदमी पिछवाड़े से निकलकर सामने के रास्ते से इमारत से बाहर गए थे।"

"उनमें से कोई घायल था या बीमार था या किसी सहारे का तलबगार था?"

"नहीं। वे दोनों तो एकदम चौकस थे।"

"तो फिर मेरा साथी उनमें नहीं था। वह जरूर मेरे वहां पहुंचने से पहले ही मुझसे बिछुड़ चुका था।"

वर्षा खामोश रही।

"हो सकता है उस खंडहर इमारत को देखकर मुझे बहुत-सी भूली बातें याद आ जाएं।"

"इमारत मैंगलोर स्ट्रीट में है। वहां तक तुम्हें कोई भी टैक्सी वाला ले जाएगा।"

"अगर तुम चलकर मुझे यह बता सकतीं कि तुमने इमारत में मुझे कहां पड़े देखा था तो...."

"सॉरी। यह मुमकिन नहीं। मैंने अपने मंगेतर के साथ डिनर पर जाना है। अभी थोड़ी देर में वह मुझे लेने आने वाले हैं।"

"ओह!" - राहुल ने एक गहरी सांस ली और उठता हुआ बोला - "ठीक है मैं खुद ही जाकर देखता हूं उस खंडहर मकान को।"

वर्षा दरवाजे तक उसके साथ आई।

"पर्स लौटाने आने का शुक्रिया।" - वह बोली।

राहुल केवल मुस्कराया।

इतने विशाल आदमी के चेहरे पर वह बच्चों जैसी मुस्कराहट वर्षा को बहुत अच्छी लगी।

"यह पूनम" - वह बोली - "शक्ल में जिसकी तुम्हें मैं डुप्लीकेट लगी थी, तुम्हारी कोई सगेवाली है?"

राहुल ने बड़े अवसादपूर्ण ढंग से इन्कार में सिर हिलाया।

"थी?"

"हो सकती थी लेकिन हुई नहीं।"

"क्यों?"

"क्योंकि बतौर पति मेरी कल्पना करने से उसे दहशत होती थी। हाथी और हिरणी की जोड़ी कहीं जंचती है?"

"ऐसा उसने कहा था?"

"हां।"

"कहां रहती है वो?"

"लन्दन में। साउथहाल में।"

"तुम उस से प्यार करते थे?"

"बहुत ज्यादा। ऐसा जैसा कभी किसी ने किसी से न किया होगा।"

"वो लड़की..."

"छोड़ो। उसके जिक्र से भी मेरे दिल के जख्म हरे हो जाते हैं। पहले ही तुम्हारी सूरत देखकर कलेजा मुंह को

आने लगा था।"

"उसे तुमसे यह इकलौती शिकायत थी कि तुम... तुम..."

"हां। वही जो तुम सोच रही हो लेकिन और कुछ न पूछो। यह एक ऐसी कहानी है जो खुद अपने कलेजे में नश्तर उतारे बिना सुनाई नहीं जा सकती। बहुत लम्बी कहानी है यह जिसे सुनने के लिए तुम्हारे पास वक्त नहीं, तुम्हारा मंगेतर जो आने वाला है तुम्हें डिनर पर ले जाने के लिए।"

"तुम्हारे पास तो वक्त है न सुनाने के लिए !" - वर्षा तनिक उपहासपूर्ण स्वर में बोली।

"हां" - राहुल के मुंह से आह निकल गई - "मेरे पास तो वक्त ही वक्त है।"

वर्षा खामोश रही।

राहुल भारी कदमों से चलता हुआ वहां से विदा हो गया।

***

"पिछवाड़े के रास्ते से चलो" - रोबीरो बोला - "सामने से कोई न कोई आ जाता है। वह सिपाही भी क्या पता अभी भी यहीं कहीं घूम रहा हो।"

मारुतिराव ने खामोशी से हामी भरी।

वे पिछवाड़े में पहुंचे।

पिछवाड़े से इमारत और भी खस्ताहाल लगती थी। उधर दीवारों में इतनी बड़ी-बड़ी दरारें दिखाई दे रही थीं कि यही करिश्मा लगता था कि इमारत अभी भी अपनी बुनियाद पर खड़ी थी।

मारुतिराव इमारत में वापिस जाने का कतई ख्वाहिशमन्द नहीं था लेकिन रोबीरो से ऐसा कहने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी। रह-रहकर उसकी आंखों के सामने रोबीरो के लोहे के डण्डे की मार से नीचे सुबकते हुए धराशायी होते जनकराज धोते की दयनीय सूरत घूम जाती थी और उसे आगे बढते अपने पांव मन- मन के महसूस होने लगते थे।

इमारत में दाखिल होने से पहले उन्होंने पिछवाड़े के कम्पाउण्ड का मुआयना किया।

धोते वहां न हो सकता था और न था।

फिर वे इमारत की तरफ बढे।

अभी वे पिछले दरवाजे से दूर ही थे कि मारुतिराव एकाएक ठिठककर खड़ा हो गया।

"क्या हुआ ?" - रोबीरो बोला।

"तूने सुनी ?" - मारुतिराव फुसफुसाया।

"क्या ?"

"भीतर से आती आहट !"

"भीतर से !" - रोबीरो अचकचाया - "भीतर से कहां से ?"

"इमारत में से कहीं से।"

"मैंने तो ऐसी कोई आवाज नहीं सुनी।"

"मैंने साफ सुनी थी।"

"तुम्हें वहम हुआ होगा।"

"हां।" - मारुतिराव आश्वासनरहित स्वर में बोला - "शायद।"

"चल।"

वे दोबारा अभी दो ही कदम आगे बढे थे कि मारुतिराव फिर ठिठक गया। इस बार उसने रोबीरो को उसकी बांह पकड़ कर वापिस खींच लिया।

"देख !" - वह आतंकित भाव से फुसफुसाया।

"क्या देखूं ?"

"वो खिड़की..."

"क्या हुआ है उसे ?"

"गौर से देख। गौर से।"

रोबीरो आंखें फाड़- फाड़कर उधर देखने लगा। उसकी आंखें अन्धेरे की अभ्यस्त हुई तो उसे एक खिड़की के शीशों पर एक मानव शरीर की परछाई पड़ती दिखाई दी। उसके देखते-देखते वह परछाईं एक खिड़की पर लुप्त हुई और दूसरी पर प्रकट हुई।

"भीतर धोते घूम रहा है ।" - मारुतिराव दान्त पीस कर बोला ।

"डांस कर रहा है तेरा बाप भीतर ।" - रोबीरो दान्त पीस कर बोला - "साला, अहमक । अबे मुर्दे भी कहीं उठ-उठके चलते हैं !"

"तो भीतर कौन है ?"

"जो कोई भी है, वो धोते नहीं हो सकता ।"

"क्या पता वह अभी होश में आया हो और तहखाने से निकलकर अभी ऊपर आया हो ।"

"वह सारा दिन बेहोश नहीं पड़ा रहा हो सकता । अब तो चौबीस घण्टे होने को आ रहे हैं । जो आदमी जिन्दा बच गया हो, वह होश में आने में ही इतना टाइम लगाता है !"

तभी साया खिड़की पर से गायब हो गया ।

"कौन होगा ?"

"चुपचाप खड़ा रहा । बाहर निकलेगा तो पता लग जाएगा ।"

थोड़ी देर बाद पहली मंजिल की एक खिड़की में जुगनू-सा चमका ।

एक बात स्पष्ट थी । कोई किसी मद्धम- सी रोशनी के सहारे सारी इमारत में विचर रहा था ।

"मुझे डर लग रहा है !" - मारुतिराव कम्पित स्वर में बोला ।

"चुप !" - रोबीरो घुड़ककर बोला ।

"मैं जा रहा हूं यहां से ।"

"खबरदार !"

रोशनी अब एक टूटी दीवार के पीछे सीढियों पर चमकी ।

"वो नीचे आ रहा है" - रोबीरो फुसफसाया - "बाहर चल ।"

दोनों दबे पांव बाहर को बढ चले ।

***

राहुल के पास एक मामूली सिगरेट लाइटर था जिसकी रोशनी उससे मुश्किल से तीन या चार फुट दूर तक ही पहुंच पाती थी । उसी मद्धम रोशनी के सहारे वह आंखें फाड़-फाड़कर खण्डहर इमारत के भीतर का मुआयना करता फिर रहा था ।

बन्दरगाह के इलाके में मैंगलोर स्ट्रीट और फिर मैंगलोर स्ट्रीट में वह इकलौती ध्वस्त इमारत तलाश करने में उसे कोई दिक्कत नहीं हुई थी ।

इमारत के सामने दरवाजे से वह भीतर दाखिल हुआ था और उसके गलियारे में कदम रखते ही उसे अनुभव होने लगा था कि वह वहां पहले भी आ चुका था । हाल में कदम रखने से भी पहले उसे अनुभव हो रहा था कि विशाल हाल के पृष्ठ भाग में वैसा ही एक गलियारा और था जिसके पृष्ठ भाग में एक इकलौती लेकिन अतिविशाल खिड़की वाला एक कमरा था ।

वह कमरा खाली था ।

बड़े सब्र के साथ ध्वस्त इमारत में जहां-जहां कदम रखना सुरक्षित था, वहां वह फिरने लगा ।

पहली मंजिल पर एक बड़ा कमरा था जिसकी छत गायब थी लेकिन जिसका लकड़ी का फर्श कहीं-कहीं से सलामत था । उस फर्श पर पांव रखने का उसका हौसला न हुआ । उसके शरीर के भार से बचा-खुचा लकड़ी का फर्श टूट सकता था और साथ ही वह भी नीचे गिरकर अपने हाथ-पांव तुड़वा सकता था या जान से हाथ धो सकता था । बहरहाल उसे तसल्ली थी कि उसका पिछली रात का साथी वहां नहीं हो सकता था । सीढियां चढने जितना होश अगर उसे था तो उसे यह भी दिखाई दिए बिना नहीं रह सकता था कि उस कमरे का लकड़ी का फर्श कमजोर और क्षतिग्रस्त था ।

वह अब भी महसूस कर रहा था कि अगर लड़की थोड़ी देर के लिए उसके साथ वहां चली आती तो उसका बेहतर मार्ग-निर्देशन हो सकता था ।

एक बार फिर वह पिछवाड़े में पहुंचा ।

ऐन उसी समय पिछवाड़े के रास्ते से रोबीरो और मारुतिराव बाहर गली में कदम रख रहे थे । राहुल का सारा ध्यान अगर अपने लाइटर की रोशनी के सीमित दायरे में ही न केन्द्रित होता तो उसने बड़ी सहूलियत से उन दोनों को देख लिया होता ।

***

डिनर के लिए अशोक वर्षा को ताजमहल होटल ले जाने वाला था।
रास्ते में कार में वर्षा ने उसे अपने पर्स की वापिसी की दास्तान सुनाई।
"कमाल है।" - अशोक बोला - "उसकी किसी गर्ल फ्रेंड की शक्ल तुम्हारे से मिलती थी।"
"बकौल उसके, हूबहू मिलती थी!"
"देखने में कैसा था वो?"
"बड़ा अच्छा, खूबसूरत, खानदानी लेकिन इतना विशाल जैसे किसी आम आदमी को मैग्नीफाईंग ग्लास में से देखा जा रहा हो।"
"इतने गुण लेकिन बोतल का इतना रसिया कि टुन्न होकर वह भूल जाता था कि वह कहां पड़ा था!"
"लगता था जैसे बेचारा कोई गम गलत करने के लिए पीता हो। मुझे तो रहम आ रहा था उस पर।"
"उम्र क्या रही होगी उसकी?"
"यही कोई सत्ताइस-अट्ठाइस साल।"
"रहता कहां है? करता क्या है?"
"यह सब तो मैंने पूछा नहीं। पूनम नाम की जिस लड़की की जिक्र कर रहा था, उसे तो वह लन्दन में रहती बता रहा था" - वह एक क्षण ठिठकी और बोली - "अशोक, वह नेवी के आदिमयों जैसी वर्दी पहने था। उसकी पीक कैप भी नेवी जैसी थी।"
"उसे विश्वास हो गया था कि उसी को तुमने खंडहर इमारत में फर्श पर अचेत पड़ा देखा था?"
"शायद नहीं हुआ था। हो गया होता तो फिर कहानी ही खत्म हो जाती। फिर तो यह लगता कि कोई दूसरा आदमी उसके साथ था ही नहीं। जबकि फिक्रमन्द वह उस कथित दूसरे आदमी के लिए ही था।"
"क्यों?"
"क्योंकि वह बीमार था या घायल था और या दोनों बातें थी और उसे किसी की मदद की जरूरत थी।"
"ओह!"
"वह चाहता था कि मैं उसके साथ खंडहर इमारत तक चलूं और उसे बताऊं कि इमारत में मैंने उसे कहां पड़े देखा था।"
"तुम्हें चले जाना चाहिए था।"
"कैसे चली जाती?" - वह आहत भाव से बोली - "तुम जो आने वाले थे। ऊपर से मैं एक नितान्त अजनबी के साथ यूं घर से चली जाती तो बाद में तुम ही खफा होते और कहते कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।"
"अगर तुमने उसका कोई अतापता पूछा होता तो हम अब उसके पास जा सकते थे।"
"मुझे क्या जरूरत पड़ी थी उसका अतापता पूछने की!"
"आखिर वह बेचारा तुम्हारा पर्स लौटाने आया था।"
वह खामोश रही।
"जो शख्स आपके काम आये, आपको भी उसके काम आना चाहिए।"
"अब क्या मैं उसे सारी बम्बई में ढूंढने निकलूं?"
"फिलहाल सारी बम्बई में ढूंढने की जरूरत नहीं।"
"मतलब?"
"जहां वह तुम्हें साथ ले जाना चाहता था, वहां वह अकेला गया हो सकता है।"
"कहां?"
"मैंगलोर स्ट्रीट की खंडहर इमारत में।"

***

लाइटर की मद्धम रोशनी के सहारे राहुल ने तहखाने में कदम रखा। तहखाना सीलन और दुर्गन्धभरा था और पता नहीं कब से किसी इंसान के बच्चे के वहां कदम नहीं पड़े थे। उसकी तलाश बेमानी थी लेकिन अब, क्योंकि वह बाकी की सारी इमारत में घूम चुका था, उसने वहां का भी चक्कर लगा लेना जरूरी समझा था।
वह वापिस सीढियों की तरफ बढा।
उसने पहली सीढी पर कदम रखा ही था कि एकाएक वह वहीं ठिठक गया।
ऊपर से किसी के चलने की आवाजें आ रही थीं।
वह कान लगाकर सुनने लगा।

उसने महसूस किया कि एक आवाज भारी जूतों की थी और दूसरी सैंडिल की ठक-ठक की थी।
"यहां तो कोई भी नहीं है।" - कोई बोला - "पता नहीं वह यहां आया ही नहीं या आकर चला गया।"
उत्तर में एक स्त्री स्वर ने कुछ कहा जिसे राहुल समझ न सका।
"हो सकता है।" - पुरुष बोला - "हो सकता है वह हमारी आहट पाकर कहीं छुप गया हो। मैं आवाज लगाती हूं।"
एक क्षण खामोशी।
"मिस्टर राहुल ! मिस्टर राहुल रामचन्दानी ! ...राहुल साहब..."

***

"वह बाहर क्यों नहीं निकल रहा ?" - मारुतिराव दबे स्वर में बोला।
"कभी तो निकलेगा।" - रोबीरो बोला।
"वह इसलिए बाहर नहीं निकल रहा क्योंकि वह धोते है। जरूर अभी वह इतना ही दमखम जमा कर पाया है कि तहखाने से निकलकर ऊपर आ सके।"
"अबे, साले।" - रोबीरो फुंफकारा - "अगर वह धोते है तो पहली मंजिल पर वह अपनी ऐसी-तैसी कराने गया था ?"
"लेकिन..."
"बकवास बन्द। एक बार कह दिया, हजार बार कह दिया, वह धोते नहीं हो सकता। धोते मर चुका है। उसकी लाश उठकर चल फिर नहीं सकती। लाश तहखाने में गिर गयी होने की तुम्हारी बात मैं मान सकता हूं। बस। इसके अलावा और कुछ नहीं।"
मारुतिराव खामोश रहा। उसने बेचैनी से पहलू बदला।
"हम अहमक हैं।" - एकाएक रोबीरो बोला।
"क- क्या ?" - मारुतिराव हड़बड़ाया।
"हम दो जने हैं और दोनों पिछवाड़े में खड़े हैं। मारुतिराव, तुम यहीं रहना, मैं सामने सड़क पर जा रहा हूं।"
"ल.. लेकिन... मैं यहां अकेला..."
"बकवास बन्द। आंखें खुली रखना। बहुत ही जरूरी समझो तो दौड़कर मेरे पास आ जाना। समझे ?"
मारुतिराव ने बड़े अनिच्छापूर्ण ढंग से सहमति में सिर हिलाया।

***

सामनी सड़क पिछली गली की तरह अन्धेरी नहीं थी।
मोड़ पर पहुंचते ही रोबीरो ठिठक गया।
खंडहर इमारत के टूटे फाटक के ऐन सामने एक सफेद मारुति कार खड़ी थी।
वह हिम्मत करके कार के करीब पहुंचा।
कार खाली थी।
उसने इमारत के भीतर की तरफ निगाह दौड़ाई।
भीतर कहीं एक जुगनू सा चमक रहा था।
हिम्मत करके वह भीतर दाखिल हुआ। वह दबे पांव बरामदे में पहुंचा। सावधानी से उसने भीतर झांका। भीतर एक युवक और युवती मौजूद थे। युवक के हाथ में माचिस की एक जलती हुई तीली थी जिसकी रोशनी युवती के सुन्दर, गोरे, चेहरे पर पड़ रही थी।
तभी तीली बुझ गई।
रोबीरो की जान में जान आयी। उसकी निगाह में रहस्य हल हो गया था। भीतर मौजमस्ती मारने के लिए तनहाई का तलबगार एक नौजवान जोड़ा मौजूद था। रोबीरो जानता था कि ऐसे जोड़े रात के अन्धेरे में वहां आते रहते थे।
मारुतिराव साला खामख्वाह बात का बतंगड़ बना रहा था।
वह चुपचाप वापिस लौट पड़ा।

***

राहुल ने अपने नाम की पुकार का जवाब दिया और जल्दी से तहखाने से निकलकर ऊपर पहुंचा।
"यही है वो।" - वर्षा ने दबे स्वर में अशोक को बताया।

"तुम यहां !" - राहुल तनिक हैरानी से बोला ।

"हां ।" - वर्षा बोली - "हम तुम्हारी ही तलाश में यहां आये थे । यह अशोक है, मेरा मंगेतर, जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था । अशोक का कहना है कि तुम्हारे अनुरोध पर मुझे तुम्हारे साथ यहां आना चाहिए था ।"

"ओह !" - राहुल ने अशोक का अभिवादन किया और फिर वर्षा से बोला - "सो नाइस आफ यू टु हैव कम ।"

"कोई बात बनी ?" - अशोक ने पूछा ।

"न !" - राहुल इनकार में सिर हिलाता हुआ बोला ।

"मैंने तुम्हें यहां" - वर्षा ने एक जगह की तरफ इशारा किया - "यहां पड़े देखा था ।"

"हैरानी है ।" - राहुल बोला - "कि ऐसी बेहूदा, सर्द जगह पर मैं दीन-दुनिया से बेखबर पड़ा रहा ।"

"मेरा पर्स जरूर यहीं गिरा था । अब बाद में अगर तुमने उसे अपने ओवरकोट की जेब में से बरामद किया था तो निश्चय ही तुम यहीं थे ।"

"अकेला !"

"जब मैंने तुम्हें देखा था, तब तो तुम अकेले ही थे । अलबत्ता दो जने उसी वक्त यहां से निकलकर बाहर गये थे ।"

"कमाल है !"

"यहां से तो निकलो" - एकाएक अशोक बोला - "अब यहां खड़े रहने का क्या फायदा ?"

तीनों बाहर की तरफ बढे ।

"मिस्टर राहुल" - बाहर आकर अशोक बोला - "अब अपने साथी की तलाश का ख्याल छोड़ दो । कल रात तुम्हारे साथ कोई नहीं था । जरूर नशे में तुमने कोई सपना देखा था ।"

"पिछले कमरे में खून के निशान थे, मेरे ओवरकोट पर भी खून के निशान हैं" - राहुल बुदबुदाया - "जबकि मेरा तो कहीं से खून नहीं बहा ।"

"वह खून किसी जानवर का भी हो सकता था ।"

"नहीं ।" - राहुल दृढ स्वर में बोला - "मेरे साथ कोई था । वो घायल था । उसका माथा फूटा हुआ था । आदमी कोई धुआं नहीं होता जो चुटकियों में गायब हो जाये । कल रात कोई मेरे साथ था और मैं उसे ढूंढकर रहूंगा ।"

"यहां तो कोई नहीं है ।"

"हां, यहां तो कोई नहीं है । यहां का तो अभी मैंने चप्पा-चप्पा छाना है । यहां कोई होता तो ही नहीं सकता था कि वह मुझे दिखाई न देता ।"

अशोक ने असहाय भाव से गरदन हिलाई ।

"जैसे मैडम की दुआ से मुझे यह मालूम हुआ है कि मैं कल रात यहां था ।" - राहुल बोला - "वैसे ही अगर मुझे यह मालूम हो जाये कि यहां से निकलने और अपने होटल पहुचने के बीच मैं कहां-कहां गया था तो मेरा ख्याल है कि वह मिस्ट्री हल हो सकती है ।"

"इस मिस्ट्री का यही हल है" - अशोक बोला - "कि कल रात तुम्हारे साथ कोई नहीं था ।"

"सॉरी । आई कैन नाट असैप्ट दैट ।"

"ओके ।" - एकाएक अशोक निर्णयात्मक स्वर में बोला - "यहां से चलो । हम ढुंढवाते हैं तुम्हारा आदमी ।"

***

मारुतिराव को साथ लेकर रोबीरो जिस वक्त गली के दहाने पर पहुंचा, ऐन उसी वक्त अशोक की कार निकोल रोड से गुजरी ।

"यह वही कार है ।" - रोबीरो जल्दी से बोला - "जिसके बारे में मैंने अभी तुझे बताया था ।"

"ये तीन कैसे हो गये ?" - मारुतिराव बोला - "तू तो कह रहा था कि भीतर बस एक नौजवान जोड़ा था ।"

रोबीरो ने जवाब न दिया ।

"रोबीरो" - मारुतिराव एकाएक घबराकर बोला - "वह धोते था ।"

"कौन धोते था ?"

"जो उस कार की पिछली सीट पर बैठा था ।"

"तूने उसकी सूरत देखी थी ?"

"नहीं, लेकिन वह धोते के सिवाय और कोई नहीं हो सकता था । तूने लड़के-लड़की को इमारत के भीतर देखा और वापिस लौट आया, तू अगर थोड़ी देर और रुका होता तो तूने जरूर देखा होता कि वे धोते से टकरा गये थे । इसी

वजह से उनके मौजमेले के प्रोग्राम में विघ्न पड़ गया है।"

"अगर वह धाते है तो वह उनके साथ कहां जा रहा है ?"

"वो नहीं जा रहा, उसे ले जाया जा रहा है।"

"कहां ?"

"हस्पताल।"

"मारुतिराव" - रोबीरो दांत पीस कर बोला - "साले, हलकट ! तू खामखाह मुझे फिक्र में डाल रहा है। अबे साले, वह धोते नहीं हो सकता। धोते मर चुका है।"

"तो उसकी लाश कहां गयी ?"

"हम तहखाना देखने आये थे जो कि हम अभी तक नहीं देख पाये। लाश, जैसा कि तू ही कह रहा था, तहखाने में ही होगी।"

"अब नहीं होगी। अब धोते गया उस सफेद कार में।"

"अबे, वो धोते नहीं था।"

"तो कौन था ?"

"होगा कोई उनका यार-दोस्त।"

"जो उन्हें खंडहर इमारत में मिला होगा ?" - मारुतिराव तनिक व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला।

रोबीरो खामोश रहा। उसके चेहरे पर उलझन और परेशानी के स्पष्ट भाव थे।

"हम इस कार का पीछा भी तो नहीं कर सकते।" - वह बड़बड़ाया - "आसपास कोई सवारी भी तो नहीं। पीछे जा पाते तो खट पता लग जाता कि उनके साथ कार में कौन था !"

"वह धोते था।"

"सान्ता मारिया !" - रोबीरो असहाय भाव से बोला।

"वह धोते था।" - मारुतिराव ने फिर तोते की तरह रट दिया।

"मारुतिराव ! हरामजादे ! यह धोते- धोते की रट बन्द कर दे वरना मैं या तेरा सिर फोड़ दूंगा या अपना सिर फोड़ लूंगा।"

मारुतिराव सहमकर चुप हो गया।

"चल अब।"

"कहां ?"

"इमारत में, और कहां ! तहखाना देखने।"

***

अशोक ने कार रोकी।

"यह वो डॉक है" - वह सामने इशारा करता हुआ राहुल से सम्बेधित हुआ - "जहां तुम्हारा जहाज खड़ा है। उस सामने गेट से तुम बाहर निकले थे। अकेले।"

राहुल ने सहमति में सिर हिलाया।

"प्रिंसेस बार का तो अब हमें पता है कि तुम वहां गए थे..."

"मै ग्राहम रोड के एक बार में भी आ गया था, लेकिन मेरा वहां मन नहीं लगा था।"

"ग्राहम रोड डिमेलो रोड के रास्ते में आती है। हम यहां से लेकर डिमेलो रोड तक के हर बार में चलते हैं और फिर देखते है कि किसी जगह को देखकर तुम्हें कुछ याद आता है या नहीं। ऐसे ही मालूम होगा कि तुमने पिछली रात के राही को कहां से पिक किया था।"

"प्रिंसेस बार का बारमैन कहता था कि मैं वहां अकेला आया था।"

"तुम्हारी साथी की तरफ तवज्जो नहीं गयी थी या तुम्हारा साथी प्रिंसेस बार में तुम्हारे साथ दाखिल होने के बाद थोड़ी देर के लिए तुमसे बिछुड़ गया था।"

राहुल ने हिचकिचाते हुए सहमति में सिर हिलाया।

"इस रहस्य से पर्दा उठाने का यही तरीका है, दोस्त" - अशोक बोला - "कि हर उस जगह की खाक छानी जाए जहां कि पिछली रात तुम गए थे।"

"आप लोग मेरी वजह से खामखाह जहमत उठा रहे हैं।"

"कोई जहमत नहीं। सच पूछो तो अब तो हमें भी एक अनोखी एडवेन्चर का मजा आ रहा है। क्यों वर्षा ?"

वर्षा ने सहमति में सिर हिलाया। वह अशोक पर हैरान थी। वह इस बात का जिक्र तक नहीं कर रहा था कि घर से वे डिनर के लिए निकले थे।

***

इमारत में, तहखाने में या कहीं और, लाश नहीं थी।

"अब क्या कहता है ?" - मारुतिराव बोला - "कहां गयी लाश ?"

"यहां से निकल।" - रोबीरो बोला।

"लाश" - मारुतिराव उसके साथ-साथ बाहर को चलता हुआ बोला - "सफेद कार में उस नौजवान जोड़ी के साथ गयी।"

इस बार रोबीरो ने उसका विरोध नहीं किया।

चुपचाप चलते हुए दोनों ने मैंगलोर स्ट्रीट पार की और प्रिंसेस बार में पहुंचे।

वेटर को ड्रिंक लाने का इशारा करते हुए वे एक खाली मेज पर जा बैठे।

तभी एक व्यक्ति वहां पहुंचा।

वह कोई पचास साल का, खिचड़ी दाढी वाला, सूरत से ही काईंया लगने वाला, आदमी था। वे दोनों उसे पहचानते थे। उसका नाम चम्पकलाल था, वह 'कम्पनी' का आदमी था और उसका ओहदा 'कम्पनी' के प्यादों और मटका एजेन्टों से तनिक ऊंचा था।

"कैसे हो, गोवानी भाई ?" - चम्पकलाल बोला।

"बढिया।" - रोबीरो बोला - "तुम सुनाओ।"

"तुम कैसे हो, मारुतिराव ?"

"अच्छा हूं।" - मारुतिराव बोला।

"आज किस फिराक में हो तुम दोनों ? बार में आते हो, जाते हो, आते हो, जाते हो, लेकिन टिकते नहीं हो।"

"अब टिके हुए हैं।" - रोबीरो बोला - "तुम्हें हमसे कोई काम है ?"

"कोई खास काम तो नहीं है।" - चम्पकलाल लापरवाही से बोला - "यूं ही एक बात पूछनी थी। और लोगों से भी पूछी थी, सोचा तुमसे भी पूछूं, शायद तुम्हें कुछ मालूम हो।"

"क्या ? क्या मालूम हो ?"

"धोते कहां है ?"

"धोते !"

"जनकराज धोते। जानते हो न उसे ?"

"खूब अच्छी तरह से।"

"मुझे उससे काम है और वह मिल नहीं रहा। दोपहर से ढूंढ रहा हूं।"

"हम खुद उसे ढूंढ रहे हैं।" - रोबीरो अविचलित स्वर में बोला।

मारुतिराव का सांस सूखने लगा। उसे लगा कि रोबीरो चम्पकलाल को लाश की तलाश की बाबत बताने लगा था।

"अच्छा !" - चम्पकलाल बोला - "तुम किसलिए ढूंढ रहे हो ?"

"मटका लगाने के लिए।" - रोबीरो बोला - "और किसलिए ?"

"ओह !"

तभी वेटर ड्रिंक ले आया।

रोबीरो ने चम्पकलाल को ड्रिंक आफर किया तो वह बोला - "नहीं, नहीं, अभी नहीं, अभी मुझे काम है। मुझे हर हाल में धोते का कोई अतापता मालूम करना है ! बन्दरगाह के सारे इलाके में पूछताछ करनी होगी। पता नहीं कहां मर गया कम्बख्त !"

"आज सुबह तो वह यहां था।" - एकाएक वेटर बोला।

"नहीं हो सकता।" - मारुतिराव के मुंह से निकल गया, फिर वह घबराकर अपनी जुबान काटने लगा।

"तो मुझे गलती लगी होगी। जरूर कल सुबह रहा होगा वह यहां।"

वेटर चला गया।

चम्पकलाल कुछ क्षण अपलक मारुतिराव को देखता रहा और फिर बोला - "मारुतिराव, तुमने गारन्टी से कैसे कहा कि आज सुबह वह यहां नहीं हो सकता था ?"

"क्योंकि" - रोबीरो मारुतिराव से पहले बोल पड़ा - "हम सुबह से ही उसको तलाश कर रहे थे। अगर वह यहां होता तो हमें मिला होता।"

"तुम सुबह से ही क्यों उसको तलाश कर रहे थे ?"

"कल के दांव का माल भी तो हासिल करना था उससे।"

"कल तुम्हारे नम्बर लगा था ?"

"हां ! तभी तो हम उसे सुबह से ही तलाश करने लगे थे।"

"कौन-सा नम्बर लगाया था ? सिंगल या डबल ?"

रोबीरो ने मारूतिराव की तरफ देखा।

"डबल।" - मारूतिराव जल्दी से बोला। ऐसी बातों का वो ज्यादा पता रखता था।

"क्या नम्बर निकला था ?"

"छियालीस।"

"कितना रोकड़ा लगाया था ?"

"बीस। बीस रुपया।"

"और तुमने ?" - उसने रोबीरो से पूछा।

"वही बीस।" - रोबीरो बोला - "हम दोनों मिलकर मटका लगाते हैं।"

"ओह !" - चम्पकलाल उठा खड़ा हुआ - "मैं चलता हूं लेकिन तुम घबराओ नहीं। धोते मिले न मिले, तुम्हारी जीत का पैसा तुम्हें जरूर मिलेगा।"

"कब मिलेगा ?"

"कल। कल धोते की जगह कोई दूसरा मटका एजेन्ट लगा दिया जायेगा।"

"शुक्रिया !"

चम्पकलाल चला गया तो दोनों यूं अपने-अपने जाम पर झपटे जैसे बरसों के प्यासे हों।

रोबीरो ने फौरन नये जाम का आर्डर दिया।

"जुबान पर काबू नहीं रख सकता न !" - फिर रोबीरो दबे स्वर में फुंफकारा।

"तू रख सकता है ?" - मारूतिराव जो साधारणतया रोबीरो से दबता था और उसका अदब करता था, गुस्से में बोला - "नम्बर लगाया था वह तो कहा, यह क्यों कहा कि नम्बर निकला भी था ?"

रोबीरो बड़बड़ाया।

"निकला हुआ नम्बर इत्तफाकन मुझे याद न होता तो क्या होता ? फिर तभी सब पोल पट्टी खुल जाती। तेरी झूठ पकड़ा जाने के बाद एक बार चम्पकलाल को शक हो जाता तो..."

"अच्छा, अच्छा !"

"क्या अच्छा, अच्छा ? मेरी चूक पर तो मुझे खाने को दौड़ रहा था, अपनी गलती को 'अच्छा अच्छा' कह कर रफा-दफा कर रहा है ?"

"मारूतिराव, खुदा के वास्ते अब चुप हो जा और मुझे कुछ सोचने दे।"

भुनभुनाता हुआ मारूतिराव खामोश हो गया।

जब दूसरा जाम भी खाली हो गया तो रोबीरो बोला - "कमाठीपुरे में एक रेस्टोरेन्ट है। मधुमहल।"

"तो ?" - मारूतिराव तनिक सकपका कर बोला।

"वहां कैब्रे डांस होता है। कैब्रे डांसरों में एक लिली नाम की छोकरी है जो धोते की माशूक है।"

"उस रेत के बोरे की ?"

"हां ! धोते उससे तकरीबन रोज मिलता है और कई बार रात को उसके साथ उसके घर में ही रहता है।"

"तो क्या हुआ ? उस लड़की को याद करने का यह कौन-सा वक्त है ?"

"बताता हूं। देख, मैं तो नहीं मानता कि धोते जिन्दा होगा। एक मिनट के लिए तेरी रट को मद्देनजर रखते हुए जान ले कि मैंने कबूल किया कि मेरे वार से धोते मरा नहीं थी। वह खुद उठकर इमारत में से निकल गया या उसे वहां से कोई ले गया, यह एक जुदा मसला है लेकिन अगर वह जिन्दा है तो भी अपनी भीषण घायलावस्था में उसे किसी की मदद की जरूरत तो रही होगी। रही होगी कि नहीं ?"

"रही होगी।"

"मारूतिराव, उसका ऐसा मददगार अक्खी बम्बई में मुझे एक ही दिखाई देता है।"

"वह कैब्रे डांसर छोकरी लिली ?"
"हां।"
"लेकिन अगर वह बुरी तरह से घायल होगा तो अस्पताल में होगा।"
"तो भी उसने लिली को जरूर याद किया होगा, जरूर तलब किया होगा।"
"हो सकता है वह अभी भी बेहोश हो।"
"साले ! चित भी तेरी पट भी तेरी। है ? अभी तो तू कह रहा था कि वह उठकर चल दिया होगा था और अब तू बता रहा है कि हादसे के चौबीस घन्टे बाद भी वह बेहोश पड़ा होगा।"
मारूतिराव खामोश रहा।
"हमें उस लड़की से मिलना चाहिए।" - रोबीरो बोला।
"कब ?"
"फौरन ! अभी !"
"कहां ?"
"मधुमहल में। वहां कैब्रे एक बजे तक चलता है। इस वक्त वहीं होगी।"
मारूतिराव ने हिचकिचाते हुए सहमति में सिर हिला दिया।
"अगर वह जिन्दा है" - रोबीरो बोला - "तो इससे पहले कि वह किसी के आगे हमारी बाबत अपनी जुबान खोल सके, हमें उसे मुर्दा बनाना है। उसकी जिन्दगी हमारे लिए मौत बन सकती है इसलिए यह काम हमने जल्द से जल्द करना है। समझा ?"
मारुतिराव ने फिर सहमति में सिर हिलाया।

***

इलाके के छः बार घुम चुकने के बाद वे प्रिंसेस बार पहुंचे।
अब तक जितनी जगह वे भटके थे, उनमें से कहीं से भी उन्हें कोई मदद हासिल नहीं हुई थी।
अलबत्ता उस दौरान, कभी अशोक और वर्षा के सामने अकेले, कभी उसने छिपकर और कभी अशोक के साथ जाम टकराकर राहुल कोई दस वैग विस्की पी चुका था।
"यहां मैं दिन में भी आया था।" - राहुल बोला।
"आज ?" - अशोक ने पूछा।
"हां। और मैंने पिछली रात के बारे में उस बारमैन से काफी सवाल किए थे।"
"वही जो पिछले बारों में निकला था। सिफर। बारमैन कहता है कि मैं यहां आया था और यहां मैने दो आदमियों से बातचीत भी की थी लेकिन मैं बार में अकेला आता था और अकेला यहां से गया था।"
"ओह !"
"लेकिन बकौल बारमैन यहां दो आदमी थे जिनमें से एक से मैंने बात की थी।"
"क्या बात की थी ?"
"पता नहीं।"
राहुल अगर फिर नशे में न होता तो इसे कल रात वाले दो आदमियों में और उन दो आदमियों में जो दोपहर में पांच घन्टे उसकी साथ विस्की पीते रहे थे कोई रिश्ता जरूर सूझता, जब कि मौजूदा हालात में उसे वह रिश्ता सूझना तो दूर, उनका जिक्र करना तक नहीं सूझा था।
"तुम दोनों" - अशोक बोला - "किसी टेबल पर जाकर बैठो, मैं बारमैन से और वेटरों से पूछताछ करता हूं।"
राहुल ने सहमति में सिर हिलाया।
वह वर्षा के साथ एक खाली टेबल पर जा बैठा।
अशोक बार की तरफ बढ गया।
"मैं तुम्हारे लिए कोल्ड ड्रिंक मंगाऊं ?" - राहुल आशापूर्ण स्वर में बोला।
वर्षा ने तनिक हिचकिचाते हुए सहमति में सिर हिला दिया।
"और अगर इजाजत हो तो मैं अपने लिए..."
राहुल ने जान बूझकर वाक्य अधुरा छोड़ दिया।
"तब बहुत ज्यादा पीते हो।"
वह खेदपूर्ण ढंग से मुस्कराया।

"क्यों पीते हो इतनी ?"

राहुल ने उत्तर दिया।

"उस लड़की की बेवफाई की वजह से जिसकी मेरे से शक्ल मिलती है ? क्या नाम बताया था तुमने उसका ?"

"पूनम।"

"मुझे उसके बारे में कुछ और बताओ। मुझे अपने और उसके सम्बन्धों के बारे में कुछ बताओ।"

"यह एक लम्बी कहानी है, फिर कभी सुनाऊंगा।"

"फिर कब सुनाओगे ? परसों तो तुम यहां से चले जाओगे और फिर पता नहीं जिन्दगी में कभी वापिस बम्बई लौटोगे या नहीं।"

"एक बात बताओ।"

"पूछो।"

"तुम पढी-लिखी, समझदार, बालिग लड़की हो, इसलिये सोच-समझ कर जवाब देना, मेरी भावनाओं का ख्याल करके झूठ न बोलना।"

"अच्छा। पूछो, क्या पूछना चाहते हो ?"

"अगर तुम पूनम होतीं तो क्या तुम मेरे प्यार को सिर्फ इसलिये ठुकरा देतीं क्योंकि मैं हाथी लगता हूं और यह तुम्हारी-मेरी जोड़ी न जंचती ?"

"नहीं।"

"क्यों नहीं ?"

"क्योंकि प्यार का रिश्ता दिल से होता है। दिल का सौदा दिल से होता है, जिस्म के आकार से नहीं, तुम तो सिर्फ मो... विशालकाय हो, प्यार करने वालों को तो अंधे, काने, लूले-लंगड़े, मुफलिस, फकीर नामंजूर नहीं होते हैं।"

"ओह !"

"किसी ने मजनू से कहा था कि तेरी लैला रंग की काली है तो इसने कहा था कि देखने वाले की निगाह में नुक्स था। उसने उसे कहा था, तेरी अख नहीं देखन वाली।"

"काश !" - राहुल के मुंह से एक सर्द आह निकल गयी - "जैसी समानता खुदा ने पूनम और तुम्हारी सूरत है, वैसी तुम दोनों के ख्याल में भी बनाई होती।"

वर्षा चुप रही।

"ज्यादा अफसोस की बात यह है" - राहुल बड़े दयनीय स्वर में बोला - "कि मर्द की बाबत अपनी पसन्द से मुझे वाकिफ कराने में उसने एक साल लगाया। एक साल लगाया उसने मुझे यह बताने में कि हाथी और हिरणी की जोड़ी नहीं चल सकती थी। जब मेरा प्यार अपनी चरमसीमा पर पहुंच चुका था, जब मैं उसे अपने दिलोजान की जीनत मान चुका था तो उसने कहा कि हम सिर्फ अच्छे मित्र ही बन सकते थे, जीवन साथी नहीं। 'वुई कुड ओनली बी गुड फ्रेंड्स !' यह बात उसने शुरुआत में ही जता दी होती तो क्यों... क्यों..."

राहुल खामोश हो गया। उसका गला रुंध गया और आंखें डबडबा आयीं।

"उसने शादी कर ली हुई है ?" - वर्षा ने पूछा।

"हां। कब की। उसने किसी और से शादी करनी थी, इसीलीए तो मुझे ठुकराया था।"

"ओह !"

"पूनम की शादी के बाद मैं लन्दन छोड़ न देता तो या तो पागल हो जाता या खुदकुशी कर लेता या फिर पूनम का खून कर देता।"

"अब तुम किसी शिप की नौकरी करते हो ?"

"हां।"

उस घड़ी वर्षा के मन में उस देव समान व्यक्ति के लिए बहुत अनुराग उमड़ा। उस वक्त राहुल उसे उस अबोध शिशु की तरह लगा जिसे अपनी मां के अंक की सुरक्षा की जरूरत थी। उस घड़ी उसके मन में जज्बात का ऐसा लावा उमड़ा कि वह घबराकर परे देखने लगी। उसकी मन गुनाह के अहसास से भरे उठा।

वह अशोक की मंगेतर थी उसने मन ही मन सोचा - उसे क्या हक था अपने सामने बैठे उस नितान्त अजनबी व्यक्ति के लिए अपनी मन में किन्हीं जज्बाती ख्यालात को पनाह देने का !

आया ही क्यों ऐसा कोई ख्याल उसके जहन में !

क्यों उसका दिल चाह रहा था कि वह उससे कहे कि वह कितना ही बड़ा शराबी, गैरजिम्मेदार और नाकामयाब

आदमी क्यों नहीं था, उसे पसन्द था।

क्या उसके भीतर उस शख्स के लिए कोई प्यार-मुहब्बत का जज्बा पनप रहा था ?

नहीं, नहीं - उसने घबराकर सोचा - ऐसा कैसे हो सकता था ?

लेकिन उस अजनबी के किसी सम्मोहन में जकड़ी तो चली जा रही थी वह ?

वह सम्मोहन भी क्यों ?

जो शख्स आज ही उससे मिला था और और दो दिन बाद हमेशा के लिए बम्बई से रुख्सत हो जाने वाला था, उसके प्रति सम्मोहन भी क्यों ?

किसी अजनबी के लिए मन में ऐसी भावना लाना क्या उस शख्स के साथ नाइन्साफी नहीं थी जिससे वह प्यार करती थी, जिसकी वह मंगेतर थी और जिससे वह शादी करने वाली थी ?

क्यों उसे ऐसा लग रहा था कि अभी सिर्फ पांच मिनट पहले अशोक घटके नाम का जो शख्स उससे अलग हुआ था और जो उसका भावी पति था, वह जब लौटेगा तो उसके लिए नितान्त अजनबी होगा ?

तभी एक वेटर उनकी टेबल पर पहुंचा।

राहुल ने इशारे से उसे एक विस्की का डबल पैग और स्पष्ट शब्दों मैं एक कोल्ड ड्रिंक लाने का आदेश दिया ।

***

चम्पकलाल बार काउन्टर पर मौजूद था। वह कोने के एक स्टूल पर बैठा अपनी रम चुसक रहा था।

बारमैन जान उसके करीब पहुंचा।

“बाप !” - वह धीरे से बोला।

उसके स्वर में रहस्य का ऐसा पुट था कि चम्पकलाल ने फौरन अपने गिलास पर से सिर उठाया।

“क्या है ?” - वह बोला।

“बाप, उधर बाजू वाली टेबल पर जो परी जैसी बाई के साथ एक भैंसे जैसा आदमी बैठेला है, उसे देखा ?”

“देखा।”

“यह सेलर दोपहर को भी इधर आयेला था। अपना नाम राहुल बताया था इसने। तब अपना गोवानी भाई और उसका जोड़ीदार मारुतिराव इससे खूब घुट-घुटकर बातें करेला था।”

“यह भैंसा उनका यार है ?”

“नक्को। बाप, यह तो सेलर है जो शिप के साथ इधर आयेला है और शिप के साथ ही चला जाने का है।”

“तो फिर वे दोनों इससे घुट-घुटकर बातें क्यों कर रहे थे ?”

“कोई वजह नहीं। तभी तो अपुन तुम्हेरे को इस सेलर की बाबत बतायेला है।”

“जब कोई वजह न हो तो जरूर कोई वजह होती है।”

“बरोबार बोला।”

चम्पकलाल खामोश रहा। तब तक उसकी मुकम्मल तवज्जो रम की तरफ थी लेकिन अब वह रम और उस विशालकाय सेलर में बंट गयी।

***

अशोक वापिस लौटा।

“मैंने खूब पूछताछ कर ली है।” - वह एक कुर्सी घसीट कर वर्षा और राहुल के बीच में बैठता हुआ बोला - “तुम्हारा रात का राही तुम्हें कम से कम यहां नहीं मिला था।”

राहुल खामोश रहा।

“तुम रात ग्यारह बजे यहां से विदा हुए थे” - अशोक बोला - “लगभग उसी समय यहीं से, बाहर वाले टेलीफोन बूथ से, वर्षा ने मुझे फोन किया था और मैं उसे लिवा ले चलने के वास्ते यहां के लिए रवाना हुआ था। तब से कोई पन्द्रह मिनट बाद तुम वर्षा को उस खंडहर इमारत के पिछवाड़े के कमरे में पड़े मिले थे। इस बार और खंडहर इमारत के बीच में सिर्फ मैंगलोर स्ट्रीट ही है जिसमें कि ऐसी कोई जगह नहीं जहां कि तुम्हें कोई अपना शराबी भाई मिल सका हो।”

“देखो।” - राहुल बड़े सब्र से बोला - “अगर तुम फिर यही कहना चाहते हो कि वह आदमी मेरी कल्पना की उपज था तो यह बात तो मैं नहीं मानने का।”

“माई डियर फ्रेंड, अब तो साबित हो चुका है कि तुम से कहीं कोई नहीं टकराया था। तुम जिस बार में भी गये

थे, अकेले गये थे और अकेले ही वहां से रुख्सत हुए थे। अगर तुम किसी शख्स से मिले थे तो कहीं मिले थे, कब मिले थे ?"

राहुल को जवाब नहीं सूझा।

"यहां तक की तो गारन्टी है, तुम्हारे साथ कोई नहीं था। यहां के बाद तुम्हारा अगला पड़ाव था वहां खंडहर इमारत जहां कि वर्षा ने तुम्हें पड़े देखा था।"

"वह बात भी मुझे हजम नहीं हो रही। किसी बन्दरगाह पर नशे में टुन्न हो जाना मेरे लिए कोई नई बात नहीं लेकिन इतना टुन्न मैं आज तक नहीं हुआ कि किसी गटर में जा गिरता, किसी कचरे के ढेर पर लेट जाता या किसी खंडहर इमारत के गन्दे, ठण्डे, मलबाभरे फर्श पर जा पड़ता।"

"लेकिन वहां तुम थे, सरासर थे। तुम खुद कबूल करते हो कि कल रात तुम उस खंडहर इमारत में थे। दोबारा वहां गए बिना भी तुम्हें उस इमारत की याद है।"

"यह भी ठीक है।"

"अब जब हम इतने धक्के खा चुके हैं तो वह भी देख लेते हैं कि आगे तुम कहां गए थे।"

"आगे तो मैं अपने होटल में ही गयी होऊंगा।"

"कौन से होटल में ठहरे थे तुम ?"

"सरताज होटल। वह सेंट जार्ज रोड पर है। लेकिन वहां भी मैं अकेला ही पहुंचा था।"

"कितने बजे ?"

"कोई बारह बजे। मुझे तो याद नहीं था। अपनी आमद का वक्त तो क्या, होटल का नाम तक नहीं मालूम था मुझे। लेकिन आज सोकर उठने पर मैंने पूछताछ की थी। मैं बारह बजे के करीब वहां पहुंचा था।"

"यानी कि खंडहर इमारत से निकलने के तकरीबन पौने घन्टे के बाद तुम होटल में थे ?"

"हां।"

"अकेले ?"

"हां।"

"अगर तुम्हारे साथ कोई था तो वह रास्ते में ही कहीं रह गया था ?"

"जाहिर है।"

"हम तुम्हारे होटल चलते हैं। खंडहर इमारत से होटल तक पहुंचने के कई रास्ते मुमकिन होंगे। हम वह रास्ता निर्धारित करने की कोशिश करेंगे जिस पर कोई पौना घन्टा चल कर होटल तक पहुंचा जा सकता था। फिर हम खुद उस रास्ते का चक्कर लगायेंगे और देखेंगे कि तुम्हारा रात का राही क्या उस रास्ते पर कहां तुमसे बिछुड़ा हो सकता था। ओके ?"

राहुल ने सहमति में सिर हिलाया।

"वैसे मुझे लगता यह है" - अशोक विचारपूर्ण स्वर में बोला - "कि खंडहर से निकलने के बाद तुमने या तो किसी दुर्घटनाग्रस्त आदमी को कहीं से उठाया था और या फिर नशे की हालत में अपने से ज्यादा टुन्न आदमी को खामखाह थाम लिया था। तुम थोड़ा रास्ता उसके साथ चले थे फिर या तो वह खुद तुमसे अलग हो गया था या तुमने उसे कहीं छोड़ दिया था।"

"ऐसा कोई आदमी" - वर्षा बोली - "अभी भी वहां बैठा थोड़े ही होगा, जहां कि इसने उसे छोड़ा होगा ?"

"दुरुस्त। लेकिन फिर भी इसके कल के सम्भावित रूट का एक चक्कर लगा लेने में कोई हर्ज नहीं। जहां इतने धक्के खाए हैं, थोड़े और सही।"

वर्षा ने सहमति में सिर हिलाया।

"अब, उठो।"

"मैं" - राहुल बड़े दयनीय स्वर में बोला - "एकाध ड्रिंक और...."

"नहीं" - अशोक सख्ती से बोला - "तुम पहले ही हद से ज्यादा पी चुके हो। नशे की कल जैसी हालत में पहुंच गए तो सारा खेल खराब हो जायेगा। हम ऐसे आदमी के किसी काम कैसे आ सकेंगे जो खुद ही किसी काम नहीं रहेगा ?"

राहुल ने जिद न की।

***

सरताज होटल के रिसैप्शन पर उस वक्त नाइट ड्यूटी वाला क्लर्क मौजूद था। उसने राहुल को फौरन पहचान

लिया। उसने बताया कि पिछला रात राहुल ठीक पौने बारह बजे वहां पहुंचा था।

वे बाहर आ कर कार में सवार हो गये।

"यानी कि" - अशोक बोला - "तुम पौना नहीं आधा घन्टा चल कर खंडहर इमारत से यहां तक पहुंचे थे।"

राहुल ने सहमति में सिर हिलाया।

"अब देखते हैं खंडहर इमारत से यहां तक कौन-कौन से रूट मुमकिन हैं।"

"ठीक है।"

वैसे चार रूट मुमकिन थे। तीन का चक्कर उन्होंने कार द्वारा लगाया। उन्हें रास्ते में कहीं कोई ऐसी जगह दिखाई न दी जहां कोई घायल या अचेत व्यक्ति तब भी पड़ा हो सकता था, उन तीन रास्तों पर कोई, बार भी नहीं पड़ता था जिसकी वजह से यह उम्मीद की जा सकती कि राहुल शायद फिर बार में घुस गया था।

तीसरे फेरे की समाप्ति पर वे मैंगलोर स्ट्रीट में थे।

"अब एक ही रास्ता बाकी रह गया है जो इतने संकरे रास्तों से हो कर गुजरता है कि उस पर कार नहीं जा सकती। मेरी राय है कि हम वर्षा को कार के साथ होटल सरताज भेज देते हैं और खुद पैदल इस रास्ते पर चलते हैं।"

राहुल खामोश रहा।

"वैसे मेरा अन्दाजा है कि इस रास्ते पर चलकर बड़ी हद बीस मिनट में होटल तक पहुंचा जा सकता है। इस लिहाज से हो सकता है कि इस रास्ते पर, सिर्फ इस रास्ते पर, तुम थोड़ी देर के लिए कहीं रुके थे।"

"कहां?"

"यह तो देखने पर मालूम होगा। देखने पर मालूम होगा कि इस रास्ते पर तुम्हारे रुकने लायक कौन-सी जगह मुमकिन है!"

"तुम्हारा मतलब है कि वैसी किसी जगह पर मैं अपने रात के राही से मिला था?"

"जाहिर है।"

"मेरी उससे सिर्फ दस मिनट की मुलाकात थी?"

"यह भी जाहिर है।"

"इतने थोड़े वक्त में मैं उससे इतना प्रभावित हो गया कि अब मैं उसे ढूंढता फिर रहा हूं और इस काम मे दो और जनों को हलकान कर रहा हूं?"

"तुम उससे नहीं, उसकी दयनीय दशा से प्रभावित हुए हो। तुम्हारी कांशस पर इस बात का बोझ है कि इसे तुम्हारी मदद की जरुरत थी लेकीन तुमने उसे मंझधार में छोड़ दिया।"

"एक यह बात मैं नहीं मान सकती" - वर्षा बोली - "कि उसे अभी भी मदद की जरुरत होगी। जिस शख्स को आधी रात मददगार टकरा सकता था, उसे क्या दिन में, पहाड़ जैसे सारे दिन में, कोई मददगार नहीं मिला होगा? क्या वह अभी भी राहुल के ही लौटने का इन्तजार कर रहा होगा?"

"तुम्हारी बात में दम है" - अशोक बोला - "लेकिन इसमें एक बात हो सकती।"

"क्या?"

"राहुल कहता है कि वह घायल था, उसका माथा फटा हुआ था। क्या पता राहुल के उससे जुदा होने के बाद किसी वक्त वह मर गया हो!"

"तो भी दिन की रोशनी में लाश किसी की निगाह में आयी होती!"

"शायद न आयी हो! शायद इस रास्ते पर ऐसी कोई जगह पड़ती हो जहां से दिन में भी कोई न गुजरता हो और लाश वहां पड़ी हो!"

"यानी कि कोई और खंडहर इमारत?"

"कोई भी ऐसी जगह जिस पर आम आमदरफ्त न हो।"

"और वह आदमी वहां मरा पड़ा हो?"

"मुमकिन है।"

"मर चुके आदमी को तलाश करने में फायदा? मुर्दे के किस काम आ सकते हैं हम लोग?"

"शायद वह न मरा हो, लेकिन मौत की कगार पर खड़ा हो?"

"नानसेंस। यह सारा सिलसिला वक्त की बरबादी के सिवाय और कुछ नहीं।"

"जब इतना वक्त बरबाद कर चुके हैं तो थोड़ा और सही।"

"लेकिन..."
"अगर अब भी कोई नतीजा हसिल न हुआ तो हम समझेंगे कि या तो ऐसा कोई आदमी था ही नहीं..."
"आदमी तो शर्तिया था।" - राहुल बीच में ही बोल पड़ा।
"...था तो" - अशोक कहता रहा - "वह अब किसी मदद का तलबगार नहीं रहा। या तो वह मर गया और या उठकर नहीं चल दिया।"
"मैं थक गयी हूं।"
"आई अन्डरस्टैंड तभी तो हम वाक के लिए तुम्हें साथ नहीं ले जा रहे।"
"और..."
"मुझे भूख लगी है।"
"वह तो मुझे भी लगी है। बस, सिर्फ आधा घन्टा और। तुम कार पर राहुल के होटल पहुंचो, हम भी बस वहां पहुंचे कि पहुंचे।"
वर्षा ने सहमति में सिर हिलाया।
वह कार के साथ वहां से विदा हो गयी तो अशोक बोला - "इमारत के भीतर चलो।"
"भीतर !" - राहुल बोला - "वह किसलिए ?"
"मेरा अनुमान है कि तुम सामने के रास्ते से बाहर नहीं निकाले थे। तुम सामने के रास्ते से बाहर निकले होते तो मैंने या वर्षा ने तुम्हें जरूर देखा होता। वर्षा ने तुम्हें भीतर पड़े देखा था लेकिन थोड़ी ही देर बाद जब मैं वर्षा के साथ भीतर पहुंचा था तो तुम वहां नहीं थे। इससे साफ जाहिर होता है कि तुम पिछवाड़े के रास्ते से बाहर निकले थे।"
"तो ?"
"तो यह कि हम एक घटना को रिकन्स्ट्रक्ट करने की कोशिश कर रहे हैं तो उसे मुनासिब तरीके से करना चाहिए। इससे टाइम का भी सही अन्दाजा लगेगा।"
"अच्छी बात है।"
दोनों इमारत में दाखिल हुए।
पिछवाड़े के कमरे में वे ठिठके। वहां अशोक ने घड़ी में टाइम नोट किया और फिर वे आगे बढे।
इस बार उन्होंने ऐन वही रास्ता पकड़ा जिस पर अपनी नशे की हालत में पिछली रात राहुल जनकराज धोते को सम्भाले चला था।
रास्ते में खस्ताहाल कारों का कब्रिस्तान लगने वाला अन्धेरा मैदान भी आया लेकिन वे उस पर कदम रखने के स्थान पर उसके पहलू से होकर उधर बढे जिधर रोशन रास्ता था।
अशोक के ख्याल से आधी रात को राहुल अकेला या अपने किसी साथी के साथ उस अन्धेरे मैदान से नहीं गुजरा हो सकता था।
अपना वह ख्याल उसने राहुल पर जाहिर न किया। वह ऐसा करता तो शायद राहुल को याद ही आ जाता कि हकीकतन पिछली रात उसके पांव उस अन्धेरे मैदान में ही पड़े थे।

***

वर्षा कार के साथ होटल पहुंची।
उसका इरादा कार में ही बैठे रहने का था। लेकिन जल्दी ही वह बोर हो गयी। वह कार से निकली और इधर-उधर चहलकदमी करने लगी।
तभी होटल का रिसैप्शन क्लर्क बाहर निकला।
वह ठिठका।
"राहुल साहब कहां हैं ?" - उसने पूछा।
"क्यों, क्या बात है ?" - वर्षा ने पूछा।
"वे आपके साथ नहीं लौटे ?"
"नहीं। उन्हें लौटने में अभी थोड़ा वक्त लगेगा। बात क्या है ?"
"अभी थोड़ा देर पहले एक आदमी उन्हें पूछता हुआ यहां आया था।"
"आदमी ! कौन आदमी ?"
"देखने में कैसा था ?"

"वह कोई पचासेक साल का खिचड़ी दाढी वाला आदमी था।"
"उसने मिस्टर राहुल की बाबत उनका नाम ले कर पूछा था ?"
"हां।"
"हैरानी है। उन्हें तो मैं और मेरे मंगेतर के अलावा इस शहर में कोई भी नहीं जानता।"
"वह जानता था। वह नाम भी जानता था और यह भी जानता था कि राहुल साहब किसी शिप पर पर्सर थे।"
"कमाल है।" - वर्षा एक क्षण खामोश रही और फिर बोली - "क्या उस आदमी के माथे पर जख्म या चोट का कोई निशान था ?"
"नहीं।"
"वह हलकान, परेशान, घायल या बीमार या नशे में लगता था ?"
"नहीं। अलबत्ता उसके मुंह से रम की गन्ध जरूर आ रही थी।"
"लेकिन वह नशे में नहीं था ?"
"नहीं। वह तो एकदम चाक चौबन्द था।"
यानी कि - वर्षा ने मन ही मन सोचा राहुल का रात का राही तो वह शख्स नहीं था।
"वह कह रहा था" - क्लर्क बोला - "कि वह फिर आयेगा।"
"आज ही ?" - वर्षा अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डालती हुई बोली।
"कहा तो उसने यही था।"
"इतनी रात गये... ओके, थैंक्यू। मैं मिस्टर राहुल को इस बारे में बता दूंगी।"
क्लर्क ने सहमति में सिर हिलाया और वापिस होटल में दाखिल हो गया।
वर्षा फिर इधर-उधर चहलकदमी करने लगी।
कौन हो सकता था वह आदमी ?
तभी राहुल और अशोक पहुंचे।
उनके चेहरों पर लिखा था कि वह फेरा भी बेकार गया था।
वर्षा ने राहुल को उस व्यक्ति के बारे में बताया जो कि उसकी गैरहजिरी में उससे मिलने की नीयत से आया था।
"मेरे से कौन मिलने आया होगा ?" - राहुल उलझनपूर्ण स्वर में बोला।
"शायद तुम्हारा रात का राही।" - अशोक बोला।
"नहीं" - वर्षा बोली - "वह कोई और था। वह तो कोई पचासेक साल का खिचड़ी दाढी वाला आदमी था।"
"मेरे जोड़ीदार के दाढी नहीं थी" - राहुल बोला - "मुझे खूब याद है।"
"वह" - अशोक बोला - "तुम्हारे रात के राही का कोई संगी-साथी होगा जो कि अपने दोस्त की तरफ से तुम्हारा शुक्रगुजार होने आया था।"
"उसने मेरा नाम कैसे जाना ?"
"कल नशे में अपना नाम तुमने अपने रात के राही को बताया होगा।"
"और पता ? इस होटल में पहुंचने से पहले तो मुझे खुद नहीं मालूम था कि मैं यहां आने वाला था। मैं तो इस होटल के वजूद से भी वाकिफ नहीं था।"
"क्या पता उसने आसपास के तमाम होटलों से पूछताछ की हो।"
"सिर्फ मेरा शुक्रगुजार होने के लिए ?"
"क्यों नहीं ?"
"लेकिन मैं उसके लिए कुछ कर तो सका ही नहीं था।"
"शायद कुछ किया हो लेकिन तुम्हें याद न हो।"
"नहीं" - राहुल इनकाल में सिर हिलाता हुआ बोला - "मैंने तो उलटे उसे नुकसान पहुंचाया हो सकता है। हो सकता है मैंने उसे ऐसी जगह से उठाया हो जहां कि वह सुरक्षित था और उसे ऐसी जगह ले जा डाला हो जहां कि वह सिर्फ अपनी लाचार और बेसहारा हालत में पड़ा ही रह सकता था।"
"तुम उसके जितना काम आ सकते थे, आये थे।"
वह खामोश रहा।
"अशोक" - वर्षा बोली - "तुम लोगों के पीछे जब मैं यहां अकेली बोर हो रही थी तो कल रात के घटनाक्रम के बारे में मैंने नये सिरे से सोचा था। तब मुझे एक बात सूझी थी।"

"क्या ?"

"कल तुम्हें फोन कर चुकने के बाद जब मैंने मैंगलोर स्ट्रीट में कदम रखा था तो मेरे पीछे कोई आदमी था। उसी आदमी से डरकर मैंने खंडहर इमारत में यह सोचकर कदम रखा था कि जब मेरे पीछे आता आदमी सड़क पर से गुजर जाएगा तो मैं बाहर कदम रखूंगी।"

"वह गुजर गया था ?" - अशोक ने पूछा।

"नहीं। वह तो इमारत के सामने ही ठिठक गया था और उसने तभी मेरे सामने इमारत से बाहर निकाले दो आदमियों से बातचीत करनी शुरू कर दी थी।"

"दो आदमी ! दो आदमियों का जिक्र किसी न किसी सन्दर्भ में बार-बार आ जाता है। पता नहीं ये दो आदमियों के कई जोड़े हैं या एक ही जोड़े का कई जगह दखल है।"

"तुम आगे बढो" - राहुल तनिक बेसब्रेपन से बोला - "क्या कह रही थीं तुम ?"

"मैं यह कह रही थी" - वर्षा बोली - "कि तुम भीतर फर्श पर अचेत पड़े थे। मेरी चीख सुनकर तुम्हारी तन्द्रा टूटी थी, तुमने फर्श पर पड़ा मेरा पर्स देखा था जोकि तुमने बेध्यानी में उठाकर अपने ओवरकोट की जेब में डाल लिया था। मेरे अशोक के साथ इमारत में दोबारा कदम रखने से पहले जब तुम वहां से बाहर निकले थे तो तुम से वही आदमी टकरा गया था जोकि मेरे पीछे लगा हुआ था। मिस्टर, वही वह आदमी था जोकि कल तुम्हारा रात का राही बना था और जिसकी नाकाम तलाश हम अभी करके हटे हैं।"

"कल कोई तुम्हारे पीछे लगा हुआ था ?" - राहुल होंठों में बुदबुदाया।

"यह तुझे नहीं पता कि वह इत्तफाकन मेरे पीछे आ रहा था या जानबूझ कर मेरे पीछे लगा हुआ था। बहरहाल डरी बहुत थी मैं उससे।"

"तुमने उसकी सूरत देखी थी ?"

"नहीं। मैंने या तो उसका साया देखा था और या सड़क पर पड़ती उसकी लम्बी परछाई देखी थी।"

"चाल कैसी थी उसकी ?"

"क्या मतलब ?"

"वह लड़खड़ाता, गिरता-पड़ता चल रहा था या ठीक-ठाक चल रहा था ?"

"चल तो वह ठीक-ठीक ही रहा था। लेकिन उसकी चाल में एक बात थी।"

"क्या ?"

"वह ऐसी मशीनी थी कि लगता था जैसे किसी खिलौने की चाबी दे कर चलाया जा रहा हो।"

"यानी कि उसके पांव घिसट नहीं रहे थे, वह लड़खड़ा नहीं रहा था और चलने-फिरने के नाकबिल नहीं मालूम होता था ?"

"हरगिज भी नहीं।"

"फिर वह मेरा रात का साथी नहीं था। जिस शख्स का कल रात मैं मददगार बना था, उसका उठ कर चलना तो दूर, वह तो अपने पैरों पर खड़ा भी नहीं हो सकता था। मैंने उसे मजबूती से न थामा होता और उसका सारा भार अपने जिस्म पर न लिया होता तो उसका एक कदम भी उठा पाना मुहाल होता। एक बार उसे मैंने अपने सहारे के बिना छोड़ा था तो वह धड़ाम से जमीन पर जाकर गिरा था।"

"ऐसी बुरी हालत में मेरे पीछे आता आदमी नहीं था।"

"जबकि मेरा जोड़ीदार ऐसी ही बुरी हालत में था। तभी तो उसे मेरी मदद की जरूरत है। तभी तो मैं उसे तलाश कर रहा हूं।"

"अब यह तलाश बेकार है, दोस्त।" - अशोक बोला।

"हां।" - राहुल उदास स्वर में बोला - "शायद।"

वर्षा को फिर उस पर बहुत प्यार उमड़ा। लेकिन फौरन ही वह घबराकर परे देखने लगी। उसे डर था कि कहीं अशोक उसके दिल के भाव उसके चेहरे पर से न पढ़ ले।

"तुम हमारे साथ खाना खाने चलना पसंद करोगे ?" - अशोक बोला।

"नहीं।" - राहुल खेदपूर्ण स्वर में बोला - "मुझे भूख नहीं है।"

"वैल, दौन, सो लांग।"

"मैं आप लोगों का शुक्रगुजार हूं कि आपने मेरी खातिर...."

"ओह, नैवर माइन्ड दैट।"

फिर दोनों कार में सवार होकर वहां से विदा हो गए।

***

रात के एक बजे से पहले रोबीरो और मारूतिराव कैब्रे डांसर लिली से न मिल पाए। जब तक उस रात की आखिरी परफारमेंस भी मुकम्मल न हो गई, किसी ने उन्हें लिली के पास भी न फटकने दिया।

परफारमेंस खत्म हुई तो छोकरी पसर गई।

वह किसी अजनबी से, और वह भी रात के एक बजे, मिलना नहीं चाहती थी।

बड़ी मुश्किल से बार-बार इन्तहाई जरूरी काम का हवाला देकर वे उसे दो मिनट की संक्षिप्त मुलाकात के लिए तैयार कर पाए।

छोकरी उनसे ऐसी फूं फां से मिली जैसे वह तो मलिका विक्टोरिया थी और वे दोनों उसकी रहमत और खैरात के तलबगार मंगते।

वैसे छोकरी खूबसूरत थी, कमउम्र की और यह निश्चय ही करिश्मासाज बात थी कि यह धोते की माशूक थी।

खुदा जाने क्या भाया था उस छोकरी को धोते में।

दोनों ने बड़े अदब से उसका अभिवादन किया और अपना-अपना परिचय दिया।

"क्या चाहते हो ?" - वह बड़ी रूखाई से बोली।

"बाई" - रोबीरो बोला - "हम धोते - जनकराज धोते - की वजह से यहां आए थे।"

"क्यों" - वह सकपका कर बोली - "क्या हुआ उसे ?"

"हुआ तो कुछ नहीं।"

"तो ?"

"दरअसल वह हमें मिल नहीं रहा।"

"मिल नहीं रहा, क्या मतलब ?"

"वह ऐसी किसी जगह पर नहीं है जहां कि वह अक्सर हुआ करता है। हम सुबह से उसे तलाश कर रहे हैं।"

"क्यों क्यों तलाश कर रहे हो ? तुम क्या पुलिस वाले हो ?"

"हम पुलिस वाले लगते हैं ?"

"जरा भी नहीं।"

"तो फिर ?"

"फिर क्या ? फिर तुम्हीं बताओ क्यों तलाश कर रहे हो धोते को ?"

"हमने कल मटके का नम्बर लगाया था। हमारा नम्बर निकला है लेकिन जीत की रकम हासिल करने के लिए हमें धोते नहीं मिल रहा है।"

"अरे, नहीं मिल रहा तो मिल जायेगा।"

"बाई अक्खा दिन तो गुजर गया, आधी रात भी गुजर गयी। आज तक तो ऐसा हुआ नहीं कि धोते इतना अरसा गायब रहा हो।"

"सोलह हजार के रोकड़े का सवाल है।" - मारूतिराव बोला - "हमारा पहली बार मोटा नम्बर लगा है।"

"आपसे तो वह मिला होगा !" - रोबीरो आशापूर्ण स्वर में बोला।

"तुम्हें पता कैसे लगा कि वह मुझ से मिलता है ?" - वह बोली।

"खुद धोते ने ही एक बार बताया था कि आप-आप..."

"उसकी खास हैं।" - मारूतिराव बोला।

"वह आज मुझसे नहीं मिला।" - वह रूखाई से बोली।

"अच्छा !"

"सच पूछो तो मैं खुद हैरान हूं। आज तो उसका लंच पर मुझसे मिलना पहले से तय था।"

"आखिरी बार कब मिला था वह आपसे ?"

"कल दोपहर को ही मिला था। आज भी मिलने वाला था लेकिन नहीं आया। पहले तो उसके न आने पर मैंने खास ध्यान नहीं था, लेकिन अब तुम लोगों के पूछताछ करने आ धमकने की वजह से मुझे तो फिक्र होने लगी है उसकी।"

"पहले भी कभी वह यूं गायब हुआ है ?"

"कह कर नहीं हुआ।"

"आपकी निगाह में कोई ओर भी जगह है जहां उसकी मौजूदगी मुमकिन हो या उसके बारे में पूछताछ की जा सकती हो ?"

"कहीं वह अपनी बीवी के पास न चला गया हो ।"

"बीवी ! बीवी भी है उसकी ?"

"हां । तुम्हें नहीं मालूम ?"

"नहीं ।"

"क्या कहने !" - वह व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली - "तुम्हें मेरी खबर तो है लेकिन बीवी की खबर नहीं ।"

"बीवी का कभी जिक्र ही नहीं किया उसने ।"

"उसकी बीवी कल्याण में रहती है । कभी-कभार ही जाता है वह वहां । जरूर वह वहीं गया होगा ।"

"आपको बिना बताये ?"

"बिना बताये तो नहीं जाता वह । खास तौर से तब जब कि वह पहले से कहकर गया हो कि वह मेरे पास आएंगा ।" - एकाएक उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई - "कहीं उसका एक्सीडेंट तो नहीं हो गया" - वह एक क्षण ठिठकी और फिर बोली - "नहीं, एक्सीडेंट नहीं हुआ हो सकता । एक्सीडेंट हुआ होता तो मुझे खबर लगी होती ।"

"आपको कैसे खबर लगी होती ?"

"अपने पर्स में वह मेरी तस्वीर रखता है जिसके पीछे मेरा नाम और पता लिखा है ।"

"ओह !"

"कल्याण में उसकी बीवी का पता ?" - मारूतिराव ने पूछा ।

"मुझे नहीं पता ।"

"किसे पता होगा ?"

"मुझे क्या पता किसे पता होगा ?"

"अगर" - रोबीरो बोला - "वह आपके पास आए तो आप उसे खबर कर देंगी कि हम उसे ढूंढ रहे हैं ।"

"कर दूंगी । अगर वह पहले तुम लोगों को मिल जाए तो उसे फौरन मेरे पास भेजना ।"

"जरूर ।"

दोनों वहां से बाहर निकल आए ।

"छोकरी की बात सुनी !" - सड़क पर आकर रोबीरो बोला - "अगर वह मर गया होता या हस्पताल पहुंच गया होता तो छोकरी तक उसकी खबर जरूर पहुंचती जो कि नहीं पहुंची । कहने का मतलब यह है कि अब घर जाकर चैन की नींद सोवो ।"

"अगर वह कल्याण पहुंच गया हुआ तो ?" - मारूतिराव बोला ।

"सान्ता मारिया !" - रोबीरो असहाय भाव से बोला - "मोटे, तू तो निरा मूर्ख है । अक्ल तो तुझे छू तक नहीं गयी ।"

"क्यों ?"

"क्यों ! पूछता है क्यों ? अबे साले हलकट, लोहे के जिस डण्डे का वार मैंने उसकी खोपड़ी पर किया था, वह किसी भैंसे का सिर तोड़ सकता था । बावजूद उसके अगर वह नहीं मरा था तो वह किसी नजदीकी थाने पर पहुंचता या साठ मील दूर कल्याण में अपनी बीवी के पास ! ऐसी बीवी के पास जहां कि वह महीनों नहीं जाता ?"

"वह थाने में नहीं है, हस्पताल में नहीं है, अपनी बीवी के पास नहीं है, अपनी माशूक के पास नहीं है तो फिर कहां है ?"

"वह कहीं मरा पड़ा है ।"

"उस जगह के अलावा वहां कि हमने उसे छोड़ा था ?"

"जाहिर है ।"

"किसी ऐसी जगह जहां चौबीस घण्टे से ज्यादा गुजर जाने के बाद भी वह किसी की निगाह में नहीं आया है ?"

"हां । क्योंकि अगर वह मुर्दा भी बरामद हुआ होता तो उसकी जामातलाशी जरूर हुई होती । तब खबर उसकी छोकरी तक जरूर पहुंची होती ।"

"ऐसी जगह कौन-सी हो सकती है ?"

"यही तो वो लाख रुपये का सवाल है" - रोबीरो चिंतित भाव से गरदन हिलाया हुआ बोला - "जिसका जवाब हमारे पास नहीं है ।"

***

वर्षा के निगाहों से ओझल होते ही राहुल के दिल में एक टीस-सी उठने लगी। उसे ऐसा लगने लगा जैसे वहां से रौनक चली गयी हो, बहार वीराने में बदल गयी हो, रोशनी की जगह अधेरा हो गया हो। ऐसा महसूस होने की कोई वजह नहीं थी लेकिन फिर भी उसे ऐसा महसूस हो रहा था। आखिर वह लड़की पूनम जैसी ही तो थी, पूनम तो नहीं थी। पूनम भी होती तो उसे क्या हासिल होता ! वही जो पहले हासिल हुआ था। जिल्लत ! रुसवाई ! हत्तक ! पुर्जा-पुर्जा अरमान ! टुकड़ा-टुकड़ा दिल !

अच्छा था वह पूनम न थी।

लेकिन अगर वह पूनम नहीं थी तो उसके चले जाने से उसे क्या फर्क पड़ता था ? उसका नशा क्यों हिरण होता जा रहा था ?

किसी भी सवाल का जवाब उसके पास नहीं था।

वह होटल में दाखिल हुआ और रिसेप्शन पर पहुंचा। उसने जेब से कुछ नोट निकाल कर काउंटर पर क्लर्क के सामने फेंके।

"कितने दिन का किराया..." - क्लर्क ने कहना चाहा।

"सारे पैसे किराये के लिए नहीं हैं" - राहुल उखड़े स्वर में बोला - "बाकी बोतल के लिये हैं।"

"बोतल !"

"हां। मुझे विस्की की एक बोतल लाकर दो।"

"लेकिन बार तो बन्द हो गया है।"

"तो उसे खोलो।"

राहुल के स्वर में कहर का ऐसा पुट था कि क्लर्क सहमकर एक कदम पीछे हट गया।

"यस, सर।" - वह बोला - "आप अपने कमरे में चलिये, मैं अभी एक बोतल का इन्तजाम करता हूं।"

"दो।" - राहुल एक नोट और काउंटर पर डालता हुआ बोला।

"यस, सर। दो।"

राहुल घूमा और अपने कमरे की तरफ बढ चला।

दूसरा दिन

अगले रोज दरवाजे पर निरन्तर पड़ती दस्तक की आवाज से उसकी नींद खुली। वह उठकर बैठ गया। उसने महसूस किया कि वह तब भी नशे की तरंग में था। लेकिन वह तरंग आनन्द की नहीं थी। उसका सिर फिरकनी की तरफ घूम रहा था और कनपटियों में खून धाड़-धाड़ बज रहा था।

उसने करीब पड़ी मेज पर निगाह डाली।

वहां एक बोतल खाली हुई लुढकी पड़ी थी और दूसरी भी उसने कम से कम खोल ली हुई थी।

दरवाजें पर अभी भी दस्तक पड़ रही थी।

"आता हूं, भाई।" - वह उठता हुआ बोला।

लड़खड़ाता-सा वह दरवाजे तक पहुंचा। उसने जाकर दरवाजे की चिटकनी सरकाई और बिना यह देखे कि कौन आया था, वापिस आकर पलंग पर ढेर हो गया।

दरवाजा खुला और चम्पकलाल ने भीतर कदम रखा।

"हल्लो !" - वह बोला - "मेरा नाम चम्पकलाल है।"

राहुल ने बड़ी मेहनत से अपनी निगाह को स्थिर करके उसकी तरफ देखा। उसकी खिचड़ी दाढ़ी को उसने खास तौर से नोट किया।

"तुम कल भी आये थे ?" - फिर वह बोला - "कल रात को ? कोई आधी रात को ?"

"हां।" - चम्पकलाल बोला।

"बैठो।"

वह एक कुर्सी पलगं के करीब घसीटकर बैठ गया।

"तुम मुझे जानते हो ?" - राहुल ने पूछा।

"नहीं।" - चम्पकलाल बोला - "तुम भी मुझे नहीं जानते। लेकिन एक-दूसरे को जान लेने में क्या देर लगती है ! अब जान जायेंगे। जान जायेंगे तो एक-दूसरे के काम भी आयेंगे।"

"तुम यहां तक पहुंचे कैसे ?"

"प्रिंसेस बार के बारमैन की मेहरबानी से। उसे तुम्हारा नाम मालूम था..."

"उसे कैसे मालूम था ?"

"तुमने बार में किसी को बताया था तो उसने भी सुन लिया था।"

"ओह !"

"उसने तुम्हें यह भी कहते सुना था कि तुम किसी शिप पर पर्सर थे। मैंने आसपास के होटलों से यह पूछना शुरू किया कि राहुल नाम का लम्बे-चौड़े डील-डौल वाला सेलर कहां ठहरा हुआ था तो थोड़ी ही पूछताछ से काम बन गया।"

"हूं। विस्की पिओगे ?"

"नहीं।"

"पीते नहीं हो ?"

"पीता तो हूं लेकिन इतने सवेरे नहीं पीता।"

"जब पीना हो तो सुबह क्या, शाम क्या ?"

"यह भी ठीक है।"

राहुल ने मेज पर से तीन-चौथाई से ज्यादा भरी हुई बोतल-उठाई और उसके मुंह को मुंह से लगाकर एक घूंट हलक से नीचे उतारा।

"अपना नाम मैंने किसे बताया था ?" - उसने पूछा।

"रोबीरो और मारुतिराव नाम के दो साहबान को जिनके साथ कल तुम प्रिंसेस बार में विस्की भी पीते रहे थे।"

"तुम उन्हें जानते हो ?"

"हां। खूब अच्छी तरह से। मुझे पता लगा है कि कल बार में वे दोनों लफंगे जबरन तुमसे चिपक रहे थे।"

"लफंगे !"

"और ठग भी। जरूर वे दोनों तुम्हें कोई थूक लगाने की फिराक में थे।"

"थूक लगाने को मेरे पास क्या रखा है !"

"कुछ तो जरूर ही रखा होगा। वे खामखाह तो किसी अजनबी से चिपकने वाले हैं नहीं।"
"तुम वाकई विस्की नहीं पियोगे ?"
"नहीं। इस वक्त नहीं।"
राहुल ने एक घूंट और पिया। उसके गले में आग लग गयी, कलेजा फुंक गया, आंते त्राहि-त्राहि कर उठीं लेकिन साथ ही सिर घूमना और कनपटियों में खून बजना बन्द हो गया।
"तुम्हारा यहां आने का मकसद क्या है ?" - राहुल बोला।
"मकसद खुदगर्जीभरा है !" - चम्पकलाल बोला।
"क्या ?"
"मैं यह जानना चाहता हूं कि दोनों क्यों तुम्हारे से चिपक रहे थे ? यह बन्दरगाह का इलाका है। यहां रोज दर्जनों की तादाद में सेलर आते हैं और चले जाते हैं। वे दोनों ठग हैं लेकिन तुम कहते हो कि तुम्हारे पास ठगने लायक कुछ ही नहीं। इस लिहाज से उन दोनों की तुम्हारे में खास दिलचस्पी की कोई खास वजह होनी चाहिए।"
"होनी चाहिए।" - राहुल ने बड़ी संजीदगी से सहमति जताई।
"होगी भी।"
"होगी भी।"
"क्या वजह है ?"
"मालूम नहीं।"
"फिर क्या बात बनी ?"
"तुम एकदम घूंट भी नहीं लगाओगे ?"
"नहीं। शुक्रिया।"
राहुल ने एक घूंट और पिया।
"दो आदमी !" - वह बड़बड़ाया - "दो आदमी ! हर जगह दो आदमी !"
"यानी कि तुम कल से पहले भी उन दोनों से मिल चुके हो ?" - चम्पकलाल तनिक उत्साहपूर्ण स्वर में बोला।
"हो सकता है। नहीं भी हो सकता। दरअसल परसों रात मैं बहुत नशे में था इसलिये मुझे ठीक से याद नहीं। परसों रात नशे में मैं मैंगलोर स्ट्रीट की खंडहर इमारत में था। वह लड़की कहती है कि मैं वहां था।"
राहुल तब भी कम नशे में नहीं था। अगर वह होशोहवास में होता तो शायद चम्पकलाल से बात भी करना जरूरी न समझता लेकिन उस वक्त वह खामखाह परसों रात के तमाम वाकयात चम्पकलाल के सामने दोहराये जा रहा था।
"....वह मेरा रात का राही मेरे साथ था जो मेरी मदद के बिना चल पाना तो दूर अपने पैरों पर भी खड़ा नहीं सकता था। बेचारे का चेहरा फक था और माथा फूटा हुआ था।"
"था कौन वह ?"
"क्या पता कौन था ! लेकिन बेचारा था बहुत खस्ता हालत में। उसकी उस खस्ता हालत को ही मद्देनजर रखते हुए किसी सुरक्षित जगह पहुंचाने के लिये मैंने उसे खंडहर से निकाला था।"
"कहां पहुंचाया तुमने उसे ?" - मन ही मन राहुल के संसर्ग में धोते की कल्पना करते हुए चम्पक लाल ने सवाल किया।
"कहीं भी नहीं। बेचारा मंझधार में ही छूट गया। रास्ते में ही बिछुड़ गया कहीं।"
"ओह !"
चप्पक लाल को अफसोस हो रहा था कि सुबह सेवेरे भी राहुल नशे में था। वह अपने होशोहवास में होता तो निश्यच ही बहुत मानीखेज बातें बताता।
"लड़की कहती है कि मैं भीतर खंडहर में पड़ा था।" - राहुल यूं बोला, जैसे बड़बड़ा रहा हो - "वह आदमी पता नहीं कहां से टपका था और मेरा रात का साथी बन गया था। वह कहती है कि खंडहर में मेरे साथ दो जने और भी थे।"
"अगर वे तुम्हारे साथ थे तो तुम्हें मालूम होगा कि वे कौन थे। जरा याद करो, दोस्ता। जरा दिमाग पर जोर दो, बाप। वे दोनों रोबीरो और मारुतिराव ही तो नहीं थे ?"
"मुझे नहीं मालूम। मैंने उन्हें देखा थोड़े ही था।"
"लेकिन जब वे तुम्हारे साथ थे तो..."

"लड़की कहती है कि वे मेरे साथ थे। मैंने नहीं, लड़की ने उन्हें तब खंडहर से बाहर निकलते देखा था जबकि लड़की के कहने के मुताबिक मैं भीतर फर्श पर बेहोश पड़ा था।"

"तब धोते कहां था?"

"धोते! कौन धोते?"

"तुम किसी धोते को नहीं जानते?"

"नहीं।"

"कभी नाम भी नहीं सुना?"

"नहीं।"

चम्पकलाल ने एक आह-सी भरी। क्या गोरखधन्धा था!

"मेरे ख्याल से तुम घूंट लगा ही लो।" - राहुल बोला।

"नहीं। शक्रिया।" - चम्पकलाल एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "वह लड़की कौन थी?"

"लड़की! कौन लड़की?"

"जिसका अभी तुमने जिक्र किया था। जिसने तुम्हें खंडहर इमारत में बेहोश पड़े पाया था।"

"ओह! वह लड़की।"

"हां। कौन थी वह?"

"तुम क्यों पूछ रहे हो उसके बारे में?"

"यूं ही। कोई खास वजह नहीं।"

"फिर क्यों पूछते हो?"

"बताने में कोई हर्ज है?"

"शायद हो।"

"नहीं हो।"

"तुम्हें क्या पता?"

चम्पकलाल खामोश हो गया। राहुल उसकी समझ से बाहर था। तो वह एकदम ऐसा काठ का उल्लू मालूम होता था, नशे की वजह से जिसकी रही-सही अक्ल भी मारी गयी हो और कभी वह एक नम्बर का धूर्त लगता था।

राहुल ने विस्की का एक घूंट और पिया। जिस अज्ञात भावना से प्ररित होकर उसने अपने सामने बैठे अजनबी को लड़की के बारे में कुछ भी न बताने की जिद पकड़ी थी, उसे वह खुद भी समझ नहीं पा रहा था। बस वह सिर्फ इतना महसूस कर रहा था कि वर्षा के ख्याल में भी उसके साथ किसी शख्स की हिस्सेदारी होनी चाहिये थी।

चम्पकलाल को लगने लगा था कि अब उसकी वहां और दाल नहीं गलने वाली थी।

"ठीक है।" - वह एकाएक उठ खड़ा हुआ - "मैं चलता हूं।"

राहुल ने बड़े मशीनी अन्दाज में सहमति में सिर हिला दिया।

***

दो घण्टे बाद राहुल फिर प्रिंसेस बार में था।

तब वह नहा-धो आया था लेकिन उससे उसके खस्ताहाल हुलिये में कोई तब्दीली नहीं आयी थी। उसकी शेव बढ़ी हुई थी, आंखे लाल थीं और सफेद वर्दी मैली हो गयी थी। नशे में वह तब भी था लेकिन उसकी चाल या किसी और हरकत से उसकी वैसी हालत का अन्दाजा लगा पाना मुहाल था।

बार में अभी बहुत कम लोग मौजूद थे। लेकिन अपने होटल में तनहा कमरे के हौलनाक माहौल के मुकाबले में वहां उसे फिर भी राहत महसूस हुई।

बार में रोबीरो और मारुतिराव पहले से मौजूद थे।

राहुल को देखते ही रोबीरो अपने स्थान से उठा और उसे अपनी टेबल पर ले आया।

चम्पकलाल उस वक्त बार के आफिस में मौजूद था। वहां वह ऐसे स्थान पर बैठा हुआ था कि अधखुले दरवाजे से उसे आधे से ज्यादा बार दिखाई दे रहा था। उसकी निगाह के दायरे में उस वक्त रोबीरो और मारुतिराव भी थे। उसने राहुल को आते और उनकी मेज पर उनके साथ जमते देखा था।

राहुल बड़े गौर से बारी-बारी उन दोनों की सूरतें देख रहा था।

क्या वे दोनों वो दो जने ही सकते थे जिनका वर्षा ने जिक्र किया था?

चम्पकलाल से मुलाकात के बाद से ही यह सवाल हथौड़े की तरह से उसके जेहन में बज रहा था और उसी के

किसी जवाब की तलाश में वह वापिस प्रिंसेस बार में लौटा था जहां कि रोबीरो और मारुतिराव से मुलाकात हो जाने की उसे पूरी उम्मीद थी।

किन्हीं दो आदमियों में वह भी खंडहर इमारत के सामने मिला था, क्या वे दो जने ही मालूम जोड़ी हो सकती थी ?

"क्या पियोगे ?" - राहुल की निगाहबीनी से विचलित होकर रोबीरो ने पूछा।

"कुछ भी।" - राहुल भावहीन स्वर में बोला - "कुछ भी।"

रोबीरो ने तीन ड्रिंक्स का आर्डर दिया जो कि तुरन्त सर्व हुआ। सबने जाम टकराये। फिर रोबीरो और मारुतिराव के गिलास अभी उनके होंठों से भी नहीं छुये थे कि राहुल ने अपना गिलास खाली करके मेज पर रख दिया था।

"क्या बात है ?" - रोबीरो बोला।

"कौन-सी बात ?" - राहुल बोला।

"आज बड़े अजीब मूड में हो !"

"मैं तो अपने हमेशा वाले मूड में ही हूं।"

"तुम्हारा यार मिला ?"

"कौन-सा यार ?"

"जिसे तुम तलाश कर रहे थे, जिसे तुम्हारी मदद की जरूरत है।"

"समझ लो कि मिल गया।"

"मिल गया ?" - रोबीरो चौंककर बोला।

"समझ लो कि मिल गया।"

"मिल गया ?" - रोबीरो चौंककर बोला।

"समझ लें ?" - मारुतिराव बोला।

"हां। क्योंकि वह आदमी खुद मैं ही था। उस रात मैं ही नशे में इधर-उधर ठोकरें खाता फिर रहा था और समझ बैठा था कि मेरे साथ कोई था।"

"ओह !"

राहुल एकाएक उठ खड़ा हुआ।

"कहां चले ?" - रोबीरो बोला।

"कहीं नहीं। मैं एक मिनट में आया।"

"लेकिन जा कहां रहे हो ?"

"मटका लगाने। बनारसी पान वाले की दुकान पर।" - तब राहुल को यह भी याद आया कि रोबीरो ही वह शख्स था जिसने उसे बताया था कि मटके का नम्बर बाहर सड़क सड़क पर मौजूद बनारसी पान वाले के पास लगाया जा सकता था - "परसों से मैं सात नम्बर पर कुछ पैसे लगाने की कोशिश कर रहा हूं लेकिन नशे में भूल जाता हूं। मैं नम्बर लगाकर अभी पाया।"

वह लम्बे डग भरता हुआ वहां से विदा हो गया।

पीछे बैठे रोबीरो और मारुतिराव उलझनपूर्ण निगाहों से एक-दूसरे को देखते रहे।

राहुल बाहर आया।

पहले उसने बनारसी पान वाले के पास जाकर सचमुच एक हजार रुपया सात नम्बर पर लगाया और फिर वापिस आकर बार के दरवाजे पर मौजूद टेलीफोन बूथ में घुस गया।

वर्षा के पर्स से बरामद जिस विजिटिंग कार्ड की वजह से वह उसके आवास तक पहुंचा था, वह तब भी उसके ओवरकोट की जेब में पड़ा था। उसने वह कार्ड जेब से बाहर निकाला। कार्ड पर उसके हस्पताल और आवास दोनों के नम्बर डायल किया।

उत्तर मिला तो उसे बताया गया कि डाक्टर वर्षा प्रधान का उस रोज आफ था।

उसने सम्बन्ध विच्छेद करके वर्षा का दूसरा नम्बर डायल किया।

कुछ क्षण बाद उत्तर मिला।

"वर्षा !" - राहुल ने पूछा।

"हां" - उत्तर मिला - "कौन ?"

"मैं राहुल बोल रहा हूं। राहुल रामचन्दानी। सेलर। हाथी। गेंडा। रोडरोलर। पहचाना ?"

उत्तर में फोन पर राहुल को एक सिसकारी सुनाई दी। कुछ क्षण खामोशी रही, फिर वह बोली - "कहां से बोल रहे हो ? कैसे हो ? ठीकठाक हो न ? मुझे कैसे फोन किया ?"

"तुम्हारी एक मेहरबानी हासिल करने के लिये।" - राहुल ने केवल आखिरी सवाल का जवाब दिया।

"क्या ?"

"तुम्हें उन दो आदमियों की याद है, परसों रात की तुमने जिन्हें मैंगलोर स्ट्रीट की खंडहर इमारत में देखा था ?"

"हां। क्यों ?"

"अगर तुम उन्हें दोबारा देखो तो उनमें से कसी को पहचान लोगी ?"

"मैं दोनों को परचान लूंगी।"

"गुड।" - उस जवाब से राहुल तनिक उत्तेजित हो उठा - "अब सुनो मैं क्या चाहता हूं ! यहां प्रिंसेस बार में मेरे साथ दो आदमी मौजूद हैं। प्रिंसेस बार समझ गयी न ? जो डिमेलो रोड पर मैंगलोर स्ट्रीट के माथे पर है ? जहां के टेलीफोन बूथ से तुमने मंगलवार रात को फोन किया था।"

"मैं समझ गयी।"

"वर्षा, मैं यह जानना चाहता हूं कि मेरे साथ इस वक्त बार में मौजूद रोबीरो और मारुतिराव नाम के दो आदमी क्या वहीं हैं जिन्हें तुमने परसों रात को खंडहर इमारत में देखा था ?"

"क्यों जानना चाहते हो ?"

"क्योंकि अगर ये दोनों वहीं आदमी हुए तो इनके माध्यम से मेरे उस रात के राही का राज खुल सकता है जो उस रात मेरे साथ था।"

"वह फितूर अभी तुम्हारे जेहन से निकला नहीं ?"

"नहीं निकला। और जब तक इस रहस्य से पर्दा नहीं उठ जायेगा, निकलेगा भी नहीं। मुझे सारी रात सपनों में उस फूटे माथे और फक चेहरे वाले वयक्ति की सूरत दिखाई देती रहती है। मेरे उस रहस्य को जाने बिना अगर मेरा जहाज यहां से लंगर उठा गया तो सारी उम्र मेरे उस रात के राही के याद प्रेत की तरह मेरे पीछे लगी रहेगी।"

"मैं क्या करूं ?"

"तुम सिर्फ एक मिनट के लिये आ जाओ और उन दोनों की सूरतों पर एक बार निगाह डाल लो। टैक्सी द्वारा तुम पन्द्रह मिनट में यहां पहुंच सकती हो। मैं उन्हें आधे घन्टे तक यहां उलझाये रखूंगा। मैं दरवाजे के पास की ही एक टेबल पर उनके साथ मौजूद मिलूंगा। तुमने उन पर सिर्फ एक निगाह डालकर वहां से निकल जाना है। अगर वे दोनों वहीं हों तो सिर्फ इतना करना कि जमीन पर अपना रुमाल गिराकर उसे वापिस उठा लेना। तुम ऐसा नहीं करोगी तो मैं समझ जाऊंगा कि तुमने उन्हें नहीं पहचाना है। ओके ?"

"ओके।"

"तो तुम आ रही हो न ?"

"हां। मैं आधे घन्टे से पहले वहां पहुंच जाऊंगी।"

"शुक्रिया।"

राहुल ने चैन की सांस ली, रिसीवर हुक पर टांगा और बूथ से निकवकर वापिस बार में दाखिल हो गया।

***

वर्षा रिसीवर रखकर वापिस घूमी तो करीब ही कुर्सी पर बैठे अशोक ने पूछा - "वही था ?"

"हां।" - वर्षा सहज भाव से बोली और ड्रैसिंग टेबिल के सामने जाकर अपने खुले बालों में कंघी फिराने लगी।

"उसे तुम्हारा फोन नम्बर कैसे मालूम हो गया ?"

"जब पता मालूम हो तो फोन नम्बर मालूम कर लेना क्या बड़ी बात है !"

"क्या कह रहा था ?"

"कहता था उसने मंगलवार रात वाले दो जनों को ढूंढ निकाला है।"

"क्या कहने ! पहल वह एक जने को ढूंढ रहा था, अब दो जने हो गये। मुझे तो लगता है शराब पी पी कर उसका दिमाग हिल गया है। अब क्या चाहता था वह तुमसे ?"

वर्षा ने बताया।

"यानी कि उसने तुम्हें प्रिंसेस बार बुलाया और तुम चल दी।"

"हां।"

"मैं तुम्हें वहां जाने की इजाजत नहीं दे सकता।"

"तुम इजाजत नहीं दे सकते ! वाट डू यू मीन बाई दैट ?"

"ऐग्जैक्टली वाट आई सैड।"

"अजीब आदमी हो ! कल अगर मैं उसके साथ नहीं गयी थी तो तुम कह रहे थे कि मुझे चले जाना चाहिये था। आज जा रही हूं तो टोक रहे हो। मेरी मदद की उसे कल भी जरूरत थी, आज भी है। बकौल तुम्हारे कल मुझे उस 'बेचारे अजनबी' की मदद करनी चाहिये थी लेकिन आज नहीं करना चाहिये। और यह बात मुझे वह शख्स कह रहा है जो खुद कल आधी रात तक उसकी खातिर बन्दरगाह के इलाके की खाक छानता फिर रहा था।"

"वह मेरी गलती थी। जो गलती हो चुकी हो, उसे दोहराना जरूरी नहीं होता। कल मुझे इस बात का अहसास नहीं हुआ था कि शक्ल से जितना सीधा और शरीफ वह लगता था, असल में उतना नहीं था। अब उसकी तुम्हारी किसी हमशक्ल की कहानी भी मुझे फर्जी लगती है। खूबसूरत लड़कियों से हमदर्दी हासिल करने का यह उसका पुराना आजमाया हुआ स्टण्ट मालूम होता है...."

"कमाल है ! ओवरनाइट तुम उसके इतने खिलाफ हो गये हो !"

"मैं नशेबाज आदमी का भरोसा नहीं कर सकता। ऐसा आदमी नशे में पता नहीं क्या कर बैठे ! ऊपर से साला तुम्हें देखता था तो लगता था जैसे आंखों में कलेजा रखकर देख रहा हो।"

"तुम जल रहे हो।"

"वही समझ लो। तुम मेरी होने वाली बीवी हो। मैं जल रहा हूं, या बेजा जिद कर रहा हूं या बेहूदा निर्णय ले रहा हूं, मैं नहीं चाहता कि तुम उस शख्स से मिलने जाओ। फिर भी गयीं तो बहुत बुरा होगा। इससे ज्यादा साफ शब्दों में मैं और कुछ नहीं कह सकता।"

"उसे मेरी मदद की जरूरत है।"

"और तुम्हारे होने वाले पति को तुम्हारी फर्माबरदारी की।"

"लेकिन..."

"अब फैसला तुम्हारे हाथ में है। तुम किसका कहा मानोगी ? एक नितान्त अजनबी का या अपने होने वाले पति का।"

"तुम्हारी जिद बेजा है।"

"बेजा ही सही।"

"अहमकाना भी।"

"मुमकिन है।"

"विश्वास नहीं होता कि ऐसी बेहूदा बात एक पढा-लिखा, बालिग शख्स कर रहा है।"

"वर्षा, यू आर इनसल्टिंग मी।"

वर्षा ने एक आह भरी। उसने कंघी ड्रैसिंग टेबल पर फेंक दी और पंलग पर ढेर हो गयी।

***

रोबीरो से राहुल का अनोखा व्यवहार छुपा न रहा लेकिन उस व्यवहार की वह कोई वजह न समझ सका। राहुल खामोश रहना या केवल पूछी गयी बात का जवाब देना पसन्द करता था, अब अपनी तरफ से बड़ी नकली-नकली और बनावटी बातें कर रहा था और इस बात के लिये बहुत व्यग्र दिखाई देता था कि वार्तालाप का सिलसिला जारी रहे। रह-रहकर उसकी निगाह बार के दरवाजे की तरफ उठ जाती थी। जैसे पिछले रोज वे राहुल को अपने में उलझाये रखने की कोशिश करते रहे थे, वैसी कोशिश उन्हें आज राहुल करता दिखाई दे रहा था और यह बात रोबीरो को बहुत उलझन में डाल रही थी।

पिछले आधे घन्टे से रोबीरो राहुल को कह रहा था कि क्यों न वे पिछले रोज की तरह गोवा स्ट्रीट में उसके होस्टल के कमरे में चल कर पियें, जवाब में राहुल 'अभी चलते हैं, अभी चलते हैं' कहे जाता था लेकिन चल कर नहीं देता था।

राहुल ने ड्रिंक्स का नया मंगाया और एक गुप्त निगाह बार के पीछे लगी वाल क्लाक पर डाली।

वर्षा को फोन किये हुए एक घन्टा होने को आ रहा था।

अब उसका मन निराशा से भर उठा था। अब उसे लड़की के आने की कोई उम्मीद नहीं रह गयी थी। जो पन्द्रह मिनट में आने वाली थी, वह एक घन्टे में भई नहीं आयी थी तो अब क्या आती।

लेकिन वह आयी क्यों नहीं थी ?

नहीं आना था तो उसने हामी क्यों भरी थी ?

राहुल का उस पर कोई जोर थोड़े ही था ! हामी भरने की जगह वह आने से साफ इन्कार भी तो कर सकती थी।

“अब चलें ?” - रोबीरो ने पूछा।

इस बार राहुल ने एकाएक सहमति में सिर हिलाया और उठ खड़ा हुआ। वे दोनों भी उठे। तीनों बार से बाहर निकल गये।

उन्हें जाता देखकर चम्पकलाल भी आफिस से निकला और उनके पीछे हो लिया। लेकिन जब उसने उन्हें रोबीरो के होस्टल में दाखिल होते देखा तो वह नाउम्मीद होकर वापिस बार में लौट आया।

***

राहुल की बाकी की शाम कैसे गुजरी, यह उसके लिये एक सपना था। बाद में वह भी न याद कर सका कि उन दोनों की सोहबत से रुख्सत ले कर वह अकेला अपने होटल के कमरे में पहुंचा था या पिछले रोज की तरह वे दोनों उसे वहां छोड़ कर गये थे। वह थोड़ी देर सोया था लेकिन फिर बेचैनी का अनुभव करता हुआ उठ खड़ा हुआ था और बाथरूम में जा कर उल्टियां करने लगा था। ऐसा उसने पहले कभी नहीं किया था। जरूर इस बार अति हो गयी थी जो खुद वह भी उस हालत में पहुंच गया था।

पेट से काफी सारी अनपची विस्की निकल जाने के बाद उसे थोड़ी राहत महसूस हुई। उसने अच्छी तरह से हाथ-मुंह धोया और बाथरुम से बाहर निकल आया।

कमरे में जो विस्की की बोतल पड़ी थी, उस में अभी काफी विस्की बाकी थी। जिस चीज ने उसकी तबियत खराब की थी उसने उसी को अपना इलाज माना।

उसने विस्की को एक घूंट पिया।

अब वर्षा के बारे में वह फिर सोचने लगा।

वह प्रिंसेस बार क्यों नहीं पहुंची थी ?

उसने अपने आपको समझाया कि जरूर नहीं था कि उसके न आने का मतलब यह हो कि वह आना नहीं चाहती थी। जरूर दिन में उसकी कोई मजबूरी आड़े आ गयी थी। इसी बात से प्ररित होकर उसने एक बार फिर वर्षा से सम्पर्क करने का फैसला किया।

वह नीचे रिसेप्शन पर पहुचा।

उसने वाल क्लाक पर निगाह डाली।

सात बज चुके थे।

कल उस वक्त वह शिफ पर सवार होगा और कराची के लिए रवाना हो रहा होगा। फिर क्या उसका परसों रात का राही और क्या पूनम की हमशक्ल वर्षा, सब कुछ पीछे रह जायेगा। फिर कभी वह वर्षा को याद करेगा तो मृगतृष्णा के रूप में ही याद करेगा और फिर उसे पी पी कर जान दे देने का एक नया बहाना हासिल हो जायेगा। किसी की मंगेतर के बारे में ऐसा सोचना भी गलत था लेकिन फिर भी वह सोचे बिना रह नहीं पाता था कि वह मन ही मन वर्षा को चाहने लगा था। अपनी उस चाहत से जितनी वह निजात पाने की कोशिश करता था, उतनी ही वह उस पर और हावी होती जाती थी।

सिर्फ चौबीस घन्टे की बात थी। फिर वह शिप पर होगा, शिप समुद्र की छाती रौंदता हुआ आगे बढ रहा होगा और सब कुछ पीछे, बहुत पीछे छूटता जा रहा होगा। जो चौबीस घन्टे बाकी थे, उनमें वह अपनी हर हसरत, हर ख्वाहिश को शराब में घोलकर पी सकता था।

उसने प्रिंसेस बार फोन किया।

पता लगा कि रोबीरो वहां मौजूद था।

राहुल के यूं फोन करने पर उसे बहुत हैरानी हुई।

“क्या बात है ?” - वह बोला - “खैरियत तो है ?”

“खैरियत है।” - राहुल बोला।

“तो फिर फोन कैसे कया ?”

“यह मैं मुलाकात पर बताऊंगा।”

“मुलाकात ?”

“हां। आज नौ बजे तुम और मारुतिराव यहां मेरे होटल में आ जाना। ठीक नौ बजे। पहले मत आना। क्योंकि पहले मैं यहां नहीं होउंगा। मैं अभी कहीं जा रहा हूं और नौ बजे ही लौटूंगा। तुम मुझे बार में मिलना।”

"लेकिन बात क्या है ?"

"बात मुलाकात पर बताऊंगा। आना जरूर। अकेले मत आना। मारुतिराव को साथ लेकर आना। ठीक नौ बजे आना। नौ से पहले न आना। बार में आना, मेरे कमरे में नहीं।"

"लेकिन..."

राहुल ने जान बूझकर सम्बन्धविच्छेद कर दिया।

उसने वर्षा का नम्बर डायल किया।

उत्तर मिला तो उसने औपचारिकता पर समय नष्ट नहीं किया। वह फौरन मतलब की बात पर आ गया।

"मैं जो कुछ तुमसे कह रहा हूं, आखिरी बार कह रहा हूं" - वह बोला - "इसलिये निराश न करना। आज रात नौ बजे अपने होटल के बार में मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगा।"

"सारी" - वह बोली - "मैं नहीं आ सकती।"

"मैं इन्तजार करूंगा।"

"मैं नहीं आ सकती।"

इससे पहले कि राहुल फिर कुछ कह पाता, वर्षा ने लाइन काट दी।

लाइन काटते ही रोबीरो ने राहुल के होटल के नम्बर पर वापिस फोन किया लेकिन मालूम हुआ कि वह वहां से जो चुका था।

वह वापिस अपनी मेज पर पहुंचा।

मारुतिराव शाम के अखबार के पन्ने पलट रहा था।

धोते की बाबत कोई खबर न उसमें थी और न सुबह के अखबार में थी। धोते की लाश अभी भी गायब थी और यह बात अभी भी उनके लिये हैरानी और परेशानी का बायस थी। रोबीरो को चाहे कितनी भी गारन्टी भी कि धोते मर चुका था लेकिन मारुतिराव को तसल्ली तभी होती जबकि लाश बरामद होती। उसे तो हर क्षण यही लगता था कि उन्हें गिरफ्तार करवाने के लिये धोते पुलिस को लेकर आया कि आया।

"कौन था ?" - मारुतिराव ने अखबार बन्द करते हुए पूछा।

"वही सेलर।" - रोबीरो मुंह बिगाड़कर बोला - "नो बजे हमें अपने होटल में बुला रहा है।"

"क्यों ?"

"वजह नहीं बताई उसने लेकिन मेरा दिल गवाही दे रहा है कि होगी कोई बखेड़े वाली बात ही।"

"वह भोला बादशाह क्या बखेड़ा कर सकता है ?"

"पता नहीं।" - रोबीरो एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "साला कितनी विस्की पचा सकता है। कितनी तो पहले से पिये हुए था और कितनी हमारे साथ पी ली। फिर भी देखो तो साले को ! हाथ के हाथ उठकर अपने पैरों पर खड़ा है। कोई और होता तो इतनी विस्की पीने के बाद उसे दो दिन होश न आता।"

"अब इरादा क्या है ?"

"इरादा वही है जो कि वह चाहता है कि हो !"

"मतलब ?"

"हम नौ बजे मिलेंगे उससे।"

***

जब से वर्षा ने सम्बन्धविच्छेद किया था, तभी से वह बार बार घड़ी देख रही थी। उसने राहुल को आने से साफ मना कर दिया था, अशोक की धमकी भी अभी वह भूली नहीं थी, लेकिन फिर भी वह बार बार यही सोच रही थी कि क्या उसे जाना चाहिए था, क्या उसे राहुल की आखिरी दरख्वास्त कबूल करनी चाहिये थी ?

जब भी उसने अपनी अन्तरात्मा से वह सवाल किया, जवाब हां में मिला।

उस जवाब से वह परेशान थी। और हैरान थी कि क्यों उसका जी चाहा था कि वह टेलीफोन रखते ही राहुल के होटल की तरफ रवाना हो जाये ! उस अजनबी ने उसके दिल का ऐसा कौन सा तार छू दिया था कि वह चाह कर भी, इस बात की सख्त जरूरत समझते हुए भी, उसका ख्याल अपने जेहन से निकल नहीं पा रही थी ?

कितनी ही देर वह बुत बनी टेलीफोन के सामने बैठी रही।

तभी टेलीफोन की घन्टी बजी।

अकस्मात हुई उस आवाज से वह यूं चौंकी जैसे किसी ने उसे नश्तर चुभोया हो।

उसने फोन की तरफ हाथ बढाया लेकिन तुरन्त उसे वापिस खींच लिया।

अगर वह फिर राहुल ही हुआ तो ?

लेकिन वह किसी और का फोन भी तो हो सकता था !

जैसे अशोक का।

अपने वर्तमान मूड में वह दोनों से ही बात करने की ख्वाहशमन्द नहीं थी इसलिये उसने फोन न उठाया।

घन्टी थोड़ी देर और बज कर बन्द हो गयी।

कोई पन्द्रह मिनट बाद एक बार फिर घन्टी बजी लेकिन तब भी उसने फोन की तरफ हाथ न बढाया।

जब साढे आठ बज गये तो वह अपने स्थान से उठी।

मुलाकात का निर्धारित वक्त इतने करीब आ जाने पर अब उसे लग रहा था कि जाना तो उसने था ही, उसका इन्कार उसके दिल का फैसला नहीं था। उसके दिल का फैसला यह था कि उस अजनबी ने उसे बुलाया था और उसने जाना था।

उसने कपड़े तब्दील किये और वहां से बाहर निकल पड़ी।

टैक्सी करने के स्थान पर वह बस स्टैंड तक पैदल गयी जहां से कि थोड़ी ही प्रतीक्षा के बाद उसे बस मिल गयी।

वह बस से उतरी तो उसका दिल फिर जोर से उसकी पसलियों के साथ बजने लगा।

क्या उसने गलत फैसला किया था ? - उसने तनिक भयभीत भाव से सोचा - क्या उसे वहां नहीं आना चाहिये था ? अगर अशोक को खबर लग गयी तो ?

एकबारगी तो वह बस स्टैंड की तरफ वापिस भी घूम पड़ी।

लेकिन फिर जी कड़ा करके वह राहुल के होटल की तरफ कदम बढाती रही।

एक दो बार उसे दिशाभ्रम भी हुआ लेकिन वह बिना भटके होटल तक पहुंचने में कामयाब हो गयी।

झिझकते हुए उसने बार में कदम रखा।

बार में मुश्किल से पांच छः जने मौजूद थे।

राहुल उनमें नहीं था।

वह हिम्मत करके बारमैन के करीब पहुंची।

"मैं यहां मिस्टर राहुल रामचन्दानी से मिलने आयी थी।" - वह बोली।

"वो सेलर ?" - बारमैन बोला।

"हां।"

"वो ऊपर अपने कमरे में होगा। यहां तो नहीं आया वो।"

बारमैन का तू-तड़ाक की भाषा में राहुल का जिक्र करना वर्षा को बहुत बुरा लगा। इससे भी साबित होता था कि राहुल ने अपने आवास के लये कितना घटिया ठिकाना चुना था।

"आप पता करा सकते हैं कि मिस्टर राहुल अपने कमरे में हैं या नहीं ?"

बारमैन ने सहमति में सिर हिलाया। उसने एक वेटर को बुलाकर आवश्यक निर्देश दिया।

कुछ क्षण बाद वेटर ने आकर बताया कि राहुल अपने कमरे में नहीं था।

तब पहली बार वर्षा को टाइम देखने का ख्याल आया।

उसने पाया कि अभी नौ नहीं बजे थे।

उसने बारमैन को एक कोल्ड ड्रिंक का आर्डर दिया और जा कर एक कोने की मेज पर बैठ गयी।

एक वेटर उसे कोल्ड ड्रिंक सर्व कर गया जिसे कि उसने छुआ भी नहीं। दरवाजे पर निगाह टिकाये वह प्रतीक्षा करती रही। बार-बार उसे यह ख्याल बेचैन कर रहा था कि वह जगह किसी अकेली महिला के काबिल नहीं थी। उसे चाहिये था कि वह होटल के बाहर सड़क के पार फुटपाथ पर कहीं खड़ी रह कर नौ बजने का इन्तजार कर लेती।

तभी बार का दरवाजा खुला।

वर्षा की आंखों में आशा की चमक पैदा हुई जो कि फौरन ही गायब हो गयी।

खुले दरवाजे से भीतर कदम रखने वाला शख्स राहुल नहीं था।

लेकिन आगन्तुक उसके लिये नितान्त अजनबी भी नहीं था।

उस मोटे ठिगने शख्स को वह एक बार पहले भी देख चुकी थी।

परसों रात मैंगलोर स्ट्रीट के खंडहर मकान में।

उसके दुबले-पतले, बांस जैसे लम्बे जोडीदार के साथ।

वर्षा ने कोल्ड ड्रिंक का गिलास उठा कर अपने चेहरे के सामने कर लिया और दरवाजे की तरफ से पहलू बदल

लिया।

वहां मौजूद वह इकलौती महिला थी इसलिये आगन्तुक का ध्यान उसकी तरफ जाना स्वाभाविक जो था।

मारुतिराव की सरसरी निगाह पैन होती हुई सारे बार में फिर गयी।

राहुल वहां नहीं था।

उसने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली।

नौ बजने में अभी कुछ मिनट बाकी थे।

उसकी निगाह एक क्षण के लिए अकेली बैठी युवती पर ठिठकी और फिर बार काउंटर की तरफ फिर गयी।

बारमैन उसे अपलक देख रहा था। मारुतिराव से निगाह मिलते ही उसने निगाह झुका ली और कांउटर पर डस्टर रगड़ने लगा।

मारुतिराव काउंटर पर पहुंचा। वह एक स्टूल पर यूं तिरछा बैठ गया कि पीछे हाल की तरफ भी झांका जा सकता। उसने ड्रिंक का आर्डर दिया।

वर्षा से यह कोई छुपने वाली बात नहीं थी कि मारुतिराव की निगाह बार बार उसकी तरफ उठ रही थी। जरूर उसने भी उसे पहचान लिया था। उसका जी चाह रहा था कि वह उठकर वहां से भाग खड़ी हो।

अगर उस वक्त वहां राहुल पहुंच जाता तो उसे रत्ती भर भी डर न लगता। उस देव समान वयक्ति की मौजूदगी में किसकी मजाल थी जो उस पर टेढी निगाह भी डाल सकता!

लेकिन राहुल वहां नहीं था जब कि तब तक पूरे नौ बज चुके थे। कहीं उसे वहां बुलाकर वह खुद यह बात भूल तो नहीं गया था? शराब पी कर जैसा गैरजिम्मेदार और गायबख्याल वह हो जाता था, उसमें यह कोई नामुमकिन बात तो न थी।

उसने जल्दी से कोल्ड ड्रिंक का गिलास खाली किया।

मारुतिराव ने बारमैन से ड्रिंक हासिल किया और उसे लेकर दरवाजे के करीब की एक खाली मेज पर जा बैठा।

वर्षा का दिल धक्क से रह गया। क्या वह उसी की वजह से दरवाजे के करीब जा बैठा था? अब वह उसके करीब से गुजरे बिना दरवाजे से बाहर नहीं निकल सकती थी।

काश, उस वक्त राहुल वहां आ जाता और वह अपनी सारी दुश्वारियों से निजात पा जाती।

फिर उसे ख्याल आया कि उसने तो राहुल को साफ मना कर दिया था कि वह वहां नहीं आने वाली थी। अब अगर वह यहां नहीं था तो उसकी क्या गलती थी? वह खामखाह उस पर इलजाम लगा रही थी।

लेकिन उसके इनकार के बावजूद उसने कहा था कि वह इन्तजार करेगा।

काश, उसने ऐसा किया होता।

उसने वेटर को बुलाकर कोल्ड ड्रिंक का बिल अदा किया। वह उठ खड़ी हुई और भरसक हिम्मत जुटाती हुई दरवाजे की तरफ बढी।

अभी उसने एक ही कदम आगे बढाया था कि वह ठिठक गयी।

दरवाजा खुल रहा था।

आशापूर्ण नेत्रों से वह दरवाजे की तरफ देखनी लगी।

नशे में झूमते राहुल ने भीतर कदम रखा। उसकी आंखों में बिलौरी चमक थी और लगता नहीं था कि उसे मालूम था कि उसके पांव कहां पड़ रहे थे। नशे की उस बुरी हालत में भी उसकी निगाहों का मरकज बार था।

वर्षा को उस पर तरस आने लगा। कितना उजड़ा और उम्रदराज लग रहा था उसका चेहरा उस वक्त। उसका वेताकत, थका-हारा जिस्म उस वक्त उसकी नाकारा, बेमानी जिन्दगी को सलीब की तरह ढोता मालूम हो रहा था। उसके चेहरे से उस वक्त कोई भाव पढा जा सकता था तो वह नाउम्मीदी का था।

और उसकी उन नाउम्मीदी के लिये जरूर वह जिम्मेदार थी जिसने उसकी फरियाद को दो बार ठुकराया था।

मारुतिराव ने बार की तरफ बढते राहुल को आवाज लगाई।

राहुल घूमा। लेकिन उसकी निगाह बैठे हुए मारुतिराव से पहले आगे बढने को तत्पर थोड़ी दूर खड़ी वर्षा पर पड़ी।

एक क्षण में राहुल के चेहरे के भावों में ऐसा परिवर्तन आया जैसे बिजली का स्विच ऑन होते ही घुप्प अन्धेरा रोशनी में तब्दील हो जाता है। उसकी आंखों में एक अनोखी चमक पैदा हुई और चेहरे पर आहलाद के ऐसे भाव पैदा हुए जैसे किसी बच्चे को उसका पसन्दीदा खिलौना मिल गया है। उसके होंठों पर एक इन्तहाई मधुर, मीठी मुस्कराहट पैदा हुई। उस वक्त उसकी हालत ऐसे शख्स जैसी थी जिसे उस क्षण उसकी घोर तपस्या का का फल मिल रहा हो।

"तुम आ गयीं।" - वह बड़ी कठिनाई से बोल पा रहा था - "तुमने कहा था तुम नहीं आओगी फिर भी तुम आ गयीं। ...मैंने तुम्हें कई बार फोन किया। ...तुम आ गयीं। लेकिन अब मैं तुम्हें ठीक से देख भी नहीं पा रहा।"

उसने आगे कदम बढाया।

वर्षा को सिर्फ लगा कि वह गिरेगा लेकिन आगे बढता हुआ राहुल सचमुच ही धड़ाम से फर्श पर गिरा। उसके विशाल शरीर की धमक से जैसे बार की दीवारें हिल गयीं। सब हक्के-बक्के से ऊधर देखने लगे। वह मुंह के बल गिरा था और उसका सिर वर्षा से सिर्फ इतना परे था कि वह झुक कर उसे छू सकती थी।

बारमैन सहित दो-तीन लोग लपक कर उसके करीब पहुंचे।

अन्य लोगों में मारुतिराव भी था।

बारमैन ने झुक कर राहुल का मुआयना किया।

"यह ठीक है।" - बारमैन बोला - "सिर्फ नशे में है। टुन्न है एकदम।"

मारुतिराव ने झुक कर राहुल की नब्ज देखी। फिर उसने सिर उठाया और वर्षा से सवाल किया - "तुम इसे जानती हो ?"

सिर्फ इस अहसास से ही वर्षा आतंकित हो उठी कि वह शख्स उससे मुखातिब था। उसके मुंह से बोल न फूटा।

मारुतिराव बहुत हैरान हुआ।

"तुम इस शख्स को जानती हो, बाई ?" - उसने हैरानी और उलझनभरे स्वर में अपना सवाल दोहराया।

"नहीं।" - वर्षा एकाएक जोर-जोर से इन्कार में सिर हिलाती हुई बोली - "मैं नहीं जानती इसे। मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा।"

"यह अभी होश में आ जायेगा।" - बारमैन कह रहा था।

लेकिन अब वर्षा की तव्जजो राहुल की तरफ नहीं थी। उसकी तवज्जो उस वक्त किसी की भी तरफ नहीं थी।

सिवाय मारुतिराव के।

उसे लग रहा था कि उस वक्त जैसे उसके और मारुतिराव के अलावा वहां कोई भी नहीं था। जिस आदमी को परछाई से भी वह बचना चाहती थी, वह जब उसके न केवल इतना करीब था बल्कि उससे मुखातिब भी था।

बारमैन और दो शख्स और मिलकर राहुल को उसके पैरों पर खड़ा करने की कोशिश कर रहे थे। प्रत्यक्षतः इस काम में मारुतिराव भी उनकी मदद कर रहा था लेकिन आतंकित वर्षा को वह महज दिखावा करता लग रहा था। उसे लग रहा था कि मारुतिराव की मुकम्मल तवज्जो उसकी तरफ, सिर्फ उसकी तरफ, थी।

जब कि हकीकतन ऐसी बात नहीं थी।

मारुतिराव उसे सिर्फ उतनी ही दिलचस्पी से देख रहा था जितनी से कोई किसी खूबसूरत नौजवान लड़की को देखता है। अलबत्ता दो बातों से वह हैरान जरूर था। एक तो जब उसने कहा था कि वह राहुल को नहीं जानती थी तो वह साफ-साफ झूठ बोलती मालूम पड़ रही थी। दूसरे वह उससे आतंकित थी।

जिस लड़की की कभी जिन्दगी में सूरत नहीं देखी थी उसने, वह भला क्यों आतंकित थी उससे ?

सबने मिल कर राहुल को एक कुर्सी पर इस प्रकार बिठा दिया कि वह उस पर से लुढक कर नीचे न गिरने पाये।

"यह इसी होटल में ठहरा हुआ है।" - बारमैन बोला।

"तो फिर इसे इसके कमरे में पहुंचवाओ। - कोई बोला।"

"मैं इन्तजाम करता हूं।" - बारमैन बोला।

और वह उस पतले गलियारे की तरफ बढ चला जो बार को होटल से जोड़ता था।

वर्षा ने मारुतिराव को उसकी तरफ पीठ फेर कर घड़ी की तरफ निगाह उठाते देखा। उस क्षण का फायदा उठा कर वर्षा दरवाजे की तरफ बढी।

बाहर से करीब आती एक कार की आवाज आयी।

क्या अशोक वहां पहुंच गया था ? - उसने आशापूर्ण भाव से सोचा - शायद वह उसके होटल में गया हो और उसने यह अन्दाजा लगा लिया हो कि जरूर वह राहुल से मिलने उसके होटल में गयी थी।

उस घड़ी अशोक वहां आकर उस पर बुरी तरह से खफा भी होता तो वह खुश ही होती।

अशोक की अपेक्षा में वह एक क्षण को ठिठकी लेकिन प्रत्यक्षतः कार अशोक की नहीं थी। वह कार तो होटल के आगे बिना रुके गुजर गयी थी।

उसने फिर कदम आगे बढाया। वह दरवाजे पर पहुंची। दरवाजा खोलने के लिए उस ने हाथ आगे बढाया तो दरवाजा बाहर से खुल गया और हड़बड़ी में भीतर दाखिल होता एक दुबला-पतला व्यक्ति उससे टकराते-टकराते

बचा।

उस व्यक्ति के चेहरे पर निगाह पड़ते ही वह और भी आतंकित हो उठी।

नवागन्तुक बार में पहले से मौजूद मोटे का जोड़ीदार था। एक क्षण के लिये दोनों की निगाहें मिलीं।

फिर वर्षा तेजी से उसके करीब से गुजरी और बार से बाहर निकल गयी।

रोबीरो हड़बड़ाया-सा लड़की के पीछे बन्द होते दरवाजे को देखता रहा।

फिर उसने घूम कर बार में निगाह डाली।

उसने राहुल और मारुतिशव को कोने की एक मेज पर बैठे देखा। राहुल का सिर उसकी छाती पर झुका हुआ था और साफ मालूम हो रहा था कि उस घड़ी वह दीन दुनिया से बेखबर था।

रोबीरो लपक कर उसके करीब पहुंचा।

"वह छोकरी यहां क्या कर रही थी ?" - रोबीरो व्यग्र भाव से बोला।

"कौन छोकरी ?" - मारुतिराव बोला।

"जो अभी- अभी यहां से गयी है !"

"मुझे क्या पता यहां क्या कर रही थी वो ?"

"अबे, साले मोटे, वह वही लड़की थी।"

"कौन सी लड़की ?"

"जो कल रात मैंने खंडहर इमारत के भीतर अपने ब्वाय फ्रेंड के साथ देखी थी और या बाद में जिनकी कार में हमने वह तीसरा शख्स देखा था जिसे तू धोते बता रहा था।"

"वह वो लड़की थी ?"

"हां।"

"वह तो हमें धोते के बारे में बता सकती थी।"

"अगर वह धोते था।"

"कोई तो वह था। उसके बारे में भी तो..."

"उठकर खड़ा हो, बेवकूफ।"

मारुतिराव हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ।

राहुल, जो उसके कन्धे के सहारे कुर्सी पर टिका हुआ था, सहारा हटते ही सामने मेज पर ढेर हो गया।

मारुतिराव मेजों से उलझता, गिरता, पड़ता, चीते जैसी फुर्ती से बाहर को लपकते रोबीरो के पीछे भागा।

दोनों बगोले की तरह बार से बाहर निकले।

अब उन दोनों की वहां मौजूदगी से वर्षा ऐसी थर्राई थी कि वह बार से बाहर निकलते ही सरपट भागने लगी थी। वह जल्दी से जल्दी उस नामुराद जगह से ज्यादा से ज्यादा दूर निकल जाना चाहती थी। थोड़ा आगे आने के बाद वह रोशनियों से जगमगाती मेन रोड को छोड़कर एक अपेक्षाकृत संकरी गली में दाखिल हो गयी तो उसे तनिक सहत महसूस हुई।

लेकिन वह राहत वक्ती थी।

अब उसे अपने पीछे दूर कहीं से भागते कदमों की आवाज आ रही थी।

वह और तेजी से भागने लगी।

रात के सन्नाटे में उसे खुद अपने कदमों की आवाज नगाड़े पर पड़ती चोट जैसी मालूम हो रही थी। हर क्षण उसे लग रहा था कि अभी किसी ने पीछे से आकर उसकी गरदन दबोची कि दबोची।

पीछे से आती कदमों की आहट कभी गायब हो जाती थी तो कभी फिर सुनाई देने लगती थी।

वह एक और गली में दाखिल हुई। उस गली के दहाने पर एक चौड़ी सड़क थी जिसके आगे रेलवे क्रासिंग था। क्रासिंग का फाटक बन्द था और बन्द फाटक के आगे रेलवे लाइन पर एक मालगाड़ी खड़ी थी।

तभी पीछे एक मोड़ काट कर एक कार उस सड़क पर प्रकट हुई। कार की हैडलाईट्स की रोशनी फाटक तक बाखूबी पहुंच रही थी। रोशनी से घबरा कर उसने पीछे देखा तो उसकी आंखें चौंधिया गयी। बड़ी कठिनाई से वह कार पर अपनी निगाह फोकस कर पायी तो उसने पाया कि वह एक टैक्सी थी जिसकी अगली सीट पर तीन जने बैठे थे। एक शायद टैक्सी ड्राइवर था और बाकी दो जरूर वही दोनों थे।

उसे लगा कि उस पर रोशनी पड़ते ही टैक्सी की रफ्तार जैसे एकाएक तेज हो गयी थी।

उसके मुंह से एक भयभरी सिसकारी निकली और वह फाटक पर चढने की कोशिश करने लगी। अपनी हड़बड़ी

और घबराहट में उसे यह तक न सूझा कि फाटक की बगल से ही पैदल चलने वालों के लिए निकासी का रास्ता था। फाटक पर चढ कर वह परली तरफ उतरने लगी तो उसकी सैंडिल की एड़ी कहीं अटकी और वह धड़ाम से नीचे गिरी । सैंडिल उसके पांव से उतर गयी। उसने जल्दी से दूसरी सैंडिल भी उतार दी और उठ खड़ी हुई।

टैक्सी अब फाटक से कुछ ही गज दूर रह गयी था।

उसने व्याकुल भाव से मालगाड़ी के दोनों सिरों की तरफ निगाह दौड़ाई।

मालगाड़ी इतनी लम्बी थी कि अन्धेरे में पता नहीं लग रहा था कि उसका इंजन वाला रुख किधर था और पूंछ किधर थी। मालगाड़ी अभी तो खड़ी थी लेकिन किसी भी क्षण चल सकती थी।

पीछे टैक्सी फाटक के ऐन सामने आ कर रुकी। टैक्सी का दरवाजा खुला और भड़ाक से बन्द हुआ। कोई जोर से चिल्लाया। चिल्लाकर उसने क्या कहा, यह उसके पल्ले न पड़ा लेकिन उसका असर वर्षा पर यह हुआ कि वह अंजाम की परवाह किये बिना मालगाड़ी के एक डिब्बे के नीचे घुस गयी।

उकड़ू हो कर रेलवे लाइन पार करने की कोशिश में उसके घुटने छिल गये। लेकिन अपने सामने मुंह बाये खड़ी मौत की दहशत में उसे कुछ महसूस तक न हुआ। मालगाड़ी एकाएक चल पड़ सकती थी और वह उसके नीचे कटकर मर सकती थी। मालगाड़ी से वह बच जाती तो उसके पीछे आ रहे बदमाश उसे दबोच सकते थे।

वह रेलवे लाइन के पार पहुंची।

झुके-झुके ही उसने घूम कर पीछे देखा तो पाया कि दोनों आदमी फाटक पार कर भी चुके थे।

वह सीधी हुई। उसने अपने सामने सड़क पर निगाह डाली। उन दोनों से बचने के लिये उन सीधी सड़क पर वह कितनी दूर भाग सकता थी।

उसकी पहले से उखड़ती सांस उसे कह रही थी कि और भागना अब उसके बस की बात नहीं थी।

कुछ सोच कर सड़क पर भाग निकलने के स्थान पर वह मालगाड़ी के साथ साथ रेलवे लाइन पर भागने लगी।

पांच-छः डिब्बे गुजर जाने के बाद मालगाड़ी में आगे खुले डिब्बों की कतार शुरू हो गयी।

वह ठिठकी। उसने घूम कर पीछे देखा।

एक आदमी उसके देखते-दखते डिब्बे के नीचे से बाहर निकला।

वह डिब्बे की तरफ घूमी।

खुले डिब्बे के पहलू में एक लोहे की जंजीर लटक रही थी।

एकाएक हाथ बढा कर उसने वह जंजीर थाम ली। जंजीर के सहारे वह किसी प्रकार गिरती-पड़ती डिब्बे में चढ़ने में कामयाब हो गयी।

डिब्बे के भीतर से सावधानी से सिर निकालकर उसने सामने फाटक की तरफ झांका तो उसने दोनों को मालगाड़ी के पहलू में खड़े सामने सड़क की तरफ देखते पाया।

क्या उन्हें सूझ सकता था कि वह सड़क पर नहीं भागी थी ?

क्या वे उसकी तलाश स्थिर खड़ी मालगाड़ी में करनी शुरू कर सकते थे ?

क्यों न वहीं बैठी रहने की जगह वापिस उस तरफ उतर जाये जिधर से कि वह आयी थी ?

वह डिब्बे के दूसरे पहलू में पहुंची।

उधर उसने पाया कि टैक्सी की हैडलाइट्स अभी भी आन थीं और उसका ड्राइवर टैक्सी और फाटक के बीच में खड़ा था।

तभी एकाएक मालगाड़ी पटरियों पर सरकने लगी।

वह वापिस पहले वाली साइड में पहुंची और उसने बाहर झांका।

वे दोनों आदमी उसे दिखाई न दिये।

कहां गये वे ?

वे आगे सड़क पर भाग निकले थे या उसी सड़क पर भाग निकले थे या उसी की तरह मालगाड़ी के किसी डिब्बे में चढ गये थे ?

कहना मुहाल था।

गाड़ी रफ्तार पकड़ने लगी।

ठण्डी हवा में ठिठुरती, खाली, खुले डिब्बे में वह उकड़ूं हो कर बैठी रही।

हर क्षण उसे लगता था कि अभी बगल के बन्द डिब्बे की छत पर से उन दोनों में से कोई वहां आन कूदेगा और आ कर उसका गला दबोच लेगा।

ऐसा कुछ न हुआ।
मालगाड़ी निर्विघ्न आगे बढती रही।
उन बदमाशों की तरफ से अपेक्षित खतरे से वह तनिक आश्वस्त हुई तो अब उसे एक नया सताने लगा।
वह जा कहां रही थी ?
वह मालगाड़ी उसे कहां ले जाने वाली थी ?
अगर वह किसी बियावान जगह पर रुकी तो क्या उसकी नीचे उतरने की हिम्मत होगी ?
इसी उधेड़बुन में लगी, आशंकित, आतंकित वर्षा गठड़ी बनी डिब्बे के फर्श पर बैठी रही।
बन्दरगाह के इलाके से चली मालगाड़ी दादर आ कर रुकी।

***

रोबीरो और मारुतिराव लड़की को पकड़ पाने में नाकामयाब हो कर सरताज होटल वापिस लौटे तो उन्हें मालूम हुआ कि उनकी गैरहाजिरी में राहुल को उसके कमरे में पहुंचाया जा चुका था।
वे सीढियों की तरफ बढे।
"लड़की फूट कहां गयी ?" - मारुतिराव बार-बार बड़बड़ा रहा था।
"अबे, चुप कर, साले।" - रोबीरो भुनभुनाया।
"बार में वह शर्तिया उस सेलर से ही मिलने आयी थी।"
"क्यों ?"
"कोई तो वजह होगी।"
"तू तो कह रहा था कि वह कहती थी कि वह राहुल को जानती तक नहीं थी।"
"वह झूठ बोल रही थी। मेरा दावा है कि वह झूठ बोल रही थी। मेरे सामने राहुल ने उससे बात की थी। अगर वह राहुल को नहीं जानती थी तो राहुल उसे कैसे जानता था ?"
"तो फिर तभी क्यों नहीं दबोचा था तूने उसको ?"
"तब मुझे पता जो नहीं था कि वह लड़की कौन थी !"
"अब क्या पता है तुझे ?"
"अब पता लगा सकता है। वह सेलर से मिलने आयी थी। लड़की हमें झांसा दे कर फूट गयी है लेकिन सेलर अभी भी यहीं है। वह...."
"चुप।"
राहुल के कमरे का दरवाजा खोल कर वे भीतर दाखिल हुए।
राहुल दीनदुनिया से बेखबर पंलग पर चित लेटा हुआ था और बड़ी अजीबोगरीब आवाज में खर्राटे भर रहा था।
उन्होंने बड़ी बारीकी से कमरे की तलाशी ली।
कुछ हासिल न हुआ।
उन्होंने उसकी जेबों की तलाशी ली।
एक जेब में उन्हें सौ-सौ के नोटों का मोटा पुलन्दा मिला।
मारुतिराव के मुंह से सीटी निकल गयी।
"एक मामूली सेलर के पास इतना पैसा !" - वह मन्त्रमुग्ध स्वर में बोला।
"यह सेलर है लेकिन लगता है कि मामूली नहीं।" - रोबीरो बोला।
"यह सारा रोकड़ा पर कर दें ?"
"खबरदार !"
"काहे को खबरदार ?"
"होटल वालों को मालूम है कि उसके कमरे में हम गये थे। यह होश में आकर अपना रोकड़ा गायब पायेगा तो फौरन समझ जायेगा कि यह हमारी करतूत थी।"
"तो क्या हुआ ?"
"तो यह हुआ कि यह हमें ढूंड निकालेगा। मेरा वो इसने घर भी देखा है। हम इस राक्षस के हत्थे चढ गये तो मार-मार कर भुस भर देगा यह हमारे में।"
"हम इसके हत्थे चढेंगे तभी तो ?"

"क्या मतलब ?"

"इसने तो कल शाम को अपने जहाज पर चढ जाना है। कल तक के लिए हम कहीं गायब हो जाते हैं।"

"अच्छा ! और हमारी गैरहाजिरी में धोते की वजह से अगर कोई बवाल खड़ा हो गया तो उसे कौन भुगतेगा ? हम गायब होंगे तो हमें खबर कैसे लगेगी उसकी ? अनजाने में ऐसी-तैसी नहीं फिर जायेगी हमारी !"

मारुतिराव खामोश रहा।

"रोकड़ा वापिस रख।"

उसने नोटों का पुलन्दा वापिस सहुल की जेब में डाल दिया।

"बाकी जेबें टटोल।"

उसने ऐसा ही किया।

एक जेब से उसने वर्षा का विजिटिंग कार्ड बरामद किया।

उसने कार्ड रोबीरो को दिखाया।

"डाक्टर वर्षा प्रधान।" - रोवीरो ने कार्ड पर से पढा - "मिसेज ग्रेज गैस्ट हाउस। भायखला। बम्बई। यह जरूर उस लड़की का कार्ड है। "

"कैसे ?"

"यह अलग से उसकी जेब में पड़ा है।"

"इसने कहा था कि बम्बई में यह पहली बार आया था। यहां और कौन जानता होगा इसे ?"

"लड़की भी कैसे जानती होगी ?"

"किसी न किसी तरह तो जानती ही होगी !"

"जरूरी नहीं।"

"जरा भौंकना बन्द कर और मुझे सोचने दे।"

मारुतिराव चुप हो गया।

कार्ड हाथ में लिए रोबीरो कुझ क्षण यूं खड़ा रहा जैसे उसे लकवा मार गया हो।

कुछ क्षण बाद उसकी तन्द्रा टूटी। उसने कार्ड वापिस राहुल की जेब में डाल दिया और बोला - "इस होश में लाते हैं।"

"कैसे ? - मारुतिराव बोला।"

"बाथरूम से पानी ले कर आ।"

मारुतिराव बाथरूम से ठंडे पानी का मग भर लाया। रोबीरो के संकेत पर उसने राहुल के मुंह पर पानी के छीटे मारने आरम्भ किये।

छींटों का राहुल पर सिर्फ इतना असर हुआ कि वह तनिक कुनमुनाया और उसने करवट बदल ली।

"सान्ता मारिया !" - रोबीरो असहाय भाव से बोला - "थोड़ी बहुत से तो इस हालत में पहुंचने वाला आदमी यह है नहीं।"

"जरूर बैरेल में डुबकी लगाकर आया है कहीं से।" - मारुतिराव बोला।

"राहुल !" - रोबीरो उसे झिंझोड़ता हुआ बोला - "वह लड़की कौन थी ? कौन थी वह लड़की ?"

जवाब में राहुल कुछ बुदबुदाया जो कि रोबीरो उसके मुंह के पास कान ले जाकर ही सुन सका।

"यह वर्षा-वर्षा भज रहा है।" - रोबीरो बोला।

"पता नहीं यह उसी लड़की का नाम ले रहा है" - मारुतिराव बोला - "या वर्षा नाम की किसी और लड़की के सपने ले रहा है ?"

"मालूम पड़ जायेगा।"

"कैसे ?"

"भायखला चलो।"

तुरन्त वे दोनों वहां से विदा हो गये।

पीछे पलंग पर पड़ा राहुल ठंडे पानी के छीटों से डिस्टर्व हुई नींद की वजह से कितनी ही देर करवटें बदलता रहा। उसके भीतर कहीं से यह आवाज उठ रही थी कि उस वक्त उसे बेहोश नहीं पड़ा होना चाहिए था लेकिन अपनी नशे से बद् हुई हालत में वह उस आवाज को सुनने में असमर्थ था। एक बार वह थोड़ा-सा उठ कर बैठा भी लेकिन फौरन ही वापिस पलंग पर ढेर हो गया और पूर्ववत् खर्राटे भरने लगा।

***

घर पहुंच कर वर्षा ने अशोक को फोन किया तो वह आंधी तूफान से बातें करता हुआ वर्षा के पास पहुंचा।

वर्षा की खस्ता हालत देख कर और उसकी आपबीती सुनकर वह भौंचक्का रह गया। उसके हवास अभी भी उड़े हुए थे और वह अभी भी कांप रही थी। यह जानकर कि उसके मना करने के बावजूद वर्षा राहुल से मिलने गयी थी, उसे खफा होना चाहिए था लेकिन उस घड़ी उसने उस बात का ख्याल तक न किया और वह उसे अपने पहलू में खींच कर सान्तवना देने लगा।

कुछ देर बाद वह नार्मल हुई तो उसने सब से पहले वर्षा के हाथ पांव धुलवाये, उसके छिले हुए घुटनों पर ऐन्टीसैप्टिक लगाया और उसे कपड़े बदलने को कहा।

फिर खुद उसने कॉफी बनाई।

"तुम भागीं क्यों ?" - फिर उसने पूछा - "वो लोग बार में तुम्हारा क्या बिगाड़ सकते थे ? तुम बारमैन को ही कहतीं कि वह तुम्हें टैक्सी मंगवा देता और उस पर सवार होकर यहां आ जातीं।"

"मैं बहुत डर गयी थी" - वह बोली - "वहां पहुंच चुकने के बाद मुझे लगा था कि मैं ऐसी जगह आ गयी थी जहां कि रात के वक्त किसी लड़की को नहीं आना चाहिए था। मुझे तो वहां मौजूद सभी जने अपने खिलाफ और उन बदमाशों के हिमायती लग रहे थे। वहां राहुल मेरी हिफाजत करने के काबिल नहीं था। उन हालात में मुझे वहां से भाग खड़ा होना ही सूझा था।"

"यह पक्की बात है कि वे दोनों थे तुम्हारी ही फिराक में ?"

"हां।" - वर्षा के शरीर ने जोर से झुरझुरी ली - "हां।"

"चाहते क्या थे वे ?"

"मुझे मार डालना चाहते थे, और क्या चाहते थे ?"

"लेकिन क्यों ?"

"मुझे क्या पता, क्यों ?" - वह एक क्षण ठिठकी और बोली - "अशोक, सारी बात का रिश्ता मंगलवार रात की घटना से जरूर है।"

"ऐसा कैसे कह सकती हो तुम ?"

"क्योंकि वे दोनों आदमी वही थे जिन्हें मैंने मंगलवार रात को खंडहर इमारत में भी देखा था।"

"लेकिन वहां उन्होंने तो तुम्हें नहीं देखा था ?"

"नहीं, मुझे उन्होंने नहीं देखा था।"

"फिर भी वे दोनों या उनमें से एक तुम्हें पहचानता था ?"

"हां।"

"ऐसा कैसे हो सकता है ?"

"वर्षा खामोश रही। उसने काफी का एक घूंट पिया।"

"इस बार तो तुमने उन दोनों को अच्छी तरह से देखा होगा ?"

"हां।" - वह बोली।

"उनका हुलिया बयान करो तो।"

वर्षा ने किया।

"राहुल उन्हें जानता था ?"

"लम्बे वाले का मुझे नहीं पता लेकिन जो मोटा ठिगना आदमी पहले बार में आया था और बाद में जिसने गिरे हुए राहुल को सम्भालने वालों की मदद की थी, वह शर्तिया उसे जानता था।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"राहुल के बार में दाखिल होते ही उस आदमी ने राहुल को नाम लेकर पुकारा था।"

अशोक खामोश हो गया। वह चुपचाप कॉफी की चुस्कियों लेने लगा। उसे अभी भी मुकम्मल तौर से विश्वास नहीं था कि कोई दो जने वर्षा की जान ले लेने की हद तक उसके पीछे पड़े थे।

"तुम्हें" - एकाएक वह बोला - "यहां अकेले डर नहीं लगेगा ?"

"डर ?" - वर्षा सकपकायी - "यहां ?"

"हां।"

"यहां डर का क्या काम ? वे लोग यहां थोड़े ही आ सकते हैं ? उन्हें क्या पता कि मैं कौन हूं और इतने बड़े बम्बई

शहर में कहां रहती हूं ?"

"फिर भी अगर..."

"तुम फिर कहोगे कि मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे यहां चलूं ?"

"हां। इस बार मेरी दरख्वास्त कबूल करो तो..."

"दरख्वास्त नामंजूर। तुम्हारे घर में एक ही बार जाउंगी।"

"शादी के बाद ?"

"हां।"

"बहुत जिद्दी हो।"

वह खामोश रही।

"ठीक है फिर" - वह अपना कॉफी का कप एक ओर रखता हुआ उठ खड़ा हुआ - "मैं चलता हूं।"

वर्षा ने सहमति में सिर हिलाया।

"सुबह मैं तुम्हें पुलिस स्टेशन ले कर चलूंगा।"

"ठीक है।"

अशोक वहां से विदा हो गया।

तब सवा बारह बजे थे।

***

कोई साढे बारह बजे जब फोन की घन्टी बजी तो सोने की कोशिश करती वर्षा ने यही समझा कि अशोक ने घर पहुंच कर उसको आश्वासन देने के लिए फोन किया था।

लेकिन फोन अशोक का नहीं था। दूसरी ओर से आती आवाज उसने पहले कभी नहीं सुनी थी।

"सुलोचना चित्रे !" - फोन पर कोई पूछ रहा था।

"रांग नम्बर।" - वह बोला - यहां कोई सुलोचना चित्रे नहीं रहती।"

"यह मिसेज ग्रे का गैस्ट हाउस नहीं है ?"

"है। लेकिन यह नम्बर गैस्ट हाउस का नहीं, मेरा पर्सनल है।"

"ग्राउन्ड फ्लोर के रूम नम्बर पांच में ?"

"नहीं फर्स्ट फ्लोर के रूम नम्बर में सात में।"

"शायद सुलोचना चित्रे इस रूम में किसी की रूममेट हो !"

"नहीं। मैं यहां अकेली रहती हूं।"

"आपका नाम क्या है ?"

"आप कौन हैं ?"

एकाएक बिना किसी पूर्वाभास के लाइन कट गयी।

वर्षा रिसीवर हाथ में दबाये पलंग पर स्थिर बैठी रही।

क्या मतलब था उस टेलीफोन काल का ? कहीं उस काल में कोई घोटाला तो नहीं था ? क्या वह अशोक को टेलीफोन करके उस काल के बारे में बताये ?

उसने ऐसा न करने का ही फैसला किया।

वह बेचारा अभी मुश्किल से घर पहुंचा होगा, उसकी काल से फिक्रमन्द होकर कहीं वह फिर वापिस न दौड़ा चला आये।

उसने रिसीवर क्रेडल पर रख लिया। फिर कुछ सोचकर वह अपने स्थान से उठी और कमरे की उस खिड़की के करीब पहुंची जो बाहर सड़क की तरफ खुलती थी। उसने खिड़की का पर्दा थोड़ा-सा सरकाया और उनकी ओट में से बाहर झांका।

नीचे उसकी खिड़की के ऐन सामने सड़क के पार फुटपाथ पर एक टेलीफोन बूथ था। काल उस बूथ से आयी थी, ऐसा सोचने की उसके पास कोई वजह नहीं थी लेकिन फिर भी उसने उस बूथ की तरफ निगाह दौड़ाई।

एक आदमी बूथ से बाहर निकल रहा था।

कद काठ के वह वैसा ही लम्बा पतला आदमी था जो बाद में बार में पहुंचा था लेकिन सड़क के नीमअन्धेरे में उतने फासले से वह उसकी सूरत न देख पायी। वह आदमी बूथ से निकल कर सड़क पार करने लगा तो वर्षा का दिल फिर धाड़-धाड़ बजने लगा। लेकिन जब उसने उसे गैस्ट हाउस की इमारत के बन्द फाटक की तरफ बढने के स्थान

पर बगल की गली की तरफ बढते पाया तो उसकी जान में जान आयी।

वह खामखाह वहम कर रही थी।

वह आदमी टेलीफोन बूथ से निकला था तो इसका मतलब यह थोड़े ही था कि वह उसे ही फोन करके हटा था। जरूर वह इलाके में ही रहता कोई आदमी था जिसके घर में फोन नहीं था और जो वहां उस पब्लिक टेलीफोन से फोन करने आया था।

उसने खिड़की पर पर्दा गिरा दिया और वापिस आकर अपने पलंग पर लेट गयी। टेलीफोन की बन्टी बजने पर जो बैडलाइट उसने जलाई थी, वह उसने बुझा दी।

कुछ देर वह आंखे खोले अन्धेरे में लेटी रही और कभी राहुल के बारे में और कभी अशोक के बारे में सोचती रही।

फिर पता नहीं कब उसे नींद आ गयी।

***

उसकी नींद खुली। तुरन्त वह कोई फैसला न कर सकी कि उसकी नींद क्यों खुल गयी थी। फिर उसकी तवज्जो कमरे के दरवाजे की तरफ गयी।

दरवाजे पर से बहुत ही हल्की-हल्की खर्र-खर्र, खट-खट की आवाज आ रही थीं।

कौन था बाहर ?

कैसी थीं वे आवाजें ?

उसने रेडियम डायल वाली टाइमपीस पर निगाह डाली।

दो बजने को थे।

वह पलंग पर उठकर बैठ गयी।

उस क्रिया में पलंग तनिक चरमराया तो बाहर से आती आवाज फौरन बन्द हो गयी।

उसके सारे शरीर में सिहरन दौड़ गयी।

कोई शख्स बाहर उसके दरवाजे पर मौजूद था और निश्यच ही वह उसको जगाये बिना कमरे के भीतर दाखिल होने की कोशिश कर रहा था।

दरवाजे पर स्प्रिंग लाक था जो भीतर बाहर से समान रूप से खोला जा सकता था। दरवाजे पर भीतर की तरफ पहले एक चिटकनी होती थी लेकिन अब वह कब की टूट चुकी थी। उस बाबत मिसेज ग्रे को कई बार कह चुकने के बावजूद नई चिटकनी अभी तक नहीं लगी थी।

ताले को भीतर से बन्द रखने वाला खटका भी बिगड़ा हुआ था।

कुछ क्षण बात आहट फिर शुरू हो गयी।

बिना आहट किये वह पलंग पर से उतरी और दबे पांव बन्द दरवाजे के करीब पहुंची। वह कान लगाकर सुनने लगी।

बाहर दो आदमियों के सांस लेने की आवाज उसे साफ सुनाई दी।

दो आदमी !

फिर दो आदमी !

उसका दिल जोर-जोर से उसकी पसलियों के साथ टकराने लगा और कनपटियों में खून बजने लगा।

ताले के छेद में कोई तार सी डालकर घुमायी जा रही थी।

"अबे, मोटे" - बाहर कोई फुसफसाया - "क्या महीना लगायेगा ? साले, जल्दी खोल।"

"खोल तो रहा हूं।" - दूसरी आवाज आयी।

"बाहर का ताला तो तूने खट खोल लिया था।"

"इत्तफाक की बात थी।"

"जल्दी कर।"

"वह जाग न जाये।"

"बातें ने बना। काम कर अपना।"

"ताले के अलावा भी दरवाजा भीतर से बन्द हो सकता है।"

"वह बाद में देखेंगे। पहले ताला तो खोल।"

"खोल रहा हूं।"

अपने भीतर घुमड़ती चीख को दबाती और मन-मन के कदम उठाती वह वापिस टेलीफोन के करीब लौटी।

कम से कम आवाज करते हुए उसने गैस्ट हाउस का मिसेज ग्रे वाला नम्बर डायल किया।

नम्बर बिजी मिला।

पता नहीं फोन खराब था या मिसेज ग्रे रिसीवर आफ कर के सोती थी।

उसने '100' डायल किया।

घन्टी फौरन बजनी शुरू हो गयी।

दरवाजे के ताले में तार बदस्तूर घुमाई जा रही थी।

दूसरी तरफ से फोन न उठाया जाता पाकर उसने घबरा कर लाइन काट दी और अशोक का नम्बर डायल किया।

दूसरी तरफ से अपेक्षाकृत बहुत जल्दी फोन उठाया गया लेकिन फिर भी उसने ऐसा लगा जैसे अशोक का ने फोन उठाने में असाधारण देर लगायी हो।

फुसफुसाते हुए उसने हालात बयान किये।

"दो आदमी" - वह हैरानी और अविश्वासभरे स्वर में बोला - "जबरन ताला खोल कर तुम्हारे कमरे में घुसने की कोशिश कर रहे हैं!"

"हां।"

"तुम भीतर से चिटकनी लगा दो।"

"चिटकनी टूटी हुई है।"

"ताले में भी एक खटका होता है जो..."

"वहा भी काम नहीं करता।"

"तुम दरवाजे के हैंडल के नीचे एक कुर्सी लगा दो और शोर मचाना शुरू कर दो। मैं आ रहा हूं।"

वर्षा ने टेलीफोन नीचे रखा तो अनुभव किया कि बाहर से आवाजें आनी बन्द हो गयी थीं। शायद तब तक बाहर मौजूद लोगों तक उसके डायल घुमाने की या बोलने की आवाजें पहुंच गयी थीं।

हिम्मत करके वह दोबारा दरवाजे के करीब पहुंची।

"कौन है!" - वह घुटी-सी आवाज में बोली - "कौन है बाहर?"

कुछ क्षण सन्नाटा रहा।

"यह शोर मचा देगी।" - फिर कोई फुसफुसाया।

"ताला खुलने ही वाला था।"

"साला, हलकट। अब कहता है ताला खुलने ही वाला था। भाग।"

वर्षा को बाहर से दरवाजे से दूर होते कदमों की आहट मिली। उसकी जान में जान आयी।

गलियारे से आहट आनी बन्द हो गयी तो वह खिड़की पर पहुंची। उसने पर्दा हटाकर बाहर सड़क पर झांका।

उसे गैस्ट हाउस की दीवार फान्द कर सड़क की तरफ उतरते दो आदमी दिखाई दिये। उसके देखते-देखते वे सड़क पर आगे बढ गये और उसकी निगाहों से ओझल हो गये।

एक लम्बा पतला आमी।

दूसरा ठिगना मोटा आदमी।

वही दोनों।

अशोक की कार नीचे सड़क पर पहुंचने तक भी वर्षा वहीं खड़ी थी। उसकी कार के साथ ही एक पुलिस की जीप वहां पहुंची। जरूर अशोक की पुलिस को साथ लेकर आया था।

फिर पलक झपकते सारे गैस्ट हाउस में जाग हो गयी।

ऊपर वर्षा के कमरे के दरवाजे के बाहर एक स्टील की मुडी तुड़ी तार पड़ी पायी गयी जो कि पुलिस वाले जानते थे कि तालों का लिवर जबरन घुमाने के काम ही आती थी। ताले के छेद के आसपास खरोंचों के निशान भी पाये गये।

उस घड़ी अशोक को पहली बार वर्षा की कहानी पर यकीन आया।

यानी कि वर्षा की कही हर बात सच थी। उसके पीछे पड़े कोई दो बदमाश वर्षा की कल्पना की उपज नहीं थे।

पुलिस अपनी तफ्तीश की खानापूरी करके और बाकी की रात के लिये वहां एक हवलदार तैनात करके चली गयी।

अशोक ने वर्षा को अपने साथ ले जाना चाहा लेकिन उसने जाना कबूल न किया। उस नाजुक हालत में भी उसकी यह जिद बरकरार थी कि अशोक के घर में कदम वह उससे शादी के बाद ही रखेगी।

अलबत्ता बाकी की रात मिसेज ग्रे के कमरे में सो कर गुजारने का उसका प्रस्ताव वर्षा ने स्वीकार कर लिया।

अन्त में पुलिस और अशोक वहां से विदा हो गये।

***

मैंगलोर स्ट्रीट और सेंट जार्ज रोड के बीच के कबाड़ से भरे मैदान में एक कुत्ता जोर-जोर से भौंक रहा था।

वह भौंकता हुआ मैदान के बीच तक कहीं जाता था और फिर वैसे ही भौंकता हुआ कभी मैदान से पार तो कभी उधर निकल जाता था जिधर कि रिहायशी इमारतों की कतारें थीं।

वह सिलसिला रात के दस बजे से चल रहा था और तब आधी रात होने को आ रही थी।

बीट के दो सिपाही अपने डण्डे हिलाते हुए मैदान और इमारतों की कतारों के बीच की गली से गुजरे।

कुत्ता तब भी बदस्तूर भौंक रहा था।

एक इमारत की पहली मंजिल की एक खिड़की खुली।

"हवलदार साहब !" - कोई बोला।

"क्या है ?" - एक हवलदार ने जवाब दिया।

"इस कुत्ते को चुप कराओ न।"

"हम चुप करायें ?"

"और कौन कराये ? यह कुत्ता इलाके की शन्ति भंग कर रहा है। इसको चुप कराना आपका फर्ज नहीं है ?"

"यह किसका कुत्ता है ?"

"मुझे क्या पता किसका कुत्ता है। पता होता तो अभी तक मैं कुत्ते के मालिक की गरदन न मरोड़ आया होता ? मैं दिल का मरीज हूं और सिडेटिव लेकर सोता हूं। दो घंटे से इस कम्बख्त ने मेरी नींद हराम की हुई है। लगता है यह सारी रात यूं ही भौंकेगा।"

"यह क्यों भौंक रहा है ?"

"क्या पता क्यों भौंक रहा है ! मुसीबत यह है कि जब इधर हमारी गली की तरफ आकर भौंकता है तो इसके सुर से सुर मिलाकर आधी दर्जन कुत्ते और भौंकने लगते हैं।"

"हमारा काम भौंकते कुतों को चुप कराना नहीं हैं।"

"हवलदार साहब, नहीं भी है तो इसे चुप कराइये। इस बीमार बूढे पर रहम खाइये। मैं रात भर नहीं जाग सकता। सुबह होने तक अगर मैं टें बोल गया तो मेरा खून आपके सिर होगा।"

"अच्छा, अच्छा। हम देखते हैं कुत्ते को।"

"भगवान तुम्हारा भला करे।"

दोनों सिपाही कुत्ते की तरफ आकर्षित हुए।

कुत्ता उस वक्त उनके करीब ही था और दुम हिलाता, बेचैनी से पहलू बदलता, बदस्तूर भौंक रहा था।

एक सिपाही ने उसे डण्डा दिखाया।

कुत्ता मैदान में परे भाग गया लेकिन उसने भौंकना बन्द न किया।

सिपाही उसके पीछे अन्धेरे में उतरा।

मैदान में कुल जहान का कबाड़ भरा पड़ा था।

भौंकते कुत्ते के पीछे डण्डा हिलाता वह मैदान के बीच में वहां पहुंचा गया जहां कि कुछ टूटी-फूटी, कबाड़ कारें खड़ी थीं।

कुत्ता तब एक बिना दरवाजों की कार के करीब पहुंच चुका था। वह कार के आगे पीछे घूम रहा था और अब कभी- कभार भौंकता-भौंकता गुर्राने भी लगता था।

सिपाही कार के करीब पहुंचा।

कार के पिछले दरवाजे में से बाहर निकली एक मर्दाना टांग सिपाही को दिखाई दी।

"कौन है बे ?" - सिपाही डपट कर बोला - "बाहर निकल।"

टांग में कोई हरकत न हुई।

कुत्ता अब एकाएक एकदम खमोश हो गया था। अब वह कार के पास से हटकर अपनी टांगों में दुम दबाये सिपाही के पास खड़ा हुआ था।

"अबे, बहरा है ! सुना नहीं मैंने क्या कहा ?"

कार में से कोई उत्तर न मिला।

सिपाही पिछले दरवाजे के करीब पहुंचा। अपने डण्डे से उसने पहले कार की बाडी को ठकठकाया और फिर टांग पर दस्तक दी।

टांग में तब भी कोई हरकत न हुई।

"साला घोड़े बेचकर सोया मालूम होता है।" - सिपाही बड़बड़ाया।

उसने नीचे झुककर कार में झाका।

भीतर एक मोटा-ताजा आदमी मौजूद था। उसका सिर उसकी छाती पर लुढका हुआ था और वह मुर्दों से शर्त लगाकर सोया मालूम होता था।

नीचे झुकने की क्रिया में सिपाही के नुथनों से एक अजीब सी, विचलित कर देने वाली, गन्ध टकराई जो कि निश्चय ही कार के पृष्ठभाग में से ही कहीं से आ रही थी।

"अबे, बाहर निकल।" - वह बोला। साथ ही उसने उसे उसकी बांह पकड़कर घसीटने की कोशिश की।

उसने बांह को मुश्किल से छुआ ही था कि एकाएक पता नहीं क्या हुआ कि भीतर मौजूद व्यक्ति भरभरा कर कार से बाहर को गिरने लगा।

सिपाही ने फौरन उसकी बांह छोड़ दी और घबरा कर एक कदम पीछे हट गया।

वह आदमी यूं जमीन पर आ कर गिरा कि उसका सिर सिपाही के जूतों से मुश्किल से दो इंच दूर आकर टिका।

उसका मुआयना करने के लिये सिपाही नीचे झुका।

उसके मुंह से एकाएक एक सिसकारी निकली वह हड़बड़ाकर सीधा हुआ और सिर पर पांव रखकर अपने साथी सिपाही की तरफ भागा।

तीसरा दिन

राहुल सो कर उठा।

उसने देखा कि अभी सिर्फ दस ही बजे थे।

कपड़े उतार कर वह टायलेट में दाखिल हो गया।

वापिस आकर उसने महसूस किया कि उसकी सफेद वर्दी बहुत ही मैली हो चुकी थी। वह कुछ क्षण वर्दी को देखकर नाक चढाता रहा, फिर मजबूरन उसने उसे पहन लिया। कोट वह अभी नहीं पहनना चाहता था लेकिन अपनी मैली वर्दी को छुपाने के लिए उसने उसे पहन लिया।

शहर में वह उसका आखिरी दिन था।

उसने पिछली रात के वाकयात याद करने की कोशिश की तो उसे कुछ भी याद न आया। वह कोई नयी बात नहीं थी इसलिये उसने उसमें ज्यादा सिर-खपाई करने की कोशिश नहीं की।

वेटर को बुलाकर उसने चाय और टोस्ट मंगवाये।

ब्रेकफास्ट के दौरान उसके जेहन पर वर्षा का अक्स उभरा।

कल रात कहां देखा था उसने वर्षा को ?

दिमाग पर बहुत जोर देने पर उसे याद आया कि उसने वर्षा को कल रात नीचे बार में देख था। फिर उसे यह भी याद आया कि वर्षा उसी के बुलावे पर वहां आयी थी।

राहुल को एक बड़ी अजीब-से आनन्द और संतोष की अनुभूति हुई।

यह उसके लिए बहुत बड़ी बात थी कि आखिर वर्षा ने उसका कहना माना था और उसके बुलाने पर वह वहां आयी थी।

साथ ही उसे इस बात का पछतावा भी हुआ कि उसके आगमन पर वह इस काबिल भी नहीं थी कि उससे कोई बात कर पाता।

वर्षा के लिए उसके मन में एकाएक जो प्रेमभाव पनपने लगा था, उसकी वजह से वह मन ही मन शर्मिन्दा था। किसी दूसरे की होने वाली बीवी से प्यार करने का उसे कोई अधिकार नहीं था लेकिन वह दिल के हाथों मजबूर था। उसे लगता था कि वह पूनम से फिर मिल रहा था - उस पूनम से जिसमें वैसी कोई खामी न थी जिसकी वजह से उसने उसे ठुकराया था।

अब जब कि चन्द ही घंटे उसके उस शहर से कूच कर जाने में रह गये थे तो वह सोच रहा था कि क्या वह उससे दोबारा मिलने की कोशिश करे ?

नहीं - उसकी अक्ल ने राय दी - कल जो बेहूदगी उसने फैलाई थी, उसकी रू में अब वर्षा से दोबारा मिलना अपनी रूसवाई का सामान करना ही था।

रिसैप्शन क्लर्क उसे एकदम चौकस और पूरी तरह होशोहवास में देखकर सकपकाया।

"कल मैंने कमरे का किराया चुकाया था ?" - राहुल बोला।

क्लर्क ने रिकार्ड देखा और फिर इन्कार में सिर हिलाया।

राहुल ने उसे कुछ नोट सौंप दिए और उसे बता दिया कि अब वह लौट कर नहीं आने वाला था।

"तुम्हारे दोस्तों के लिए कोई मैसेज ?" - क्लर्क बोला।

"दोस्त !" - राहुल सकपकाया - "कौन दोस्त ?"

"जो कल रात तुम्हारे कमरे में गये थे। बहुत ख्याल रखते हैं वो तुम्हारा।"

राहुल के जेहन में रोबीरो और मारुतिराव का अक्स उभरा। फिर रोबीरो की जिदभरी, सवाल करती, आवाज उसके कानों में गूंजने लगी। उसने हड़बड़ा कर अपनी जेब में हाथ डाला तो पाया कि नोटों के पुलन्दे के समेत उसकी जेबों का सारा माल सही सलामत था। यह देख कर उसे बहुत ही राहत महसूस हुई कि वर्षा का विजिटिंग कार्ड भी उसकी जेब में मौजूद था। वर्षा की वही तो एक निशानी थी जो वह अपने साथ ले जा रहा था।

"नहीं" - वह क्लर्क से बोला - "कोई मैसेज नहीं।"

वह होटल से बाहर निकला।

ब्लाक के सिरे पर एक नाई की दुकान देखकर वह उसमें दाखिल हो गया।

दुकान में सिर्फ एक ही ग्राहक मौजूद था जिसकी कि हजामत हो रही थी।

वह इन्तजार करने बैठ गया। करीब ही बैंच पर कुछ पुरानी पत्रिकाओं के साथ उस रोज का अखबार पड़ा था।

उसने अखबार उठा लिया और लापरवाही से उसके पन्ने पलटने लगा।

मन ही मन वह अभी भी वर्षा के बारे में सोच रहा था।

कल बार में जब वह मौजूद थी तो मारुतिराव भी वहां था और शायद रोबीरो भी उसकी निगाहों से परे वहीं कहीं था। यह सवाल अभी भी अनुत्तरित था कि वर्षा ने उन दोनों को या उन दोनों में से किसी को पहचाना था या नहीं।

कल रात की अपनी खस्ता हालत पर उसे फिर अफसोस होने लगा।

लेकिन मैं भी क्या करता - वह मन ही मन बोला - उसने तो साफ कह दिया था कि वह नहीं आने वाली थी। उसके उस जवाब ने ही तो मुझ पर इस जुनून को हावी किया था कि मैंने पी-पीकर होश खो बैठना था, बल्कि जान दे देनी थी।

अखबार के मुखपृष्ठ पर स्टाप प्रैस के कालम पर उसकी निगाह एक क्षण को ठिठकी।

कालम में बन्दरगाह के इलाके में मैंगलोर स्ट्रीट के करीब के एक मैदान में से एक अधेड़ व्यक्ति की लाश की बरामदी की खबर छपी थी। पुलिस के अनुसार उस व्यक्ति का कत्ल हुआ था और वह वाकया कम से कम अड़तालीस घंटे पहले का था।

तभी नाई की कुर्सी खाली हो गयी पाकर उसने अखबार परे उछाल दिया।

उस खबर की उसके लिए कोई अहमियत नहीं थी।

***

स्टाप प्रैस के कालम में छपी कत्ल की खबर की तरफ रोबीरो का ध्यान मारुतिराव ने दिलाया।

"हमें क्या ?" - रोबीरो लापरवाही से बोला।

"छापे में बयान किया गया मैदान" - मारुतिराव बोला - "मैंगलोर स्ट्रीट की खंडहर इमारत से मुश्किल से डेढ फरलांग दूर है।"

"तो क्या हुआ ?"

"बाप" - मारुतिराव धीरे से बोला - "वह बरामद लाश धोते की हो सकती है।"

"क्या ?"

"धोते की लाश गायब है। एक लाश बरामद हुई है। वह लाश धोते की हो सकती हैं।"

"कैसे हो सकती हैं ? मुर्दा डेढ फरलांग कैसे चल सकता है ?"

"मुझे नहीं पता कैसे चल सकता है। मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि हमारा मुर्दा गायब है। एक मुर्दा बरामद हुआ है। बरामद मुर्दा गायबशुदा मुर्दा हो सकता है।"

"वह वहां तक खुद कैसे पहुंच सकता था ?"

"बाप, तुम्हारा सवाल ही तुम्हारा जवाब है। खुद नहीं पहुंच सकता तो किसी ने पहुंचाया होगा।"

"किसने ?"

"शायद उसी लड़की ने। वह मंगलवार रात को ऐन वारदात के वक्त खंडहर इमारत में थी।"

"हूं।"

"कल वह राहुल के होटल में पहुंची हुई थी।"

"उसकी राहुल के होटल में मौजूदगी की कोई जुदा वजह हो सकती हैं।"

"लेकिन..."

"अबे, मोटे ! वह लड़की धोते को उस मैदान तक नहीं पहुंचा सकती थी। मरे हुए को तो हरगिज नहीं पहुंचा सकती थी, घायल को भी नहीं पहुंचा सकती थी। वह लड़की तो धोते से आधी भी नहीं" - वह एक क्षण ठिठका और फिर नेत्र फैलाकर बोला - "राहुल !"

"क्या राहुल ?"

"यह राहुल का काम है। यह शर्तिया उस शराबी सेलर की करतूत है। वारदात के वक्त यह भी खंडहर के सामने मौजूद था। हमारे वहां से चले आने के बाद जरूर वह भीतर घुसा था और उसी ने धोते की लाश को उस मैदान तक पहुंचाया था। उसके सिवाय यह काम और कोई नहीं कर सकता था।"

"अगर यह उसकी करतूत थी तो लाश की बाबत उसने किसी को कुछ कहा क्यों नहीं ?"

"क्योंकि उसने जो कुछ किया था, नशे में धुत्त होकर किया था। जाहिर है कि नशे उतरने के बाद उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था कि पिछली रात वह क्या कुछ करता रहा था। वह नशे में किस हद तक धुत हो सकता है, इसका

नमूना तुमने कल रात देखा ही है। और याद करो मंगलवार की रात को खंडहर इमारत के सामने वह हमें भी मिला था, अगले रोज वह दावा भी कर रहा था कि पिछली रात वह जिन दो जनों से खंडहर इमारत के सामने मिला था, वह उन्हें देखेगा तो फौरन पहचान लेगा। लेकिन हकीकतन क्या ऐसा हुआ था ?"

"नहीं।"

"उसने हमें पहचाना था ?"

"नहीं।"

"तो ?"

"लेकिन उसे यह याद था कि पिछली रात वह किन्हीं दो जनों से मिला था। ऐसे ही उसे यह भी याद हो सकता है कि उसने धोते की लाश को खंडहर में से उठाकर कहीं और - इस मैदान में - पहुंचाया था।"

"उसे नहीं याद। होता तो उसने अब तक छत्तीस बार इस बात का जिक्र किया होता।"

"याद नहीं तो अब याद आ सकता है।"

"अब तक याद नहीं आया तो अब क्या आयेगा ?"

"आ सकता है। पहले उसने धोते को कोई अपनी ही तरह नशे में धुत्त अपना कोई शराबी भाई समझा हो सकता है। अब अखबार में छपी इस खबरा को पढकर उसे सूझ सकता है कि उस रात उसने किसी शराबी को नहीं, किसी लाश को मैदान तक ढोया था।"

"इस ढाई लाईन की खबर पर उसकी निगाह नहीं पड़ने वाली।"

"पड़ सकती है।" - मारुतिराव जिदभरे स्वर में बोला।

रोबीरो सोच में पड़ गया।

"बाप" - मारुतिराव बोला - "उसे उस रोज की किसी घटना को याद करने से रोकना होगा।"

"कैसे ? धोते की तरह ?"

मारुतिराव खामोश रहा।

"फिक्र न कर, मरुतिराव" - कुछ क्षण की खामोशी के बाद रोबीरो बोला - "हमारा यह काम वह शराबी खुद ही कर देगा।"

"कैसे ?" कैसे कर देगा ?"

"हर वक्त नशे में रह कर। वह होश में आयेगा तो कुछ करेगा न ! और फिर शाम तक की तो बात है। आज शाम को उसने अपने जहाज पर सवार होकर बम्बई से कूच जो कर जाना है।"

मारुतिराव आश्वस्त न हुआ।

"अबे, साले मोटे अभी तो हमें यह भी नहीं पता कि वह लाश धोते की है भी या नहीं।"

"वह लाश धोते की है।" - मारुतिराव निर्णयात्मक स्वर में बोला।

"उसकी रूह आकर तेरे कान में फूंक मार गई मालूम होती है।"

"कुछ भी कहो। वह लाश धोते के सिवाय किसी की नहीं हो सकती।"

रोबीरो कुछ क्षण सोचता रहा और फिर बोला - "ठीक है। उठ।"

"क्यों ?" - मारुतिराव हड़बड़ाया।

"उठ और चल।"

"कहां ?"

"उसके होटल।"

***

होटल से उन्हें मालूम हुआ कि राहुल वहां से सदा के लिए कूच कर चुका था।

"क्या पता" - बाहर आकर मारुतिराव घबराये स्वर में बोला - "अखबार पढकर वह सीधा थाने गया हो...."

"वह कहीं नहीं गया होगा..."

"....कल लड़की हाथ से निकल गयी और आज यह...."

"बकवास बन्द कर। अगर वह कहीं गया होगा तो वहीं गया होगा, खुश्की पर अपनी मौजूदगी के दौरान जहां वह हमेशा जाता है।"

"कहां ?"

"किसी बार में।"

मारुतिराव को वह बात तनिक जंची।

उन्होंने इलाके के हर बार का चक्कर लगाना शुरू किया।

उसी तलाश में दोपहर हो गई लेकिन राहुल उन्हें कहीं न मिला।

तब तक 'डेली' नाम का वह दैनिक अखबार सड़कों पर दिखाई देने लगा था। जो दोपहर को ही प्रकाशित होता था।

उन्होंने अखबार की एक प्रति खरीदी।

उस अखबार में मैदान में पाई गई लाश की विस्तृत खबर थी।

लाश की शिनाख्त हो चुकी थी। अखबार में स्पष्ट शब्दों में लिखा था कि मरने वाला जनकराज धोते था। उसमें धोते की तस्वीर छपी थी। पुलिस ने उसे साफ-साफ हत्या का केस बताया था।

रोबीरो और मारुतिराव को सबसे ज्यादा हलकान पुलिस की तफ्तीश के इस नतीजे ने किया कि हत्या वहां नहीं हुई थी जहां से कि लाश बरामद हुई थी।

पुलिस बड़ी सरगर्मी से हत्यारे की तलाश कर रही थी। बड़े सस्पेंस में वे प्रिंसेस बार में पहुंचे।

जिस शख्स की तलाश में वे दर्जन भर बारों में भटक कर आये थे, वह वहां बैठा था।

बार में दाखिल होते ही सबसे पहले उनकी निगाह राहुल पर पड़ी थी।

वे उसकी टेबल पर पहुंचे। विस्की का गिलास उसके सामने मौजूद पाकर उन्हें बड़ी राहत महसूस हुई। राहुल का विस्की पीते होना उनके लिए अच्छी खबर थी।

दोनों उसकी मेज पर उसकी अगल-बगल की कुर्सियों पर जम गये।

राहुल ने बड़े मशीनी अन्दाज से उनके लिए भी ड्रिंक का आर्डर दिया।

"बाप" - फिर रोबीरो बोला - "कल तो हद कर दी तुमने। हमें फोन करके अपने होटल के बार में बुलाया और खुद गायब हो गये। जब आये तो आते ही स्ट्रेचर पर वहां से ले जाये जाने की हालत में पहुंच गये।"

"कल का मुझे अफसोस है।" - राहुल खेदपुर्ण स्वर में बोला - "नशे में मैं भूल गया था कि मैंने तुम लोगों को बुलाया था।"

"बात क्या थी ?"

"अब कोई बात नहीं।"

"लेकिन तब क्या बात थी ?"

"तब भी कोई खास बात नहीं थी।"

"फिर भी !"

"मैं दो बार तुम्हारे घर में जाकर विस्की पी आया था, सोचा एक बार तुम्हें बुलाऊं।"

"बस ! यही बात थी ?"

"हां।"

"कमाल है !"

"गिलास खाली करो और वेटर को आवाज दो।"

उन्होंने गिलास खाली न किए लेकिन वेटर को आवाज दी।

रोबीरो ने उसे केवल एक ड्रिंक - राहुल के लिए - लाने का आदेश दिया।

"क्यों ?" - राहुल भवें उठाकर बोला - "तुम लोग..."

"हमारे लिए अगली बार।"

"मर्जी तुम्हारी।"

तभी एक आदमी उनकी मेज के करीब पहुंचा।

रोबीरो ने सिर उठाया तो पाया कि वह चम्पकलाल था।

राहुल ने भी उस पर निगाह डाली लेकिन उसकी सूरत से ऐसा न लगा जैसे उसने चम्पकलाल को पहचाना हो।

"अखबार देखा, गोवानी भाई ?" - वह बोला।

"देखा।" - रोबीरो अपलक उसे देखता हुआ बोला - "क्यों ?"

"सोचा, शायद न देखा हो।" - वह एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "फिर तो तुम्हें मालूम ही होगा।"

"क्या ?"

"धोते मिल गया है।"

"मुझे मालूम है।"
"उसका कत्ल..."
"हां, हां मालूम है मुझे।"
"उसकी लाश..."
रोबीरो के आगे पड़ा विस्की का गिलास पता नहीं कैसे लुढक गया। वह हड़बड़ा कर उठा।
"वेटर" - वह उच्च स्वर में बोला - "जरा मेज साफ करो।"
रोबीरो ने चम्पकलाल की बांह थामी और उसे बार काउंटर पर ले आया।
"अब बोलो क्या कह रहे थे तुम ?" - वह बोला।
"मैं कह रहा था" - चम्पकलाल बोला - "कि धोते का कत्ल हो गया है।"
"तो मैं क्या करूं ?"
"तुम उसे ढूंढ जो रहे थे इसलिए सोचा कि बता दूं।"
"अच्छा किया। मेहरबानी।"
"तुम्हारे ख्याल से किसने कत्ल किया होगा उसका ?"
"मुझे क्या पता ? किसी के मटके के पैसे नहीं दिए होंगे उसने।"
"वह तो उसने तुम्हारे भी नहीं दिए थे।"
"हमारी रकम मामूली थी। सिर्फ बीस रुपये। किसी का मोटा माल हड़पने की कोशिश की होगी उसने।"
"लेकिन ऐसा पहले तो कभी नहीं हुआ ?"
"हर काम की कभी तो पहल होनी ही होती है।"
"लेकिन..."
"विस्की पियोगे ?"
"बियर।"
मन ही मन उसे कोसते हुए रोबीरो ने चम्पकलाल के लिए बारमैन से बियर और अपने लिए विस्की हासिल की।
उसने चम्पकलाल के बियर के मग से अपना विस्की का गिलास टकराया।
"पहले तो तुमने मुझे कभी नहीं पिलाई।" - चम्पकलाल बोला।
"मतलब ?" - रोबीरो हड़बड़ाया।
"यह रिश्वत तो नहीं ?"
"रिश्वत ! किस बात की रिश्वत ?"
"यह तो तुम बताओ।"
"तुम पागल हो क्या ? अजीब बातें कर रहे हो ! नहीं पीना चाहते हो तो लाओ वापिस करो बियर।"
"तुम तो खफा हो रहे हो, गोवानी भाई !"
"तुम बातें ही ऐसी कर रहे हो।"
"अच्छा, एक आखिरी बात और बता दो।"
"क्या ?"
"तुम और तुम्हारा वह जोड़ीदार दोनों परसों से ही इस सेलर के साथ लसूड़े की तरह क्यों चिपके हुए हो ?"
"यह धन्धे की बात है ? "
"तो क्या हुआ ? मेरा तुम्हारा कोई कम्पीटीशन थोड़े ही है।"
"वादा करते हो कि किसी को बताओगे नहीं ?"
"हां, करता हूं।"
"हम इससे कुछ माल ऐंठने की कोशिश कर रहे हैं।"
"माल और इसके पास ?"
"है। मोटा माल है। हमने आंखों से देखा है। सौ-सौ के नोंटो की ये" - रोबीरो ने अपना अंगूठा और पहली उंगली कोई चार इंच फैलाते हुए कहा - "मोटी गड्डी है। कल रात हम इसकी जेब टटोल चुके हैं।"
"और इसे खबर नहीं लगी ?"
"यह टुन्ना था।"

"तो तुमने माल तभी क्यों नहीं पार कर दिया था ?"

"क्योंकि आज सुबह होश आने पर जब इसे माल गायब मिलता तो यह समझ जाता कि वह हमारी शरारत थी । आज शाम यह अपने जहाज पर चढने वाला है । हम अभी इसे यहां से ले जा रहे हैं । आज शाम होने से पहले हम इसे शराब का पीपा बना देंगे और इसका माल पार करके इसे जहाज पर धक्का दे आयेंगे । जहाज बन्दरगाह से रवाना हो चुकने के बाद ही कभी इसे पता लगेगा कि इसका माल गायब है । तब इसकी खातिर जहाज वापिस थोड़े ही लौट आएगा !"

"ओह !" - चम्पकलाल के मुंह से निकला । रोबीरो की कहानी उसे जंची थी ।

तभी एक अखबार वाला छोकरा बार में दाखिल हुआ । वह ईवनिंग न्यूज का एक पुलन्दा सम्भाले हुए था । कुछ लोगों ने उसे आवाज देकर उससे अखबार लिया ।

रोबीरो ने देखा कि एक अखबार मारुतिराव ने भी खरीदा ।

मारुतिराव अखबार पर निगाहें फिराने लगा । उसने उसमें पता नहीं क्या पढा कि उतने फासले से भी रोबीरो ने उसके चेहरे का रंग उड़ता साफ देखा ।

"मैं चला ।" - रोबीरो बोला ।

चम्पकलाल ने सहमति मे सिर हिलाया ।

अपना विस्की का गिलास थामे रोबीरो बार काउन्टर से हटा तो मारुतिराव एकाएक उठ खड़ा हुआ । उसने राहुल को कुछ कहा और बार के पिछवाड़े में उस तरफ बढ़ा जिधर टायलेट का रास्ता था ।

रोबीरो फिर काउंटर की तरफ घूमा । उसने अपना गिलास काउंटर पर रख दिया । मारुतिराव पिछवाड़े का दरवाजा खोलकर उसके पीछे गायब हो गया तो वह भी उधर बढा ।

मारुतिराव उसे टायलेट में मिला । वहां उस वक्त कोई नहीं था ।

"क्या हुआ ?" - रोबीरो तीखे स्वर में बोला ।

"जरा यह अखबार देखो ।" - मारुतिराव ने अखबार उसके हाथ में धकेल दिया ।

"क्या है इसमें ?"

"पढो ।"

"क्या पढूं ?" - रोबीरो तेजी से अखबार पर निगाह दौड़ाता हआ बोला - "सब वही कुछ तो है जो 'डेली' में भी छपा है ।"

"और भी है कुछ ?"

"तुम्हारा इशारा इस बिना दरवाजों की कार की तस्वीर की तरफ है ? यही एक नई चीज है जो सुबह के और दोपहर के अखबार में नहीं छपी थी ।"

"बाप, यह नीचे वाला पैरा पढ ।"

रोबीरो ने पढा ।

उस पैरे के मुताबिक मंगलवार की रात को उस मैदान के पास और उसके रास्ते में, जहां से कि धोते की लाश बरामद हुई थी, एक विशालकाय, देवसमान सेलर देखा गया था और पुलिस बड़ी सरगर्मी से उसकी तलाश कर रही थी ।

"ओह !" - रोबीरो अखबार बन्द करके वापिस मारुतिराव को लौटाता हुआ बोला ।

"अगर यह सेलर पकड़ा गया" - मारुतिराव बोला - "तो यह हमारा भी जिक्र करेगा । पुलिस का हमारी तरफ ख्याल भी जाना हमारे लिऐ खतरनाक साबित हो सकता है ।"

"ख्याल नहीं जायेगा, मोटे ।"

"क्यों नहीं जायेगा ?"

"क्योंकि सेलर पकड़ा नहीं जायेगा ।"

"क्यों नहीं पकड़ा जायेगा ?"

"क्योंकि अब तब तक हम उसके साथ चिपके रहेंगे, जब तक कि आज शाम को वहा अपने जहाज पर सवार नहीं हो जायेगा । हम ऐसा इन्तजाम करेंगे कि यह कहीं भटक नहीं पायेगा । यहां से भी हम अभी इसको ले चलते हैं । समझा ?"

मारुतिराव ने सहमति में सिर हिलाया ।

***

सुबह छ: बजे से ही लिली थाने में मौजूद थी।

धोते की जेब से बरामद लिली की तस्वीर और उसके पते की बिना पर पुलिस ने उसे सोते से जगाया था। पहले वह उनके साथ मोर्ग में गयी थी जहां कि उसने धोते की लाश की शिनाख्त की थी।

थाने में उसका बयान हो चुका था लेकिन फिर भी अभी उसे वहां से जाने की इजाजत नहीं मिली थी।

दोपहर के करीब उसे ए.सी.पी. के सामने पेश किया गया। ए.सी.पी. के रोब से थर्राई लिली ने तब पहली बार पुलिस को बताया कि धोते वास्तव में एक मटका एजेन्ट था।

"आाखिरी बार वह तुम्हें कब मिला था ?" - लिली से पूछा गया।

"मंगलवार को।" - लिली बोली।

"वह तुमसे रोज मिलता था ?"

"तकरीबन रोज मिलता था। जब नहीं मिलता था तो मुझे खबर होती थी कि नहीं मिलने वाला था।"

"बुधवार को मिलने वाला था।"

"हां।"

"जब नहीं मिला तो तुम्हें फिक्र नहीं हुई ?"

"पहले नहीं हुई थी लेकिन जब बुधवार को आधी रात को दो आदमी उसको पूछते-पूछते मेरे रेस्टोरेन्ट में पहुंच गये थे तो मुझे फिक्र हुई थी।"

"दो आदमी ! कौन दो आदमी ?"

"उनमें से एक रोबीरो नाम का लम्बा पतला गोवानी था और दूसरा मारुतिराव नाम का ठिगना मोटा मराठा।"

"वे क्यों पूछ रहे थे धोते को ?"

"उन्होने मटके का नम्बर लगाया था। उसका नम्बर निकला था। लेकिन जीत की रकम हासिल करने के लिए उन्हें धोते नहीं मिल रहा था। सोलह हजार की रकम का मामला था। इसीलिये धोते को तलाश करते हुए वे मुझ तक पहुंच गये थे।"

"ओह !"

"उन दोनों ने यह भी कहा था कि अगर धोते मेरे पास आये तो मैं उन्हें खबर कर दूं।"

"कहां ?"

"डिमेलो रोड पर स्थित प्रिंसेस बार में।"

"वहां क्यों ? वहां क्या वे दोनों नौकरी करते हैं ?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"ठीक है। अब तुम बाहर जाकर बैठो।"

"अभी भी बाहर जा कर बैठूं ? सुबह से तो बैठी हूं।"

"थोड़ी देर और बैठो।"

लिली वहां से उठ कर चली गयी तो ए.सी.पी. थानाध्यक्ष इन्स्पेक्टर की तरफ आकर्षित हुआ।

"अगर वे दोनों" - ए.सी.पी. बोला - "खुद धोते को ढूंढते फिर रहे थे तो जाहिर है कि धोते के कत्ल से तो उनका कोई रिश्ता नहीं हो सकता।"

"जाहिर है।" - इन्सपेक्टर बड़े मुसाहिबी अन्दाज से बोला।

"मकतूल मटका एजेन्ट था लेकिन उसकी जेब में तकरीबन तीस हजार रुपये की रकम सही सलामत मौजूद थी। यह बात इस केस को पेचीदा बना रही है। अगर वह रकम गायब होती तो कत्ल का उद्देश्य समझना आसान था।"

"यस सर।"

"तुम रोबीरो और मरुतिराव नाम के उन दोनों आदमियों की तलाश करवाओ और उन्हें थाने मे तलब करो। शायद उनकी किसी बात से कत्ल का उद्देश्य समझ में आ सके। शायद वे किसी ऐसे शख्स को जानते हों जिसकी धोते के कत्ल में दिलचस्पी रही हो।"

"यस, सर।"

***

अशोक ने ईवनिंग न्यूज में पढा कि अब पुलिस को धोते नाम के व्यक्ति के कत्ल के सिलसिले में किसी सेलर की तलाश थी। सुबह के अखबार में भी वह उस खबर को पढ चुका था। अब ईवनिंग न्यूज में उसने यह भी पढा कि

पुलिस के कथनानुसार कत्ल लाश की बरामदगी के समय से कोई अड़तालीस घन्टे पहले हुआ था। वह वही रात थी जब वर्षा ने, उसके कथनानुसार, खंडहर इमारत में राहुल को देखा था और जब राहुल अपने किसी शराबी भाई से मिला था जो कि बाद में उससे बिछुड़ गया था। उस खबर को पढकर अशोक के जेहन में एक ऐसी नयी सम्भवाना पनपी कि वह फौरन वर्षा के पास उसके हस्पताल में पहुंचा।

उसने वर्षा को अखबार दिखाया।

"अब सारी कहानी मेरी समझ में आ गयी है।" - फिर वह बोला।

"क्या समझ में आ गया है तुम्हारे ?" - वर्षा बोली।

"मंगलवार रात को नशे की हालत में राहुल अपने जोड़ीदार पर, अपने उस शराबी भाई पर, वार कर बैठा था। बाद में उसे यह तो याद रहा था कि उसने अपने रात के राही के साथ कोई खतरनाक सलूक किया था लेकिन हकीकतन उसने क्या किया था, यह उसे याद नहीं था। उसे याद नहीं था कि नशे में उसने अपने साथी पर भीषण वार किया था। उस देव समान आदमी का एक ही भीषण वार क्या गुल खिला सकता है, इसका तुम खुद भी अन्दाजा लगा सकती हो।"

"अगर ऐसी बात थी" - वर्षा अविश्वसपूर्ण स्वर में बोली - "तो बाद में वह उसे ढूंढता क्यों फिर रहा था ? उस वारदात के बाद वह गायब ही क्यों न हो गया ?"

"क्योंकि उसके विवेक का जनाजा उसकी नशे की हालत में ही निकलता है। नशा उतरने पर उसे जरूर अपनी करतूत पर पश्चाताप हुआ होगा। जरूर वह इस उम्मीद में उसे तलाश करता फिर रहा था कि उसकी करतूत की वजह से शायद वह मेरा न हो, शायद वह सिर्फ घायल हो।"

"तुम यह कहना चाहते हो कि उस आदमी का कत्ल राहुल ने किया है ?"

"ऐसा ही मालूम होता है।"

"नानसैंस।"

"हमें पुलिस को खबर करनी चाहिए।"

"किस बात की ?"

"इसी बात की ?"

"सिर्फ इसलिए क्योंकि तुम्हारे खुराफाती दिमाग ने एक ऐसी कहानी गढ ली है जो राहुल की, उस शख्स को, जो कि एकाएक तुम्हें अपना रकीब दिखाई देने लगा है, कुछ हरकतों पर फिट बैठती है ?"

"और यह कि पुलिस को एक सेलर की तलाश है और वह शख्स - राहुल - वारदात की रात को मौकायवारदात के करीब मौजूद था। तुमने खुद उसे खंडहर इमारत में अचेत पड़े देखा था।"

"मैंने उसकी सूरत नहीं देखी थी। जिसे मैंने देखा था, वह औंधे मुंह फर्श पर पड़ा था, वह कोई भी हो सकता था।"

"अगर वह कोई और होता तो कोई और तुम्हारा पर्स लौटाने तुम्हारे पास आया होता।"

"मैंने यह कभी नहीं कहा कि मेरा पर्स उस खंडहर इमारत मे गिरा था।"

"पर्स राहुल के पास था। अगर वह इमारत में था तो पर्स भी वहीं गिरा होगा। पर्स और कहीं गिरा होता या, बकौल तुम्हारे, वह यहां हस्पताल में रह गया होता तो वह उसके अधिकार में कैसे आ सकता था ?"

वर्षा खामोश हो गयी। कुछ क्षण बाद वह तनिक व्याकुल भाव से बोली - "तुम यह बात पुलिस को बताओगे ?"

"किसी भी जिम्मेदार शहरी का ऐसी किसी बात को पुलिस से छुपा कर रखना नादानी है। ऐसा आदमी गिरफ्तार होना ही चाहिए। जैसा खतरनाक काम उसने एक बार किया है, वैसा वह दोबारा भी तो कर सकता है।"

"राहुल ऐसा नहीं कर सकता।"

"तुम्हें क्या पता ? वह तुम्हारा कोई नजदीकी रिश्तेदार है या पुराना वाकिफाकर है ?"

आशोक की वह बात वर्षा के दिल में तीर की तरह लगी। लेकिन उस बारे में उससे बहस करके वह उसे खफा नहीं करना चाहती थी इसलिये उसने खामोश रहना ही मुनासिब समझा।

"मैं पुलिस को फोन करता हूं।" - अशोक बोला।

"यह उसके साथ ज्यादती होगी" - वर्षा कहे बिना न रह सकी - "शहर में वही इकलौता सेलर नहीं है। तुम कैसे कह सकती हो कि पुलिस को उसी की तलाश है ?"

"क्योंकि उसी का रिश्ता वारदात से दिखाई देता है।"

"उसका वारदात से कोई रिश्ता नहीं।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"मेरा दिल कहता है कि उसका इस वारदात से कोई रिश्ता नहीं हो सकता।"

"दिल कहता है ! नानसैंस।"

"लेकिन..."

"तुम उसकी इतनी वकालत क्यों कर रही हो ?"

"क्योंकि मैं नहीं चाहती कि हमारी वजह से कोई बेगुनाह खामखाह पुलिस के झमेले में पड़े और खराब हो।"

"एक गैर और अजनबी शख्स के साथ क्या बीतती है, इससे तुम्हें क्या मतलब ?"

"कोई मतलब नहीं। लेकिन मैं यह नहीं चाहती कि उस पर जो बीते, उसकी वजह मैं या तुम बनो।"

"नानसैंस। यह खामखाह की जज्बती बातें हैं जो हमें गैरजिम्मेदार शहरी बनने के लिए उकसाती हैं। उस आदमी के बारे में पुलिस को खबर करना हमारा फर्ज है।"

"लेकिन...."

"वर्षा, यह न भूलो कि कल रात तुम्हारे होस्टल में जो हमला तुम पर होने जा रहा था, उसकी वजह भी वह सेलर ही हो सकता है।"

"कैसे हो सकता है ?"

"यह सब मुझे नहीं मालूम।" - एकाएक अशोक ने मेज पर पड़े फोन की तरफ हाथ बढाया - "मैं पुलिस को फोन करता हूं।"

"ठीक है" - वर्षा उठती हुई बोली - "जो जी में आए करो।"

"तुम कहां जा रही हो ?"

"वार्ड का चक्कर लगाने। अभी आती हूं।"

वह कमरे से बाहर निकल आयी।

अपने वार्ड का रुख करने के स्थान पर वह हस्पताल के रिसैप्शन की तरफ बढी जहां कि एक पब्लिक टेलीफोन लगा हुआ था।

***

डायरेक्ट्री में नम्बर देख कर वहां से उसने सरताज होटल टेलीफोन किया।

उसे बताया गया कि राहुल रामचन्दानी होटल छोड़ कर जा चुका था।

उसकी जान में जान आई।

राहुल के होटल छोड़ जाने का उसने यही मतलब लगया कि अपने सिर पर मंडराते खतरे का उसे भी अहसास हो गया था और वह वक्त रहते होटल से खिसक गया था।

मन ही मन भगवान से यह प्रार्थना करती हुई, कि वह अपने जहाज पर सवार हो कर बम्बई से भी सुरक्षित कूच कर जाए, वह वापिस लौटी।

अपने कमरे के दरवाजे पर पहुंच कर वह ठिठकी।

"जो मैं कह रहा हूं, उसे कान खोल कर सुनिए।" - अशोक टेलीफोन में कह रहा था - "एक कत्ल के मामले में जिस सेलर को आप तलाश कर रहें हैं, वह सेंट जार्ज रोड पर स्थित सरताज होटल में ठहरा हुआ है। नाम उसका राहुल है - राहुल रामचन्दानी। अगर वह अपने होटल के कमरे में न मिले तो उसे डिमेलो रोड पर स्थित प्रिंसेस बार में भी देखने की तकलीफ फरमाइयेगा... जी हां, सेलर वह वाकई है, सेलर के वेश में कोई बहुरूपिया नहीं... जी नहीं, मैं अपना नाम नहीं बता सकता। मैं किसी झमेले में नहीं फंसना चाहता। नमस्ते।"

***

पुलिस आनन-फानन सरताज होटल पहुंची।

मामूल हुआ कि वहां राहुल रामचन्दानी नामक एक सेलर मंगलवार रात से ठहरा तो हुआ था लेकिन उस रोज दोपहर से पहले ही वह सदा के लिए वहां से कूच कर गया था।

सेलर के बारे में और कुछ मालूम न हो सका।

लेकिन होटल वालों से बहुत खोद-खोद कर सवाल पूछे जाने पर उन दो आदमियों का जिक्र आए बिना न रहा जो कि शायद सेलर के वाकिफकार थे और उससे मिलने कई बार वहां आए थे। उन दो आदमियों का नाम किसी को नहीं मालूम था लेकिन उनका जो हुलिया होटल वालों से सुनने को मिला वह उस हुलिये से मिलता था जो किसी ने रोबीरो और मारुतिराव का बयान किया था।

तब पुलिस वाले प्रिंसेस बार की तरफ लपके।

गुमनाम टेलीफोन काल करने वाले के कथनानुसार वह सेलर प्रिंसेज बार में भी हो सकता था।

***

रोबीरो और मारुतिराव राहुल को फिर रोबीरो के होस्टल के कमरे में ले आए थे। राहुल ने पहले थोड़ी हील हुज्जत की थी लेकिन फिर उसने वहां जाना कबूल कर लिया था। दरअसल ज्यों ज्यों शाम करीब होती जा रही थी, उसके मन में पस्ती और उदासी घर करती जा रही थी। रोबीरो और मारुतिराव उसे कतई पसन्द नहीं थे, वह उन्हें सिर्फ इसलिये अपने साथ चिपकने दे रहा था क्योंकि वह तनहा नहीं रहना चाहता था। तनहा रहने में उसे यह भय था कि कहीं वह वर्षा से आखिरी बार मिलने की खातिर फिर उसकी तलाश में न चल दे, जब कि उसका विवेक उसे बार-बार यही राय दे रहा था कि ऐसी कोई कोशिश करना नादानी थी। वर्षा से फिर मिलने के ख्याल को अपने जेहन से धकेले रखने का यही तरीका उसे सूझ रहा था कि वह उन दोनों की सोहबत में बना रहे और विस्की के जाम पर जाम चढ़ाता रहे।

लेकिन उस रोज पता नहीं क्या बात थी कि विस्की का उसे नशा न होने पाया। और ज्यादा से उसकी तबियत तो खराब हो गई लेकिन नशा न हुआ। अन्त में उन नामाकूल लोगों की सोहबत से और उस घुटनभरे कमरे से आजिज आ कर वह उठ खड़ा हुआ।

"क्या हुआ ?" - रोबीरो हड़बड़ाकर बोला।

"मैं जा रहा हूं।" - राहुल उखड़े स्वर में बोला।

"तुम्हारे जहाज की रवानगी में तो अभी वक्त है।"

"कोई खास वक्त बाकी नहीं है।"

"फिर भी थोड़ी देर तो बैठो।"

उत्तर देने के स्थान पर राहुल दरवाजे की तरफ बढ़ चला।

राबीरो ने घड़ी देखी।

साढ़े पांच बजे थे।

वह पसन्द करता अगर राहुल आधा-पौना घन्टा और ठहर जाता। तब वह वक्त के वक्त ही, अपने जहाज पर पहुंचता।

लेकिन उसकी मर्जी के खिलाफ उसे वहां रोके रखना भी तो मुमकिन नहीं था।

राहुल वहां से बाहर निकल गया तो वे दोनों भी उसके पीछे लपके। वे इमारन से बाहर निकले तो उन्होंने राहुल को अपने ओवरकोट की जेबों में हाथ धंसाये लम्बे डग भरते हुए फुटपाथ पर चलते पाया।

उस वक्त उन तीनों में से कोई नहीं जानता था कि ऐन उस वक्त वहां से थोड़ी ही दूर मौजूद प्रिंसेस बार में कोई दर्जनभर पुलिस वाले उन्हीं की तलाश में पहुंचे हुए थे।

गनीमत थी कि राहुल ने उधर का रुख नहीं किया था। सड़क पर अखबार वाला छोकरा ईवनिंग न्यूज बेच रहा था।

राहुल ने उससे अखबार लेने की कोशिश की लेकिन तभी रोबीरो लपक कर उसके करीब पहुंच गया। उसने अखवार वाले छोकरे को परे धकेल दिया।

राहुल ने हड़बड़ा कर उनकी तरफ देखा।

"क्यों अठन्नी खराब करते हो !" - रोबीरो जबरन मुस्कराता हुआ बोला - "यही अखबार हमारे पास है।"

साथ ही उसने मारुतिराव को इशारा किया जिसने कि बिना कुछ समझे-बूझे अपनी जेब से ईवनिंग न्यूज की अपने वाली प्रति निकाली।

"लेकिन" - राहुल ने कहना चाहा - "अठन्नी में क्या आफत...."

"अखबार में देखना क्या चाहते हो तुम ?" - रोबीरो बोला।

"मटके का नतीजा। मुझे अभी याद आया है कि कल मैंने मटके में एक हजार रुपये लगाये थे।"

"भोले बादशाह, मटके का नतीजा कहीं अखवार में छपता है !"

"नहीं छपता ?"

"नहीं छपता।"

"लेकिन रेस के और लाटरी के नतीजे तो..."

"वे कानूनी जुए हैं। मटका गैरकानूनी है। पुलिस को पता लग जाए तो मटका लगाने और लगवाने वाला दोनों

गिरफ्तार हो सकते हैं।"

"ओह ! तो फिर मुझे कैसे पता लगेगा कि मेरा नम्बर लगा या नहीं ?"

"वही बताएगा जिसने तुम्हारा दांव का रोकड़ा कबूल किया था।"

"वह बनारसी पान वाला ?"

"हां। नम्बर क्या लगाया था तुमने ?"

"सत्ता।"

"सिंगल नम्बर तो आज चौक्का निकला है। क्यों मारुतिराव ?"

मारुतिराव ने हड़बड़ाकर सहमति में सिर हिलाया और बोला - "बरोबर। बरोबर।"

"ओह !" - राहुल के मुंह से निकला। रोबीरो के हाथ में मौजूद अखबार में उसकी दिलचस्पी एकाएक खत्म हो गई। उसने अखबार की तरफ हाथ न बढ़ाया। फिर उन दोनों से विमुख होकर वह आगे बढ़ा।

"डॉक का रास्ता यह नहीं है।" - रोबीरो लपक कर उसके पहलू में पहुंचता हुआ बोला।

"नहीं है तो क्या हुआ ?" - राहुल रूखे स्वर में बोला।

"सोचा, तुम्हें बता दूं। तुम डॉक से उलटी तरफ जा रहे हो।"

"तो क्या हुआ ?"

"ऐसे तो तुम्हारा जहाज छूट जाएगा।"

"तो तुम्हें क्या ?"

"हमें तो कुछ नहीं लेकिन...."

"और भगवान के लिए तुम लोग मेरा पीछा छोड़ो।"

"लो। तुम तो बुरा मान गए। हम तो सिर्फ तुम्हारी मदद करने की कोशिश कर रहे थे।"

"मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत नहीं।"

"ठीक है। ठीक है।"

"अब मेरे पीछे आने की कोशिश मत करना।"

"हमें क्या जरूरत पड़ी है तुम्हारे पीछे आने की ?"

"गुड।"

राहुल आगे बढ चला।

उन दोनों ने उसका पीछा न छोड़ा। उससे दूर-दूर रहकर वे उसके पीछे लगे रहे।

थोड़ी देर बाद राहुल एक बार में घुस गया।

वे दोनों बार के करीब पहुंचे लेकिन उन्होंने भीतर घुसने का उपक्रम न किया।

"यह तो फिर बार में घुस गया" - मारुतिराव व्यग्र भाव से बोला - "इसका जहाज..."

"फोन कर रहा है।" - रोबीरो उसकी बात काट कर बोला - "फोन कर रहा है।"

भीतर राहुल फोन करता रहा और वे दोनों बाहर डटे रहे।

***

अशोक वर्षा को अपनी कार पर भायखला लाया।

सारे रास्ते वह वर्षा को समझाता रहा था कि पिछली रात की घटना को मद्देनजर रखते हुए उसका वहां अकेला रहना ठीक नहीं था। लेकिन वर्षा की यही रट रही थी कि वहां कोई खतरा नहीं था।

अब अशोक उसके गैस्ट हाउस के कमरे में मौजूद था।

"मैं अब भी कहता हूं" - वह बोला - "तुम्हें यहां अकेले नहीं रहना चाहिए। वे दोनों बदमाश फिर लौट सकते हैं।"

"मुझे उम्मीद नहीं" - वर्षा बोली - "वैसे भी मिसेज ग्रे ने मेरे दरवाजे की चिटकनी भी लगवा दी है और ताला भी बदलवा दिया है। नये ताले का भीतर की तरफ वाला खटका बाखूबी काम करता है। मैंने आजमाकर देखा है।"

"तुम्हारी जिद मेरी समझ से बाहर है।"

वर्षा खामोश रही।

"यह तो आ बैल मुझे मार जैसी बात हो गई।"

वर्षा फिर भी खामोश रही।

"देखो, हो सकता है कि असल में वह सेलर और वे दोनों बदमाश एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हों। हो सकता है कि

उस कत्ल में उन तीनों की शिरकत हो। अब जब कि केस में पुलिस का दखल पैदा हो चुका है, वे तुम्हें अपने लिये खतरा मान सकते हैं। और तुम्हें... तुम्हें एलीमिनेट करने की कोशिश कर सकते हैं। तुम उन लोगों के खिलाफ चश्मदीद गवाह का काम कर सकती हो। अपनी जान बचाने के लिए वे लोग तुम्हारी जान ले सकते हैं।"

"तुम खामखाह मुझे डरा रहे हो।"

"मैं तुम्हें खामखाह नहीं डरा रहा। मैं हकीकत बयान कर रहा हूं। जरा हालात पर फिर से गौर करो और बताओ कि क्या वे दोनों बदमाश उस सेलर के साथी नहीं हो सकते ? मंगलवार रात को सेलर की तरह वे दोनों भी उस खंडहर इमारत में मौजूद थे। कल तुम्हें राहुल ने जब अपने होटल में बुलाया था तो वे दोनों भी वहां मौजूद थे। उन्होंने वहीं तुम्हारा काम तमाम करने की कोशिश की थी लेकिन तुम्हारी किस्मत अच्छी थी जो कि तुम कल बच निकलने में कामयाब हो गई थीं। रात को उन दोनों ने फिर तुम पर हमला करने की कोशिश की थी। अब भी तुम कहती हो कि तुम्हें उनसे खतरा नहीं ?"

"मुझे राहुल से खतरा नहीं।"

"वह कातिल है। वह एक आदमी को मार भी चुका है।"

"वह एक मक्खी नहीं मार सकता।"

"वहम है तुम्हारा।"

"यह हकीकत है।"

"पुलिस यूं ही उसकी तलाश में नहीं लगी हुई।"

"पुलिस एक सेलर की तलाश में है।"

"वह सेलर राहुल है।"

"अगर है तो पुलिस को उसकी बाबत गलतफहमी हुई है। ऐसा कोई पहली बार नहीं हो रहा जब कि पुलिस किसी गलत आदमी के पीछे पड़ी हो।"

"अब तुम उसकी हिमायत कर रही हो।"

"मैं किसी की हिमायत नहीं कर रही।"

"यह हिमायत नहीं तो और...."

"ओह, अशोक, फिनिश इट। फार गाड सेक, फिनिश इट। सात बजे से पहले मैं यहां से कहीं नहीं जाने वाली।"

फिर साथ ही उसने अपनी जुबान काट ली।

"ओहो" - अशोक व्यंग्यपूर्ण सवर में बोला - "तो यह बात है ! तुम उसके जहाज के कूच करने के वक्त तक यहां मौजूद रहना चाहती हो। मिलने आने वाला है वह तुमसे ! वादा किया है उसने आखिरी बार तुमसे मिल कर जाने का !"

वर्षा खामोश रही।

"आने दो हरामजादे को। मैं टांगें तोड़ दूंगा उसकी।"

वर्षा ने अपलक उसे सिर से पांव तक देखा।

अशोक उसकी उस निगाह का मतलब समझे बिना न रह सका। वर्षा की निगाह उसे साफ कहती मालूम हो रही थी कि वह ऐसे किसी काम में सक्षम नहीं था।

"ठीक है। मैं जाता हूं" - एकाएक वह उछल कर खड़ा हो गया और कहरभरे स्वर में बोला - "जब वह आ जाए तो उसे हमेशा के लिए यहीं बिठा लेना। अब शादी भी उसी से करना, मिस वर्षा प्रधान।"

"अशोक !"

"गुडबाई !"

और वह फर्श को रौंदता हुआ वहां से चला गया।

वर्षा बुत बनी पीछे बैठी रही।

कुछ क्षण बाद उसने घड़ी पर निगाह डाली।

छः बजने को थे।

सात बजने में अभी कोई एक घन्टा बाकी था।

वह महसूस कर रही थी कि उसके दिल के किसी कोने में छुपा बैठा एक चोर बार-बार सिर उठा रहा था और उसे इस बात के लिए प्रेरित कर रहा था कि वह उस अजनबी सेलर के आगमन की उम्मीद रखे। उसका आना उतना ही बेमानी था जितना कि उसका न आना लेकिन फिर भी न जाने क्यों वह उसकी आमद की ख्वाहिशमन्द थी।

नीचे से मुख्य द्वार खुलने और फिर भड़ाक के बन्द होने की आवाज आई।

एकबारगी वह अपने स्थान से उठी। उसका जी चाहा कि वह खिड़की में जा कर अशोक को आवाज दे और उसे वापिस बुला ले।

या भाग कर उसके पीछे जाए और उसे रोक ले।

लेकिन उसने ऐसा कुछ न किया।

वह धीरे से वापिस अपने स्थान पर बैठ गई।

उसका दिल उस वक्त अशोक के वहां से चले जाने के हक में ही गवाही दे रहा था। उसके भीतर छुपा चोर उसे यही सुझा रहा था कि जब राहुल वहां आए - अगरचे कि वह वहां आए - तो अशोक वहां न हो।

उसने महसूस किया कि उस घड़ी उसे सबसे ज्यादा डर अपने आप से लग रहा था।

***

चम्पकलाल प्रिंसेस बार पहुंचा।

उसे यह देख कर बड़ी हैरानी हुई कि बार के भीतर दरवाजे के करीब कुर्सी डाले एक वर्दीधारी हवलदार वहां बैठा था।

"यह हवलदार यहां क्यों बैठा है ?" - उसने जान से पूछा।

"अपने रोबीरो और मारुतिराव के इन्तजार में बैठेला है" - जान ने बताया - "कोई तीन घण्टा पहले तीन हवलदारों के साथ एक सब-इन्स्पेक्टर इधर आयेला था। वो दोनों उस मोटे सेलर के साथ तभी इधर से गयेला था। सब-इन्स्पेक्टर उन दोनों के इन्तजार में इस हवलदार को पीछू छोड़ कर गयेला है।"

"पुलिस को उन दोनों की तलाश क्यों है ?"

"अपुन को नहीं मालूम। लेकिन धोते की वजह से हो सकती है। पुलिस इधर धोते की बाबत भी पूछताछ करेला था।"

"पुलिस उन दोनों के घर भी गई होगी ?"

"नक्को। उनके घर का पता ही तो किसी को नहीं मालूम। तभी तो उन दोनों के यहां लौटने के इन्तजार में यह हवलदार इधर बैठेला है।"

"मुझे मालूम है।"

"क्या ?"

"रोबीरो के घर का पता।"

"तो बाप, जा कर हवलदार को बताओ ताकि यह यहां से दफा हो। यह तो यहां बैठा धन्धा खोटा करेला है। इसे देखकर तो ग्राहक दरवाजे से ही वापिस भाग रहे हैं।"

"मैं अभी बताता हूं।"

और चम्पकलाल दरवाजे पर बैठे हवलदार की तरफ बढा।

तभी बार में सात-आठ पुलिसिये और घुस आए।

चम्पकलाल ने उन्हें रोबीरो के गोवा स्ट्रीट में स्थित ठिकाने का पता बताया और साथ ही यह भी बताया कि न सिर्फ उसका जोड़ीदार मारुतिराव वहीं हो सकता था बल्कि उनकी गलत सोहबत में फंसा वह सेलर भी वहीं हो सकता था जिसकी तलाश में वे आनन-फानन वहां पहुंचे थे।

वे आनन-फानन गोवा स्ट्रीट पहुंचे।

तब वहां से राहुल को और राहुल के पीछे-पीछे रोबीरो और मारुतिराव को कूच किए मुश्किल से पांच मिनट हुए थे।

तीनों ही इस हकीकत से बेखबर थे कि गिरफ्तारी से वे किस कदर बाल-बाल बचे थे।

खास तौर से रोबीरो और मारुतिराव के लिए तो यही छक्के छुड़ा देने वाली बात होती कि पुलिस उनके पीछे लग चुकी थी।

***

"यह साला अब फोन के पीछे क्यों पड़ गया है ?" - सिर पर मंडराते खतरे से बेखबर मारुतिराव उतावले स्वर में बोला।

रोबीरो खामोश रहा। राहुल के अजीबोगरीब व्यवहार से फिक्रमन्द वह भी कम नहीं था।

"मुझे तो यह अपने जहाज पर चढता नहीं मालूम होता।" - मारुतिराव फिर बोला।

"नहीं चढेगा तो क्या करेगा ?" - रोबीरो बोला।
"हमारे लिए कोई मुसीबत खड़ी करेगा और क्या करेगा ?"
"घबरा नहीं, मोटे। अगर यह जहाज पर नहीं चढा तो सीधा स्वर्ग की सीढी चढेगा।"
"कैसे ?"
"ऐसे ?" - रोबीरो ने अपनी जेब से अपना लोहे का डण्डा निकाल कर उसे दिखाया।
"ओह !"
रोबीरो ने डण्डा वापिस जेब में रख लिया।
तभी राहुल बार से बाहर निकला। वह बिना इधर-उधर निगाह डाले सड़क पर चलने लगा।
वे दोनों फिर सावधानी से उसके पीछे लग गए।
थोड़ी ही देर बाद उन्हें अनुभव हुआ कि इस बार राहुल ने सीधे डॉक का रुख किया था।
उन्होंने चैन की सांस ली।
एक बार राहुल ने रास्ते में रुक कर किसी राहगीर से बात की।
जरूर वह यही तसदीक कर रहा था कि वह डॉक के सही रास्ते पर था। वे दोनों खामोशी से उसके पीछे लगे रहे।
राहुल अपनी मंजिल पर पहुंचा।
डॉक के समीप पहुंचकर वह ठिठका। उसने एक बार घूम कर बड़ी कातर निगाहों से पीछे देखा। उस वक्त वह बड़ा टूटा हुआ, अपने आप में सिकुड़ा हुआ और दयनीय व्यक्ति लग रहा था। उसके चेहरे पर उस वक्त एक ऐसे मुसाफिर जैसे भाव थे जिसका सबसे कीमती सामान पीछे कहीं छूट गया था।
फिर वह घूमा और उस फाटक से भीतर दाखिल हो गया जिससे आगे का रास्ता उसे उसके जहाज तक ले जाता था।
चौकीदार ने उसके पीछे फाटक बन्द कर दिया।
"खतम !" - रोबीरो बोला।
मारुतिराव ने भी चैन की सांस ली।
"यह खतरा तो टला।" - वह बोला।
"चलो, अब दूसरे खतरे की खबर लें।"
"लड़की की ?"
"हां।"
मारुतिराव ने सहमति में सिर हिलाया और बड़ी खामोशी से अपने जोड़ीदार के साथ हो लिया।

***

मन मन के कदम रखता राहुल राहदारी पर बढ रहा था। उसके भीतर उस घड़ी एक तूफान उठ रहा था। उसे लग रहा था कि उसकी आगे वाली जिन्दगी में अब उसे समुद्र की लहरों में भी सकून हासिल होने वाला नहीं था। इतनी खाली और बेमानी जिन्दगी तो उसकी पहले भी नहीं थी जितनी कि अब हो गयी थी। अब उसका दिल पुकार पुकार कर दुहाई दे रहा था कि उसे वर्षा से मुहब्बत हो गयी थी। वह जानता था कि वर्षा से आखिरी बार मिले बिना उस शहर से रुख्सत हो कर वह अपने आप पर भारी जुल्म ढा रहा था लेकिन वह मजबूर था। जिस रिश्ते का हासिल कुछ न हो, उससे उम्मीद की डोर बांधे रहने में कहां की समझदारी थी !
राहदारी के सिरे पर एक और फाटक था और उससे आगे राहुल को अपना जहाज खड़ा दिखई दे रहा था।
उसने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली।
साढे छ: बजे थे।
कम-से-कम इस बार वह निर्धारित समय से पहले शिप पर पहुंच रहा था। उसके कदम उसे उसके जहाज की तरफ ढो रहे थे जब कि उसका दिल पीछे छूटा जा रहा था और उसका जुनून उसे कह रहा था कि वह उस नामुराद जहाज से किनारा करे और वापिस उस अजनबी शहर में लौट चले जहां से फौरन कूच कर जाने की उसकी अक्ल उसे राय दे रही थी।
जी मारकर भी जीना कोई जीना है - उसके भीतर कहीं से आवाज उठी।
लेकिन लड़की तो उससे मुहब्बत नहीं करती थी - उसकी अक्ल ने जिरह की - वह तो किसी की मंगेतर बन भी चुकी थी।

तो क्या हुआ - उसके दिल से हूक उठी - जहाज की तारीक और नाकारा जिन्दगी से तो यही अच्छा था कि वह अपनी एक तरफा मुहब्बत को अपने मन में संजोये उस शहर का होकर रह जाये जहां कि वर्षा रहती थी। यूं कम-से-कम वह उसे दिखाई तो देती रहती।

राहुल ने बड़ी कठिनाई से वह आवारा ख्याल अपने जेहन से झटका।

एक अनोखी बात राहुल के साथ यह भी हुई कि जिस पूनम की वजह से उसका इतना दिल टूटा था कि उसने सुकून हासिल करने के लिए बंजारों जैसी जिन्दगी अख्तियार कर ली थी, जिस पूनम की वजह से वह मूलरूप से वर्षा की तरफ आकर्षित हुआ था, वर्षा से मिलने के बाद से उस पूनम का ख्याल उसे एक बार भी नहीं आया था।

वह दूसरे फाटक पर पहुंचा।

वहां का चौकीदार एक स्टूल पर बैठा बड़ी तन्मयता से ईवनिंग न्यूज पढ रहा था। वह अखबार को कहीं बीच में से पढ रहा था और उसने उसे इस प्रकार खोला हुआ था कि उसके मुखपृष्ठ का रुख राहुल की तरफ था।

“अबे, फाटक खोल।” - राहुल झुंझलाकर बोला।

“खोलता हूं। खोलता हूं।” - वह बोला लेकिन उसने तुरन्त उठने का कोई उपक्रम न किया।

राहुल की निगाह अनायास ही अखबार के मुखपृष्ठ पर पड़ी। उसकी निगाह मुखपृष्ठ पर छपी एक तस्वीर पर अटक कर रह गयी। उस तस्वीर में एक बिना दरवाजों की कार दिखाई दे रही थी।

बिना दरवाजों की कार !

बिना दरवाजों की कार !!

राहुल के जेहन में एकाएक जैसे बिजली कौंध गयी। एकाएक उसे यूं लगा जैसे गहरी धुंध की परतों के पीछे छुपी हकीकत उजागर होने लगी हो, जैसे वह किसी लम्बी नींद से जागा हो। कार की उस तस्वीर ने उसके लिए बिजली के उस स्विच जैसा काम किया था जो पहले नहीं चलता था और अब एकाएक चल पड़ा था और रोशनी की जगमग-जगमग हो गयी थी।

अपने उस रात के राही की सूरत अब उसकी आंखों के सामने साफ प्रकट हो रही थी।

चौकीदार ने फाटक खोला तो उसने उसके हाथ से अखबार झपट लिया और जल्दी-जल्दी उस तस्वीर से ताल्लुक रखती खबर को पढने लगा।

कुछ क्षण के बाद उसने अखबार वापिस हकबकाये से चौकीदार के हाथ में धकेल दिया।

जिस शख्स की तलाश में वह जगह जगह मारा मारा फिरता रहा था, वह मिल चुका था।

और सिर्फ वह जानता था कि उस शख्स का कत्ल कहां हुआ था। अब वह इस बात का भी अनुमान लगा सकता था कि वह कत्ल किस ने किया हो सकता था।

चौकीदार फाटक बन्द कर रहा था।

राहुल वापिस घूमा और बन्द होते फाटक के वापिस बाहर निकल गया। उसके कदम अपने आप ही अपने जहाज से विपरीत दिशा में उठने लगे।

***

अपने कमरे में वर्षा बुत की तरह एक कुर्सी पर बैठी हुई थी। वह पता नहीं कब से एकटक घड़ी की तरफ देख रही थी।

वक्त सात से ऊपर हो गया तो उसकी जान में जान आयी।

अब राहुल का जहाज बन्दरगाह से रवाना हो चुका होगा - उसने मन ही मन सोचा।

राहुल के वहां न आने से उसे मायूसी तो हुई थी लेकिन साथ ही उसे इस बात का हार्दिक संतोष भी था कि अब वह किसी खतरे से बाहर था।

तब उसे पहली बार महसूस हुआ कि पता नहीं कब से वह अंधेरे में बैठी हुई थी।

उसने बिजली का एक स्विच ऑन किया।

यह सोच कर उसके मन में एक टीस-सी उठी कि वह दानव जैसे जिस्म और अबोध बालक जैसे मिजाज वाला सेलर उसे जिन्दगी में दोबारा कभी दिखाई नहीं देने वाला था। उस घड़ी उसे ऐसा भी न लगा कि वह एक पराये मर्द के बारे में यूं सोच कर अपने होने वाले पति के साथ नाइंसाफी कर रही थी।

लेकिन अब तो कहानी खत्म हो गई थी - उसने एक गहरी सांस लेते हुए सोचा - अशोक उससे वक्ती तौर से, वक्ती जुनून की वजह से खफा था, वह उसे मना सकती थी, राजी कर सकती थी।

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई।

उसने हड़बड़ाकर दरवाजे की तरफ देखा।
जरूर अशोक वापिस लौट आया था। जरूर गुस्सा उतर जाने के बाद उसे लगा था कि उसने वर्षा पर खामाखाह खफा हो कर, उसे खरी खोटी सुनाकर, उसके साथ ज्यादती की थी।
वह दरवाजे की तरफ बढी।
दरवाजा खोलने से पहले एकाएक वह सहम कर ठिठक गयी।
कहीं पिछली रात वाले बदमाश ही तो वापिस नहीं लौट आये थे ? ऐसी कोई सम्भावना जाहिर की तो थी अशोक ने।
दरवाजे पर फिर दस्तक हुई।
"कौन ?" - वर्षा ने सशंक स्वर में पूछा।
"राहुल।" - उत्तर मिला।
राहुल !
वर्षा का दिल जोर से उछला।
यह असम्भव बात कैसे हो गयी थी ? राहुल कैसे लौट आया था ? क्या उसकी वजह से -
आगे वह न सोच सकी। उसका दिल नगाड़े की तरह बजने लगा था और, पता नहीं क्यों, एकाएक वह सिर से पांव तक थर थर कांपने लगी थी।
कांपते हाथों से उसने दरवाजा खोला।
सामने राहुल खड़ा था। उसने मुस्कराते हुए कमरे में कदम रखा।
किसी अज्ञात भावना से प्रेरित होकर वर्षा उसके विशाल सीने से जा लगी और रोने लगी।
राहुल ने अपने पांव की ठोकर से अपने पीछे दरवाजा बन्द कर दिया। उसके हाथ अपने आप ही वर्षा के नाजुक जिस्म के गिर्द लिपट गये।
उस घड़ी उसे स्वर्गिक सुख की अनुभूति हो रही थी।
जल्दी ही जुनून का वह दौर गुजर गया और फिर अपने आप से शर्मिन्दा होती हुई वह राहुल से अलग हुई।
"तुम लौट कैसे आये ?"
वह मुस्कराया।
"मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा कि मैं तुम्हें अपनी आंखों के सामने खड़ा देख रही हूं।"
"मैं तो चला ही गया था" - वह बोला - "लेकिन तुम्हें यह बताने लौट आया कि मंगलवार रात को असल में क्या हुआ था।"
"मुझे मालूम है उस रात को क्या हुआ था।"
"तुम्हें मालूम है ?" - राहुल हैरानी से बोला।
"उस रात तुमने नशे में अपने उस रात के साथी का खून कर दिया था।"
"मैंने ?"
"हां। और शायद तुम्हें मालूम नहीं कि पुलिस बड़ी सरगर्मी से तुम्हारी तलाश कर रही है।"
"लेकिन मैंने खून नहीं किया।"
"तुम नशे में थे। तुम भूल गये हो कि तुमने क्या किया था।"
"लेकिन..."
"तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए था। तुम गिरफ्तार हो सकते हो। सात तो बज भी चुके हैं। तुम्हारा जहाज..."
"मेरा जहाज मुझे छोड़कर नहीं जाएगा" - राहुल पूरे विश्वास के साथ बोला - "मेरे कैप्टेन ने हमेशा मेरा इन्तजार किया है। इस बार भी करेगा।"
"लेकिन तुम..."
"सुनो, सुनो, सुनो।"
"क्या सुनूं ?"
"पहले तो यह बात कबूल करो कि हमेशा की तरह मैं आज नशे में नहीं हूं।"
"ओके, तुम नशे में नहीं हो।"
"अब यह भी कबूल करो कि मैंने किसी का कत्ल नहीं किया।"
"लेकिन धोते नाम के उस आदमी का कत्ल हुआ है और तुम..."

"तुम सुनो तो। पहले मुझे अपनी बात तो पूरी करने दो।"

"अच्छा।"

"देखो, पिछले तीन दिनों से नशे ने मेरे दिमाग को जड़ किया हुआ था। जो बातें मुझे अपने दिमाग पर जोर देने पर भी याद नहीं आ रही थीं, अब वे सब धीरे धीरे मुझे याद आ रही हैं। अब मुझे काफी हद तक इस बात का अन्दाजा है कि मंगलवार रात को क्या हुआ था।"

"क्या हुआ था ?"

"मैं नशे में था। उस रात को मैंगलोर स्ट्रीट में अपने पीछे आता जो आदमी तुमने देखा था, वह मैं था।"

"लेकिन तुम तो इमारत के भीतर वाले कमरे में फर्श पर..."

"वह धोते था। वहां फर्श पर पड़े धोते को - उस शख्स को जिसकी कि कल लाश बरामद हुई है - देखा था तुमने। और वह वहां नशे में नहीं लेटा हुआ था। वह शख्स वहां मरा पड़ा था। तुमने वहां उसकी लाश देखी थी। तुम्हारे वहां से भाग खड़े होने के बाद मैं खंडहर इमारत के भीतर घुसा था।"

"क्यों ?"

"क्योंकि इमारत के बाहर जो दो आदमी मुझे मिले थे, उन्होंने मुझे कहा था कि वह होटल था। नशे ने मेरी मति भ्रष्ट की हुई थी। उन दोनों के चले जाने के बाद भी यह बात मेरे जेहन में बजती रही थी कि वह होटल था।"

"ओह !"

"बहरहाल मैं इमारत के भीतर गया था। वहां पिछवाड़े के कमरे के फर्श पर मुझे वह आदमी - धोते - पड़ा मिला था। मैंने उसे उठाया था और पिछवाड़े के रास्ते से ही उसे अपने साथ ले चला था।"

"इसी वजह से" - वर्षा के मुंह से निकला - "जब मैं अशोक के साथ वापिस इमारत में गई थी तो वहां कोई नहीं था।"

"जाहिर है।"

"तुम्हें पता नहीं लगा कि वह आदमी मरा हुआ था ?"

"नहीं पता लगा। नशे में नहीं पता लगा। पता लगा होता तो क्या मैं यूं उसकी लाश ढोता ? पहले मुझे याद नहीं आ रहा था कि मैंने उसे कहां छोड़ा था लेकिन अब यह बात मुझे मालूम है। नशे में मैं धोते की लाश के साथ उस अंधेरे मैदान में दाखिल हो गया था, मैं होश में होता तो जिस में मैं हरगिज भी कदम न रखता। वहां मैदान में खड़ी बिना दरवाजों की एक कार की पिछली सीट पर मैंने धोते को डाल दिया था और खुद उसके लिए और अपने लिए रात गुजराने को कोई जगह तलाश करने के लिए आगे बढ गया था।"

"ओह !" - वह एक क्षण ठिठकी और फिर बोली - "लेकिन अगर तुमने नहीं किया तो किसने किया उसका कत्ल ?"

"यह मुझे मालूम नहीं। मुझे उस रात की सारी बातें अभी भी याद नहीं। सारी बातें याद आ जायें तो शायद यह भी सूझ जाए कि उस बेचारे का कत्ल किसने किया था !"

"कत्ल अगर तुमने नहीं किया तो जरूर उन दो आदमियों ने किया था जो उस रात मेरे सामने भीतर से बाहर निकले थे।"

"वो दो आदमी... कल रात की बात तो मैं भूल ही गया।"

"जाहिर है। तभी तो मुझे वहां बुला कर तुम खुद वहां से गायब हो गये थे।"

"तुमने इनकार जो कर दिया था आने से।"

"मैं आयी थी।"

"जो कि तुम्हारी मेहरबानी थी। मैं ही नालायाक साबित हुआ था जो..."

"छोड़ो।"

"जिन दो आदमियों पर निगाह डालने के लिए मैंने तुम्हें वहां बुलाया था, तुमने उन्हें देखा था ?"

"एक लम्बा और पतला और दसरा मोटा और ठिगना ?"

"हां।"

"देखा था।"

"वे दोनों मेरे से पहले वहां मौजूद थे ?"

"दोनों नहीं, एक। एक पहले से मौजूद था। दूसरा तुम्हारे बाद आया था।"

"लेकिन तुमने दोनों को अच्छी तरह से देखा था ?"

"देखा था। और देखा ही नहीं था, साफ पहचाना भी था।"

"कौन थे वो ?"

"मुझे नहीं पता वो कौन थे लेकिन वो दोनों वही थे जिन्हें मैंने मंगलवार रात को उस खंडहर इमारत में देखा था।"

"पक्की बात ?"

"हां।"

"फिर तो वही दोनों हत्यारे हैं। वे हत्यारे हैं इसी वजह से वे तीन दिन से लसूड़े की तरह मेरे साथ चिपके हुए थे। जरूर उन्हें मेरे से खतरा है।"

"मेरे से भी ?"

"तुम्हारे से भी ?"

"हां। कल रात वे दो बार मेरा कत्ल करने की कोशिश कर चुके हैं।"

"क्या !" - राहुल सख्त हैरानी से बोला।

"मैं सच कह रही हूं।"

"क्या हुआ था ?"

वर्षा ने बताया।

"मैं खून पी जाऊंगा दोनों का।" - सारी बात सुन चुकने के बाद राहुल बोला - "कीमा बना दूंगा मैं दोनों का।"

"क्या जरूरत है ? अब पुलिस ही उन्हें संभाल लेगी।"

"पुलिस ?"

"हां। तुम्हें पुलिस के पास चलकर सारी कहानी सुनानी चाहिए। फिर पुलिस उन दोनों को गिरफ्तार कर लेगी और खुद ही उन्हें उनकी करतूत की सजा दिलायेगी।"

"मैं पुलिस के पास नहीं जा सकता। मैं पुलिस के पचड़े में पड़ा तो मेरा जहाज छूट जायेगा।"

"लेकिन तुमने तो कहा था कि तुम्हारा कैप्टेन तुम्हारा इन्तजार करेगा ?"

"करेगा। लेकिन किसी हद तक ही तो करेगा, हमेशा तो नहीं करता रहेगा।"

"ओह !"

"पुलिस को हकीकत तुम भी बयान कर सकती हो। जो थोड़ा-सा वक्त मेरे पास है, उसमें मैं पुलिस के पास जाने की जगह मौकायवारदात पर जाना चाहता हूं।"

"वहां किसलिये ?"

"जैसे उस बिना दरवाजे वाली कार को देख कर मुझे कुछ निहायत अहम बातें आ गयीं, वैसे ही मौकायवारदात को दोबारा देख कर मुझे कुछ और भी बातें याद आ सकती हैं।"

"फायदा क्या होगा ?"

"कुछ तो होगा। और नहीं तो मुझे यह तसल्ली तो होगी कि जानने लायक और कुछ बाकी नहीं था। अगर यह जाने बिना, कि वह आदमी कैसे मरा था, मैं जहाज पर चढ गया तो मुझे उम्र भर उसकी मुर्दा हालत के सपने आते रहेंगे। अभी भी यह सोच कर मेरे शरीर में झुरझुरी दौड़ जाती है कि उस रात मैंने एक लाश को खंडहर इमारत से उस मैदान तक ढोया था।"

वर्षा खामोश रही।

राहुल ने एक हसरतभरी निगाह वर्षा पर डाली और फिर बोला - "मैं चलता हूं।"

उन तीन शब्दों में उसके अन्तर की ऐसी टीस थी कि जैसे किसी ने उसके दिल की मुट्ठी में जकड़ कर दबाया हो तो वह आवाज निकली हो।

"मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूं।" - वर्षा के मुंह से अपने आप ही निकल गया।

राहुल ने हैरानी से उसकी तरफ देखा। फिर राहुल के चेहरे पर खुशी के ऐसे भाव आये जैसे उसे कुल जहान की दौलत हासिल हो गयी हो।

बाहर सड़क पर रोबीरो और मारुतिराव उसी वक्त पहुंचे थे। अभी वे अपना कोई अगला कदम निर्धारित करने की कोशिश ही कर रहे थे कि उन्हें गैस्ट हाउस की इमारत से बाहर निकालते राहुल और वर्षा दिखायी दिये।

राहुल पर निगाह पड़ते ही उन दोनें के छक्के छूट गये। जिस आदमी को वे अपने जहाज पर सवार होकर वहां से रवाना भी हो गया समझ रहे थे, वह साक्षात उनके सामने मौजूद था।

***

मैदान तक राहुल और वर्षा टैक्सी पर पहुंचे।

वहां घटनास्थल पर उन्होंने कई पुलसियों को और कई तमाशाईयों को मौजूद पाया। पुलिस बिना दरवाजों वाली कार से पता नहीं कौन-सा नतीजा हासिल करना चाहती थी कि उस वक्त उस कार को क्रेन द्वारा उठा कर एक विशाल ट्रक में लादा जा रहा था। कार के साथ कोई छेड़खानी न हो, शायद इसीलिये दिनभर वहां पुलिस का पहरा रहा था।

वर्षा ने राहुल की तरफ देखा।

राहुल ने उसे आगे बढने का संकेत किया।

दोनों उस सड़क की तरफ बढे जो आगे मैंगलोर स्ट्रीट की तरफ जाती थी।

वे अभी कुछ ही कदम उस सड़क पर बढे थे कि एकाएक राहुल बोला - "मैं इधर से नहीं आया था।"

"लेकिन"- वर्षा बोली - "मैंगलोर स्ट्रीट से यहां तक पहुंचने का सीधा रास्ता तो यही है।"

"ठीक। लेकिन मैं इस रास्ते से नहीं आया था। मुझे अब याद आ रहा है कि अपने रात के राही के साथ जिस रास्ते से मैं यहां पहुंचा था, उसमें बार-बार मेरे कन्धे दीवारों के साथ टकरा रहे थे। यहां की इमारतों की कतार में तो इमारत से आगे कम्पाउन्ड की दीवारें हैं जो कि कन्धों तक ऊंची हैं भी नहीं।"

"इन इमारतों के पिछवाड़े में भी गली है।"

"उधर चलो।"

उन्होंने यह गली देखी। वह संकरी थी और वहां दीवारें आठ से दस फुट तक ऊंची थीं।

"मैदान तक मैं इसी गली के रास्ते पहुंचा था" - राहुल निश्चयात्मक स्वर में बोला - "यह संकरी गली अब मुझे खूब याद आ रही है। हम इसी से होकर आगे चलते हैं।"

"गली में अन्धेरा है।" - वर्षा सशंक स्वर में बोली।

"कोई बात नहीं। अगर मैं नशे में धुत्त होकर इस अन्धेरी गली को पार कर सकता था तो होश में भी कर सकता हूं।"

"मुझे डर लगता है।"

"तुम बिल्कुल मत डरो। जब तक मैं तुम्हारे साथ हूं, डरने की कोई बात नहीं।"

राहुल के उन शब्दों से वर्षा को भारी तसल्ली महसूस हुई। उसने नि:संकोच उस नीमअन्धेरी गली में कदम रखा।

रोबीरो ने उनके पीछे गली में कदम रखने की कोशिश नहीं की।

मारुतिराव ने प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी तरफ देखा।

"इस गली में" - रोबीरो बोला - "इनके पीछे हमारी मौजूदगी इनसे छुपी नहीं रहेगी। वह गैंडा सावधान हो गया तो गड़बड़ हो जाएगी।"

"तो क्या किया जाए ?"

"बाहरली सड़क से आगे चलते हैं। देख लेना यह पट्ठा पहुंचेगा मैंगलोर स्ट्रीट ही।"

"खंडहर इमारत में ?"

"हां।"

"वहां क्या करने जा रहा है यह ?"

"क्या पता क्या करने जा रहा है ? और पता नहीं लड़की को क्यों साथ ले जा रहा है ? और पता नहीं साला अपने जहाज पर क्यों नहीं चढा ?"

मारुतिराव चुप रहा।

वे दोनों कुछ क्षण और राहुल और वर्षा को अन्धेरी गली में जाता रेखते रहे, फिर जब वे दृष्टि से ओझल होने लगे तो वे बाहरली सड़क की ओर लपके।

***

अपने घर पहुंचने तक अशोक का गुस्सा उतर चुका था। अब उसे अपने बेहूदा व्यवहार के लिए शर्म आने लगी थी। वह महसूस कर रहा था कि वह वर्षा को कुछ ज्यादा ही बुरी बुरी बातें कह आया था। वर्षा से माफी मांगने की नीयत से वह कई बार उसके टेलीफोन पर घण्टी कर चुका था लेकिन जवाब नहीं मिल रहा था। पता नहीं फोन खराब था और दूसरे सिरे पर घण्टी बज ही नहीं रही थी या फोन उठाने के लिए वर्षा वहां मौजूद नहीं थी।

वर्षा भला क्यों न मौजूद होती वहां ! उसने कहां जाना था ? अब तो उस सेलर का जहाज भी बन्दरगाह से कूच कर चुका होगा।

फोन पर बात न हो पाने की वजह से वह खुद वहां जाना चाहता था लेकिन उसके बुरे व्यवहार की शर्मिन्दगी उसे वर्षा के रूबरू होने से रोक रही थी।

अब वह यह भी महसूस कर रहा था कि उससे लड़-भिड़ कर उसे पीछे अकेला छोड़ कर चले जाना भी उसकी हिमाकत थी।

अगर वह उसके साथ नहीं आना चाहती थी तो उसे उसके पास टिकना चाहिए था।

फिर उसे मिसेज ग्रे को फोन करने का ख्याल आया।

उसने उस फोन पर घंटी की।

फौरन जवाब मिला।

अशोक ने उसे अपना परिचय दिया और बताया कि वह फोन पर वर्षा से सम्पर्क नहीं कर पा रहा था।

"वर्षा अपने कमरे में नहीं है" - मिसेज ग्रे ने बताया - "अभी थोड़ी देर पहले उसे मैंने बाहर जाते देखा था।"

"ओह !" - फिर कुछ सोच कर उसने पूछा - "वह अकेली थी ?"

"नहीं। उसके साथ एक खूब लम्बा-चौड़ा आदमी था।"

"खूब लम्बा-चौड़ा आदमी !" - अशोक घबरा गया - "क्या वह सेलर की वर्दी पहने हुए था ?"

"वर्दी तो मुझे दिखाई नहीं दी थी। वह लम्बा ओवरकोट पहने था।"

"नीले रंग का ? सिर पर सफेद पीक कैप ?"

"हां।"

"वे गए कैसे थे ?"

"टैक्सी पर।"

"टैक्सी ड्राइवर को आपने उन्हें कोई पता बताते सुना हो ?"

"मैंने नहीं सुना था। मैं तो भीतर अपने कमरे में थी।"

"थैंक्यू मिसेज ग्रे। थैंक्यू वैरी मच।"

उसने हौले से रिसीवर क्रेडल पर रख दिया।

यह जान कर वह हैरान था कि अपने जहाज की रवानगी का वक्त हो चुकने के बाद भी अभी राहुल शहर में था और वह वर्षा को टैक्सी पर कहीं ले कर गया था।

हे भगवान ! कहीं वह वर्षा को भगा कर तो नहीं ले गया !

फिर अपने उस बेहूदा ख्याल पर वह खुद ही शर्मिन्दा हो गया।

कैसा अजीब, कैसा सिड़ी दिमाग हो गया था उसका ! वह वर्षा से मुहब्बत करता था लेकिन उसे उस पर भरोसा नहीं था। कैसी मुहब्बत थी उसकी। विश्वास बिना कहीं मुहब्बत चलती थी !

राहुल उसके साथ टैक्सी पर कहा गया सकता था ?

वह भी तब जब कि उसे अपने जहाज का रुख करना चाहिए था, बल्कि जहाज पर होना चाहिए था।

कहां ?

उसे एक ही जगह सूझी।

***

वह अन्धेरी गली खंडहर इमारत के पिछवाड़े की गर्ज से जाकर मिली।

"यही था मेरा उस रोज का रास्ता।" - वहां पहुंचते ही राहुल गारन्टी के साथ बोला।

"अब ?" - वर्षा बोली।

"अब पिछवाड़े से ही इमारत के भीतर चलते हैं।"

"अब तक तुम्हें कोई नई बात याद आई ?"

"सिवाय इस रास्ते के और कोई नहीं।" - वह एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "भीतर चलो और मुझे वह जगह बताओ जहां तुमने उस रात लाश पड़ी देखी थी।"

"वह तो मैंने तुम्हें परसों रात भी बताई थी।"

"कोई बात नहीं। एक बार फिर बता दो। परसों में और आज में फर्क है।"

"क्या फर्क है ?"

"परसों मैं नशे में था, आज होश में हूं।"

"ओह !"

दोनों पिछवाड़े के रास्ते खंडहर इमारत के कम्पाउंड में दाखिल हुए।

वर्षा उसे पिछवाड़े के कमरे में ले आई।

"हां" - वर्षा के मुंह खोलने से पहले ही राहुल बोल पड़ा - "वह वहां खिड़की के करीब फर्श पर पड़ा था। बड़ी मुश्किल से मैंने उसकी बगलों में हाथ डाल कर उसे सीधा किया था और उसके पैरों पर खड़ा किया था। तब तक जरूर उसका कत्ल हुए बहुत ही थोड़ा अरसा हुआ था क्योंकि तब तक न तो लाश अकड़ी थी और न ठण्डी पड़ी थी। तभी तो मैं धोखा खा गया और उसे मरा जानने की जगह उसे नशे मैं टुटुन्न समझ बैठा। अपनी तरह। बल्कि अपने से भी ज्यादा।"

"तभी तुमने बेध्यानी में यहां लाश के करीब ही गिरा पड़ा मेरा पर्स उठा कर अपने ओवरकोट की जेब में डाल लिया होगा।"

"जाहिर है।"

"अब कुछ याद आया ?"

"अब मुझे उन दो आदमियों की शक्लें याद आ रही हैं जो मुझे इमारत के बाहर सामनी सड़क पर मिले थे और जिन्होंने मेरे किसी होटल का पता पूछने पर इस खंडहर को फाइव स्टार होटल ताजमहल बताया था। अब मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वे दोनों रोबीरो और मारुतिराव ही थे। उन दोनों हरामजादों को उनकी करतूत की सजा जरूर मिलनी चाहिए।"

"ऐसा तुम्हारे पुलिस के पास जाए बिना हो पाएगा ?"

"हो पाएगा। तुम्हारे बयान से भी ऐसा हो सकता है। ऊपर से मैं अपना बयान लिख कर तुम्हें सौंप जाऊंगा। मेरे पास थोड़ा वक्त होता तो मैं जरूर पुलिस के पास जाता। मुझे उम्मीद है कि मेरे तहरीरी बयान से भी उन दोनों बदमाशों की ऐसी-तैसी फिर जाएगी।"

वर्षा खामोश रही।

"अब यहां से किसी रोशनी वाली जगह चलो जहां कि मैं अपना बयान लिख सकूं।"

वर्षा ने सहमति में सिर हिलाया। वहां से प्रस्थान की नीयत से वह दरवाजे की तरफ घूमी तो एकाएक उसके नेत्र फट पड़े।

उसके मुंह से एक घुटी हुई चीख निकल गई।

दरवाजे पर पता नहीं कब प्रेत की तरह राबीरो और मारुतिराव आन खड़े हुए थे। रोबीरो मारुतिराव से एक कदम आगे था और उसके हाथ में उसका लोहे का डण्डा पहले से मौजूद था।

वर्षा की चीख सुनकर राहुल वापिस घूमा।

तभी रोबीरो के डण्डे का पहला वार उसकी कनपटी पर पड़ा। उसके सिर से उसकी पीक कैप उतर गई और वह लड़खड़ा कर एक ओर को झुका।

डण्डे का दूसरा, पहले से ज्यादा भरपूर, वार उसकी खोपड़ी पर पड़ा। उसके घुटने मुड़ गए।

"वर्षा !" - राहुल बड़ी कठिनाई से कह पाया - "भागो ! भागो !"

लेकिन वह किधर भागती ? राहुल पर वार करने की खातिर रोबीरो तनिक परे हट गया था लेकिन मारुतिराव अभी भी दरवाजे पर जमा खड़ा था।

डण्डे के तीसरे वार ने राहुल जैसे शक्तिशाली आदमी को भी धूल चटा दी। वह मुंह के बल फर्श पर गिरा। उसकी खोपड़ी तरबूज की तरह फट गयी थी और उसकी चेतना लुप्त होने लगी।

राहुल को निष्क्रिय हो चुका पा कर रोबीरो वर्षा की तरफ आकर्षित हुआ।

राहुल को धराशायी होते देख कर वर्षा इस कदर आतंकित हो उठी कि चीखना चाह कर भी वह चीख न पायी। उसका गला रुंध गया और आवाज उसके गले में ही घुटकर रह गयी।

रोबीरो बड़े इत्मीनान से उसकी तरफ बढ रहा था। वह जानता था कि लड़की बेबस थी और भाग कर कहीं नहीं जा सकती थी।

फटी-फटी आंखों से उसे देखती हुई वर्षा यन्त्रचलित सी तब तक पीछे हटती रही, जब तक कि उसकी पीठ सीढियों की रेलिंग से ने जा लगी। वहां से उसने तनिक पहलू बदला तो वह लड़खड़ा कर पहली सीढी पर गिरी।

उसी क्षण रोबीरो ने उस पर डण्डे का वार किया था। उसी क्षण वह लड़खड़ा कर नीचे न गिरी होती तो उस

एक ही वार ने उसका काम तमाम कर दिया होता।

वह जल्दी से उठी और गिरती पड़ती सीढियां चढने लगी।

"ऊपर कहां बचेगी, साली !" - रोबीरो कहरभरे स्वर में गुर्राया।

सीढियां लकड़ी की थीं और बुरी तरह से चरमारा रही थीं। एक बार उसकी सैंडल की एडी कहीं फंसी और वह लड़खड़ा कर आगे को गिरी। सहारे के लिए उसने हाथ-बढाकर रेलिंग थामी। साथ ही उसका कन्धा रेलिंग से कहीं टकराया। एक जोर की आवाज हुई और रेलिंग का एक हिस्सा टूट कर नीचे जा गिरा। उसके साथ ही नीचे जा गिरने से वर्षा बाल-बाल बची।

टूटी रेलिंग रोबीरो की डण्डे वाली बांह से टकराई। डंडा उसके हाथ से निकल गया और वह कराहता हुआ दोहरा हो गया।

"मोटे" - वह झुंझलाकर बोला - "अबे, साले पकड़ अपनी अम्मा को।"

मारुतिराव हड़बड़ा कर सीढियों की तरफ बढा और फिर वर्षा के पीछे लपका।

तब तक रोबीरो भी सम्भल गया। गया। उसने फर्श पर से अपना डण्डा उठाया और सीढियां चढने लगा।

तब तक वर्षा पहली मंजिल तक पहुंच चुकी थी।

उसने एक बन्द दरवाजे को धक्का दिया और लपक कर भीतर दाखिल हुई।

भीतर पहला कदम पड़ते ही वह ठिठक न गयी होती तो वैसे ही उसका काम तमाम हो जाता।

उस कमरे की सिर्फ चारदीवारी खड़ी थी। उसका फर्श टूट कर गिर चुका था और वह एक कुएं जैसा लग रहा था।

वह बाहर निकली।

उसने व्याकुल भाव से एक बार अपने पीछे झांका और फिर उस कमरे में कदम रखा जिसका फर्श लकड़ी का था।

उस कमरे के परले सिरे पर उसे एक खिड़की दिखाई दी।

उसको अन्धेरे में आशा की एक किरण दिखाई दी

शायद उस खिड़की के रास्ते बाहर निकल पाना सम्भव हो। वह वहां से छलांग भी लगा देती तो उन हत्यारों के हाथ पड़ने से तो वह अच्छा ही होता। तब उसकी जान बच जाने की फिर भी कोई उम्मीद थी।

फिर तभी लकड़ी के फर्श के खस्ताहाल पर उसकी निगाह पड़ी तो उसकी सांस सूखने लगी।

वह खिड़की तक पहुंच भी पायेगी ?

हिम्मत करके वह फर्श के साबुत हिस्सों पर पांव रखती हुई खिड़की की तरफ बढी।

फर्श की लकड़ी बीच में से बिल्कुल टूटी हुई थी इसलिये खिड़की तक पहुंचने के लिये दीवार के साथ-साथ चलना जरूरी था। वहां भी कहीं-कहीं फर्श की लकड़ी सिरे से ही गायब थी लेकिन नीचे से फर्श का सहारा देने वाली जो लकड़ी की ही बीम झांक रही थीं, उन पर पांव रख कर आगे बढ पाना सम्भव था।

आधा रास्ता पार कर चुकने के बाद उसने अपने लक्ष्य उस खिड़की की तरफ दोबारा झांका तो उसने एक शीशे के पार बाहर से फायर एस्केप की सीढियां गुजरती पायीं।

उसकी उम्मीद दोबाला हो गयी। अब कम से कम उसे खिड़की से बाहर छलांग नहीं लगानी पड़नी थी।

एक बार फिर उसने अपने पीछे निगाह डाली।

उसी क्षण रोबीरो और मारूतिराव एक साथ उस विशाल कमरे के दरवाजे पर प्रकट हुए।

उस कमरे की छत क्योंकि ध्वस्त हो चुकी थी इसलिये वहां एकदम अन्धेरा नहीं था। इसलिये अपने से दस-बारह फुट दूर दीवार के साथ-साथ आगे बढती वर्षा उन्हें तुरन्त दिखाई दे गयी।

रोबीरो को समझते देर न लगी कि वह खिड़की तक पहुंचने की फिराक में थी।

दोनों ने एक साथ आगे कदम अढाया।

लकड़ी का फर्श बुरी तरह से चरमराया और यूं हिला जैसे भूचाल आ गया हो।

दोनों घबरा कर पीछे हट गये।

तब उन्हें फर्श के बीचों बीच बना बड़ा-सा खप्पा भी दिखाई दिया।

"फर्श कमजोर है" - रोबीरो बोला - "हो सकता है यह एक साथ दो आदमियों का बोझ न सम्भाल सके। मैं पहले लड़की के पीछे जाता हूं। तू बाद में आना और मेरे से पांच-सात कदम परे हो कर चलना।"

"ठीक है।" - मारुतिराव बोला।

रोबीरो आगे बढा। लड़की की तरह उसने भी दीवार के साथ-साथ रह कर ही आगे बढना शुरू किया।
कुछ क्षण बाद मारुतिराव भी आगे बढा।
वर्षा के मुकाबले में वे दोनों वैसे भी ज्यादा वजनी थे इसलिये उनके हर कदम के साथ नीचे के कमरे में धूल-मिट्टी बरसने लगती थी तो कभी कहीं से ईंटें उखड़-उखड़ कर गिरने लगती थीं।
वर्षा खिड़की के करीब पहुंची।
वह खिड़की एक बाल्कनी के अन्दाज से बनी हुई थी और फर्श का हिस्सा होने की जगह इमारत की बुनियाद का हिस्सा मालूम होती थी। खिड़की के आगे का फर्श ठोस पत्थर का था और उसका वजन दीवार पर था। यानी कि कमरे का लकड़ी का फर्श गिर जाने से खिड़की गिरने की सम्भावना नहीं थी। वह तभी गिर सकती थी जब कि दीवार भी साथ गिरती।
उसने खिड़की खोलने की कोशिश की तो पाया कि खिड़की पर कुछ कीलें इस प्रकार जड़ी हुई थी उनके उखड़े बिना खिड़की के पल्ले नहीं खुल सकते थे।
उसका दिल डूबने लगा।
उम्मीद की जो किरण उसके मन में जागी थी, वह बुझ गयी।
अब तो वह उल्टे और ज्यादा फंस गयी थी। वे दोनों राक्षस पूरे विश्वास के साथ उसकी तरफ बढ रहे थे। वे किसी भी क्षण उसके सिर पर पहुंच सकते थे और एक निरीह मुर्गी की तरह उसकी गर्दन मरोड़ सकते थे।
उसके पीछे आते वह दोनों पहले अलग-अलग आ रहे थे लेकिन उसके करीब पहुंचकर अब वे दोनों इकट्ठे हो गये थे।
वर्षा का वजन क्योंकि अब फर्श पर नहीं था इसलिये अब उन्हें लगा था कि फर्श उन दोनों का सामूहिक वजन सम्भाल सकता था। वे दोनों अगल-बगल खड़े थे और अपलक उसे देख रहे थे। फिर रोबीरो के चेहरे पर एक विषभरी मुस्कराहट प्रकट हुई। उसने अपना डण्डे वाला हाथ ऊपर उठाया।
वर्षा चीखी।
इस बार पता नहीं कैसे उसका रुंधा हुआ खुल गया था।
चीख की तीखी आवाज से राहुल की तन्द्रा टूटी। उसने उठने की कोशिश की तो पाया कि वह खून से नहाया हुआ था और उसका सिर उसे यूं लग रहा था जैसे उसके जिस्म का हिस्सा न हो। उसने आंखें खोलीं तो उन्हें खून से भरी पाया। बड़ी कठिनाई से उसने कोट की आस्तीन से आंखें पोंछीं तो वह कुछ देखने के काबिल हुआ। उसकी आंखों के सामने लाल पीले सितारे नाच रहे थे जो उसकी दृष्टि में बार बार व्यवधान पैदा कर देते थे। अन्धों की तरह टटोलता हुआ वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ।
चीख की आवाज फिर सुनाई दी।
इस बार उसने आवाज साफ पहचानी। आवाज वर्षा की थी और ऊपर कहीं से आयी थी।
तब उसके जेहन पर रोबीरो और मारूतिराव की सूरतें उभरीं और उसे याद आया कि रोबीरो ने उस पर आक्रमण किया था।
अन्धों की तरह ही टटोलता, आंखें मिचमिचाता, झूमता, लड़खड़ाता वह सीढियां चढने लगा। अपनी टांगों को वह अपना वजन सम्भालने में सक्षम नहीं पा रहा था। उसने रेलिंग का सहारा लेने के लिऐ हाथ बढाया तो नीचे गिरने से बाल-बाल बचा। रेलिंग तो अपने स्थान पर थी ही नहीं। दीवार के सहारे वह जल्दी से जल्दी सीढियां तय करने में लगा रहा था। उसके जेहन में उस वक्त एक ही ख्याल हथौड़े की तरह बज रहा था।
उन दो बदमाशों के रहमोकरम पर इमारत में कहीं वर्षा थी और उसे उसकी मदद की जरूरत थी। उस वक्त वही उसकी मदद कर सकता था और उसने इस काम में असफलता का मुंह नहीं देखना था।
राहुल ने अपने दांत भींच लिये और अपनी बची खुची शक्ति का संचय करने का भरसक प्रयत्न करते हुए वह सीढियां चढता चला गया। लकड़ी वाले कमरे की छत न होने की वजह से चीख की आवाज इमारत में कुछ इस कदर गूंजी थी कि उसे वह इमारत की सबसे ऊंची मंजिल से आती महसूस हुई थी।
पहली मंजिल पर ठिठके बिना वह दूसरी मंजिल पर पहुंच गया।
उस समय तक चान्द निकल आया था और अब खंडहर की इमारत हल्की पीली रोशनी में नहाई मालूम होती थी।
अपनी आंखों पर फिर बह आया खून उसने फिर पोंछा और चारों तरफ निगाह दौड़ाई।
वर्षा उसे कहीं दिखाई न दी।

इमारत में एकाएक मरघट का सा सन्नाटा छा गया मालूम होता था लेकिन फिर भी उसे लग रहा था उसके करीब, बहुत करीब कहीं कोई सांस ले रहा था।

चारों तरफ घूमती उसकी निगाह एक बार संयोगवश ही नीचे की तरफ भी पड़ी तो उसे आगे छत गायब दिखाई दी। वह तनिक आगे बढ कर उसके दहाने पर पहुंचा तो उसने पाया कि उस वक्त वह लकड़ी के फर्श वाले कमरे के ऐन ऊपर था।

उसे नीचे का नजारा दिखाई दिया।

सहमी हुई वर्षा खिड़की के साथ यूं सटी खड़ी थी जैसे उसी में समा जाना चाहती हो। उसके सामने वे दोनों शैतान खड़े थे। रोबीरो का डण्डे वाला हाथ उसके सिर से ऊपर उठा हुआ था और अपने और वर्षा के बीच का कोई पांच फुट का फासला तय करने के लिये वह कदम उठा भी चुका था।

"खबरदार !" - राहुल कहरभरे स्वर में बोला।

तीनों ने चौंककर आवाज की दिशा में देखा।

वातावरण एकदम स्तब्ध हो गया। वक्त की रफ्तार जैसे रुक गयी। उतने फासले से भी राहुल ने वर्षा की आंखों में उम्मीद की नयी चमक देखी।

"सान्ता मारिया !" - रोबीरो मन्त्रमुग्ध स्वर में बोला - "तू अभी जिन्दा है !"

"लड़की को हाथ मत लगाना।" - राहुल ने चेतावनी दी।

"साले, तेरे में जान गैंडे जैसी हो सकती है लेकिन तेरी बांह पन्द्रह फुट लम्बी नहीं हो सकती। वहां छत पर खड़ा मुझे रोक सकता है तो रोक ले।"

राहुल की हालत उस वक्त स्टेडियम में बैठे उस दर्शक जैसी थी जो अपने सामने होता खेल तमाशा देख तो सकता था लेकिन उसमें हिस्सा नहीं ले सकता था। मौत वर्षा के सिर पर खड़ी थी। सीढियों के रास्ते उस तक पहुंचने तक तो कब का उसका काम तमाम हो चुका होता।

"खबरदार !" - फिर भी उसने अपनी खोखली धमकी दोहराई।

"ठहर जा खबरदार के बच्चे !" - रोबीरो दांत पीसता हुआ बोला - "पहले मैं इस छोकरी की खबर ले लूं, फिर वहीं आकर तेरी भी खबर लेता हूं।"

रोबीरो ने आगे कदम बढाया।

राहुल ने बेबसी से गर्दन हिलायी। उस घड़ी रोबीरो को आगे बढने से कोई खुदाई करिश्मा ही रोक सकता था। यह बात रोबीरो भी जानता था और उसकी भावी शिकार वर्षा भी जानती थी।

वर्षा हक्की बक्की सोच रही थी। वह देवसमान व्यक्ति उस वक्त क्या करिश्मा कर सकता था ! क्या कर सकता था वह।

उसने बड़े दयनीय भाव से राहुल की तरफ देखा।

उस घड़ी राहुल को वह दुनिया की सब से खूबसूरत औरत लगी। एक क्षण के हजारवें भाग में उसने उसकी उस सुन्दर छवि को अपने मन में बसा लिया, आंखों ही आंखों में उसे आश्वासन दिया कि वह करिश्मा भी कर सकता था, दुनिया का ऐसा कोई काम नहीं था जिसे वह उसके लिए नहीं दे सकता था। उस एक क्षण में ही उसे लगा जैसे वर्षा उसके मन का भाव समझ गयी हो। तब एक लम्बे अरसे में पहली बार उसने अपने छटपटाते दिल पर ठण्डक का फाहा रखा जाता महसूस किया। उसके होठों पर परम सन्तुष्टि की मुस्कराहट उभरी।

फिर उस नाजुक घड़ी में उसने जो कुछ किया, वह किसी की कल्पना से परे था।

उसने अगला कदम बढाने को तत्पर रोबीरो और वर्षा के बीच छत पर से छलांग लगा दी।

उसका भारी भरकम शरीर धड़ाम से लकड़ी के फर्श से टकराया और पहले से ही खस्ताहाल फर्श के परखचे उड़ गये। न सिर्फ सारे का सारा फर्श टूट कर नीचे गिरने लगा, बल्कि उसके साथ साथ वह दीवार भी धराशायी होने लगी, जिसके पहलू में रोबीरो और मारुतिराव खड़े थे। फिर लकड़ी, ईंट, पत्थर, पलस्तर के मलबे में तीनों आकृतियां गायब हो गयीं।

फिर परली दीवार, जिसमें कि वहां दाखिल होने का दरवाजा था और जिधर सीढियां थीं, भी गिरने लगीं।

केवल एक दीवार दूसरी मंजिल तक खड़ी रह गयी जिसकी बाल्कनीनुमा खिड़की में अब वर्षा टंगी हुई थी। धूल मिट्टी का ऐसा गुबार उसके सामने उठा था कि उसकी आंखें अन्धी होकर रह गयी थीं। वह सिर्फ इतना ही महसूस कर रही थी कि अभी उसके सामने उसकी मौत के यमदूत खड़े थे और अभी वे गायब थे, अभी ऊपर छत पर राहुल खड़ा नीचे झांक रहा था और अभी वह भी गायब था।

करिश्मा हो चुका था। उसके सिर पर से मौत का खतरा टल चुका था।

वह धीरे से बाल्कनी की सिल पर बैठ गयी। उसका शरीर पत्ते की तरह कांप रहा था। इसलिये वह बड़ी कठिनाई से अपना सिर दीवार के साथ टिका पायी।

"राहुल !" - वह कराहती हुई पहले धीरे-धीरे और फिर उच्च स्वर में उसे पुकारने लगी - "राहुल ! माई डार्लिंग ! माई स्वीट हार्ट !"

तभी सड़क पर कहीं फ्लाईंग स्कवायड के सायरन की आवाज गूंजी।

उपसंहार

खंडहर इमारत के सामने इलाके के लोगों की भारी भीड़ जमा थी। इमारत गिरने से ऐसा गगनभेदी शोर उठा था कि इलाके में हाहाकार मच गया था।

पुलिस के साथ ही अशोक भी वहां पहुंचा था। उसी की निगाह सबसे पहले खिड़की की सिल पर उकडूं बैठी वर्षा पर पड़ी थी।

विक्षिप्तावस्था में पहुंची वर्षा को सीढी लगाकर वहां से उतारा गया।

रोते-कराहते, बड़ी कठिनाई से वह बता पाया कि वहां क्या हुआ था।

फिर आनन-फानन वहां एम्बूलेंस और फायर ब्रिगेड भी पहुंच गये।

"राहुल ! राहुल !" - वर्षा अब भी बड़े दयनीय स्वर में बुदबुदा रही थी।

फायद ब्रिगेड वालों ने मलबा हटाना आरम्भ किया।

सबसे पहले रोबीरो की लाश बरामद हुई। उसकी कमर टूट चुकी थी और सारे जिस्म का भुर्ता बना हुआ था।

फिर उससे भी बुरी हालत में मारुतिराव का मृत शरीर निकाला गया।

वर्षा का कलेजा मुंह को आने लगा। उन दोनों की हालत देख कर उसे राहुल का जीवित बचा होना असम्भव लगने लगा था। लेकिन जब राहुल को मलबे से बाहर निकाला गया तो उसकी नब्ज चलती पायी गयी। एक करिश्मे की तरह वह जिन्दा पाया गया।

उसे एक स्ट्रेचर पर लिटा दिया गया।

"पूनम !" - वह बड़े अस्पष्ट शब्दों में होंठों में बुदबुदा रहा था - "पूनम !"

वर्षा दौड़कर उसके करीब पहुंची।

"मैं यहां हूं।" - वह रुंधे स्वर में बोली - "मैं यहां हूं राहुल, तुम्हारे पास।"

राहुल की पलकें फड़फड़ाईं। उसका खून से लथपथ चेहरा तनिक वर्षा की तरफ घूमा। वर्षा को अपने करीब देख कर दीये की आखिरी लौ की तरह उसकी आंखें चमकीं। उसके होंठों पर एक क्षणी मुस्कराहट आयी।

"तुम मेरे पास हो ?" - उसके मुंह से निकला।

"हां।" - वर्षा आंसुओं में डूबे स्वर में बोली - "हां, राहुल। मैं तुम्हारे पास हूं।"

"मैं जीत गया।" - राहुल बोला - "मेरा नम्बर लग गया। मेरा नम्बर लग गया। मुझे मेरा ईनाम मिल भी गया। माई लक्की सैवन...."

फिर एकाएक उसकी आंखों से जीवन ज्योति बुझ गयी।

"राहुल !" - वर्षा पछाड़ खा कर उसके ऊपर गिर गयी।

अशोक ने बड़ी मुश्किल से वर्षा को राहुत के मृत शरीर से अलग किया। वह जबरन उसे वहां से परे ले चला।

"वह मर गया।" - वर्षा बिलख कर बोली - "उसने मेरी खातिर अपनी जान दे दी।"

"चुप हो जाओ।" - अशोक उसे पुचकारता हुआ बोला - "वह तुम्हारा कोई नहीं था।"

"फिर भी उसने मेरी खातिर जान दे दी।"

राहुल उसे बाहर सड़क पर ले आया।

वर्षा की सूनी निगाहें इमारत से परे प्रिंसेस बार की दिशा में उठ गयीं।

यह वो सड़क थी सिर्फ तीन दिन पहले जिस पर हाथी से जिस्म और चिड़िया से दिल वाला राहुल रामचन्दानी नाम का सेलर नशे में उसके पीछे चला आ रहा था और जिसके भय से वह उस खंडहर इमारत के भीतर जा छुपी थी।

आज उसी शख्स की याद हमेशा के लिए अपने दिल में संजोये वह वहां खड़ी थी और वहां मौजूद भारी भीड़ में भी अपने आप को अकेला महसूस कर रही थी।

राहुल रामचन्दानी नाम के फरिश्ते का नाम उसके दिल में इतने गहरे अक्षरों में गुद गया था कि उसकी आने वाली जिन्दगी में कोई भी उसे मिटाना तो दूर, धुंधला भी नहीं कर सकता था।

***

सिल्वर स्टार के पुर्तगाली कैप्टन का चेहरा गुस्से में लाल भभूका हुआ हुआ था। राहुल ने उससे बहुत बार इन्तजार करवाया था लेकिन इतना इन्तजार उसने कभी नहीं किया था। इस बार उसने राहुल को जहाज पर वक्त पर पहुंचने की विशेष चेतावनी दी थी तो इस बार कम्बख्त गायब ही हो गया था।

जहाज पहले ही छः घण्टे लेट हो चुका था।

“अहमक ! गधा ! अलगर्ज ! गैरजिम्मेदार !” - कैप्टन दुनिया जहान के कोसनों से उसे अलंकृत करता हुआ बोला - “मैंने इसका रंगून में इन्तजार किया, मैंने इसका जार्जटाउन में इन्तजार किया मैंने इसका सिंगापुर में इन्तजार किया, मैंने इसका सैगोन में इन्तजार किया, मैंने इसका हांगकांग में इन्तजार किया। बर्दाश्त की भी कोई हद होती है। होगा साला बड़े बाप का बेटा ! अब मैं इसका और इन्तजार नहीं करने का। जहां है वहीं मरा खपा रहे मिस्टर राहुल रामचन्दानी। मैं चला।”

राहुल के अंजाम से बेखबर कैप्टन के आदेश पर सिल्वर स्टार अपने सफर में पहली बार राहुल के बिना बन्दरगाह छोड़ चला।

समाप्त